म्हारो ऋषभ विराजे

निमंत्रक

श्री आदिनाथ जैन संघ, रेवतड़ा

सकल श्रीसंघ को मान, सम्मान, बहुमानपूर्वक निमंत्रण

श्री आदिनाथ जैन संघ मु.पो.: रेवतड़ा-343 001, जिला : जालोर (राजस्थान).

Scan QR Code & Install App
"Sri Rewatra Jain Sangh"

Watch It LIVE On | Follow Us on @RewatraJainSangh

Send "Jai Aadinath" to +91 79007 03050 to get further updates on WhatsApp

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री वांछितपूर्ण पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ ॥ श्री राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

रमणीय राजस्थान की धन्य धरा पर धर्मनगरी रेवतड़ा मध्ये श्री आदिनाथ आदि जिनबिम्बों की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठांजनशलाका दशाह्निका महामहोत्सवे समस्त विश्व के जिनोपासक प्रभु भक्तों को

आत्मीय आमंत्रण

* दिव्य आशीष प्रदाता *

विश्वपूज्य, प्रातः स्मरणीय, अभिधान राजेन्द्रकोष निर्माता, कलिकाल कल्पतरु

प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

* दिव्य कृपा *

प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

* दिव्य कृपा *

सुविशाल गच्छाधिपति पुण्यसम्राट्

प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

* पावनकारी निश्रा *

पुण्यसम्राट् प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के वर्तमान पट्टधर

सुविशाल गच्छाधिपति, धर्मदिवाकर प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

पोष सुदी 12	पोष सुदी 13	पोष सुदी 14	महा वदि (द्वितीय) 4	महा वदि 5	महा वदि 6
JANUARY 22 2024 MONDAY	JANUARY 23 2024 TUESDAY	JANUARY 24 2024 WEDNESDAY	JANUARY 30 2024 TUESDAY	JANUARY 31 2024 WEDNESDAY	FEBRUARY 01 2024 THURSDAY
प्रभुजी की नूतन प्रतिमा एवं गुरु भगवंतों का भव्यातिभव्य नगर प्रवेश	दशाह्निका महोत्सव प्रारंभ	पंचकल्याणक प्रारंभ	प्रभु की भव्यातिभव्य रथयात्रा	महामंगलकारी भव्य प्रतिष्ठा	मंगलमय द्वारोद्घाटन

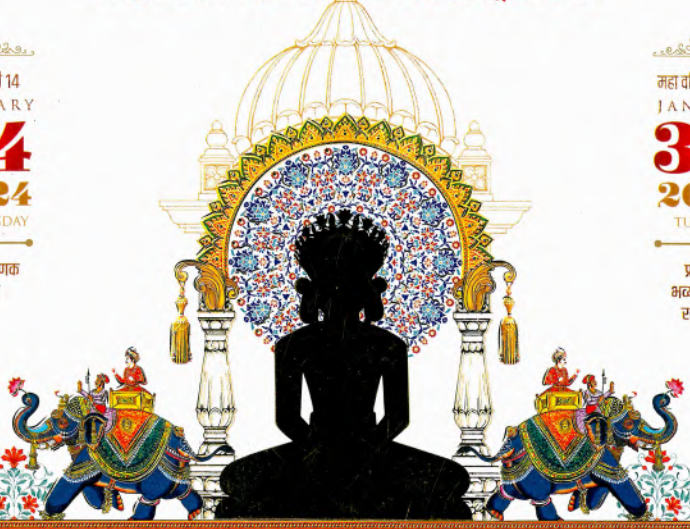

प्रभु वंदना

|| ऋषभदेव स्तुति ||

जिनेशइंदं नृपनाभिचंदं, सुरेंदवंदं रिषभं जिणिंदं।
दमिंदसंदं शिवसुक्खकंदं, नमामि नंदं पढमं दिणिंदं॥

हे परमानंदी परमात्मा!
आप थे प्रथम राजेश्वर, आप थे प्रथम मुनीश्वर, आप थे प्रथम तीर्थेश्वर,
आप श्री ने साधना के द्वारा अनुपम त्रिपदी जगत को प्रदान की है,
बाह्य राजवैभव का त्याग कर मुनि बने,
साधना के द्वारा आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग कर
स्वयं में स्थित वीतरागता को प्रगट की,
यही मनुष्य जन्म की सार्थकता है।
बस! इस पथ के पथिक हम भी बने,
ऐसा शुभ भाव आपके आलम्बन से प्रगट हो।
इसलिए हम भव्य जिनालय में
आपका स्थापना निक्षेप कर रहे है।
पधारो... **म्हारो ऋषभ बिराजे...**

|| पार्श्वनाथ स्तुति ||

रुचितरं वरपार्श्वजिनेश्वरं, अशुभभाव-तमिस्रदिनेश्वरम्।
निखिल कर्मदलस्य विनाशनं, परमज्ञानसुध्यानवियोजनम्॥

हे पूर्णानंदी परमात्मा!
कमठ उपसर्ग कर रहा है, उसे वो उचित लग रहा है।
धरणेन्द्र पूजा कर रहा है, उसे वो उचित लग रहा है।
दोनों के प्रति समभाव रखना, यह आपको उचित लग रहा है।
आपकी समत्व साधना
हमें अद्भुत संदेश दे रही है।
मोक्ष हेतु समता अनिवार्य है,
यह बात निःशंक समझने जैसी है।
तुल्यमनोवृत्ति को धारण कर हम भी
निज स्वरूप का प्रगटीकरण कर सके,
इसी शुभ भावों से
आपका स्थापना निक्षेप कर रहे है।

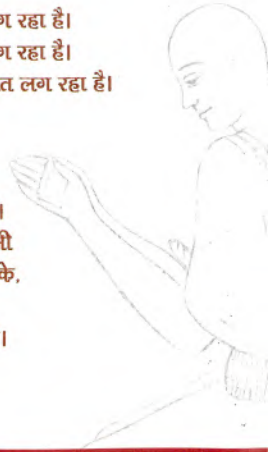

प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

गुरु लब्धि की वाणी से,
अमृत का झरना झरता था।
गुरु लब्धि के दर्शन से,
पुण्य-प्रसून खिलता था।

गुरु लब्धि में बसती थी,
अखूट ऋद्धि-सिद्धि-
गुरु लब्धि के दर्शन से,
आनंद-मंगल मिलता था।

गुरु वंदना

विश्वपूज्य, प्रातः स्मरणीय, अभिधान
राजेन्द्रकोषनिर्माता, कलिकाल कल्पतरु
प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

अजेय थे जो इन्द्रियों से,
ज्ञान से समृद्ध थे,
जगवंद्य योगीराज जिनके,
कार्य भी सुविशुद्ध थे।

सद्ज्ञान की थी शुभ्रज्योत्सना
अमर जिनका नाम है,
ऐसे गुरु राजेन्द्र को
नित जयन्तसेन प्रणाम है।

सुविशाल गच्छाधिपति पुण्यसम्राट्
प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय
जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

समर्थगच्छसूरये,
जिनेशभक्तिवार्धये।
नमो नमोऽस्तु ते गुरो!
जयन्तसेनसूरिणे॥

यतीन्द्रहार्दधारिणे,
सुसङ्घतप्तिहारिणे।
नमो नमोऽस्तु ते गुरो!
जयन्तसेनसूरिणे॥

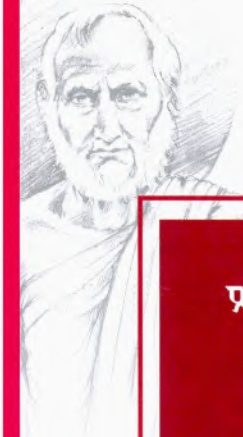

॥ रेवतड़ा मंडण श्री ऋषभदेवाय नमः ॥

प्रभु महावीर की परम्परा के कुशल सुवाहक महापुरुषों को भावभीनी वंदना

* दिव्याशीष की मधुरता *

विश्वपूज्य प्रातः स्मरणीय, अभिधान राजेन्द्रकोष निर्माता, कलिकाल कल्पतरु

प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

* पावनकारी पाट–परंपरा *

विश्वपूज्य प्रातः स्मरणीय, अभिधान राजेन्द्रकोष निर्माता, कलिकाल कल्पतरु
प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
चर्चा चक्रवर्ती प.पू. श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
साहित्य विशारद प.पू. श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
पीताम्बर विजेता प.पू. श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
शांतिपूर्ण प.पू. श्रीमद्विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
पुण्यसम्राट् अजोड़शासन प्रभावक **प. पू. श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

* सान्निध्य सौंदर्य *

गच्छाधिपति पुण्यसम्राट् प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के वर्तमान पट्टधर
सुविशाल गच्छाधिपति, धर्मदिवाकर **प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक **प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**

* श्रमणवृंद *

» मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अशोकविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री आनंदविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अजितसेनविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी सा.
» मुनिराज श्री पवित्ररत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निक्षेपरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निर्दोषरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निर्वाणरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निधानरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री नेमीशरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री जंबूसेनविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री सुधर्मसेनविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री पुष्पदंतविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री साध्यरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री वारिषेणविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अध्यात्मसेनविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अरिष्टविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री मेघविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री पुंडरीकविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री समर्पणविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री सुजशविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री निःसङ्गरत्नविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री अहोभावविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री जिनराजविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री देवभद्रविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री युगादीशविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री युगार्यविजयजी म.सा.
» मुनिराज श्री जितरत्नविजयजी म.सा.

* समतानुरागी श्रमणीवृंद *

» साध्वीजी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री कैलाशश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अरूणप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री मोक्षगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अनंतदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री विद्वद् गुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री दर्शनकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री शासनलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री तत्त्वलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री विज्ञानलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री चारित्रकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री कल्परेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री संवेगप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा
» साध्वीजी श्री जितयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

* मंगलमय आशीर्वाद *

राष्ट्रसंत प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा.,
उपधान तप सम्राट् गच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.,
कोकंण केशरी गच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय लेखेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

* पावनकारी उपस्थिति *

श्रमणवृंद

विमलगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय
प्रद्युम्नविमलसूरीश्वरजी म.सा. (भाई म.सा.) आदि ठाणा

आगमज्ञाता प.पू. गुरुदेव श्री देवेन्द्रविजयजी म.सा. के शिष्यरत्न
प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय **नरेन्द्रसूरीश्वरजी** म.सा. "नवल" एवं
प.पू. पन्यासश्री **जिनेन्द्रविजयजी** म.सा. आदि ठाणा

गच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयानंदसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय **दिव्यानंदसूरीश्वरजी** म.सा. एवं
प.पू. प्रवर्तक **वैराग्यानंदविजयजी** म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद

सरलमना प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती
प.पू. मुनिराजश्री **हितेशचन्द्रविजयजी** म.सा. एवं
प.पू. मुनिराजश्री **चन्द्रयशविजयजी** म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद

श्रमणीवृंद

गच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयानंदसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी
सेवा भावी शासनज्योति प.पू. साध्वीजीश्री संघवणश्रीजी म.सा. के सुशिष्या
हमारे रेवतड़ा नगर की आर्या
प.पू. साध्वीजी श्री दर्शनरत्नाश्रीजी म. सा., प.पू. साध्वीजी श्री ज्ञानरत्नाश्रीजी म. सा.
प.पू. साध्वीजी श्री चारित्ररत्नाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

प.पू. मुनिराजश्री विश्वरत्नविजयजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी
साध्वीजी श्री तपोरुचिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय अजितशेखरसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी
साध्वीजी श्री इक्षुज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी
साध्वीजी श्री परमार्थधर्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

(सभी श्रमण-श्रमणीवृंद अपनी अनुकूलतानुसार प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारेंगे।)

स्वागतम् सुस्वागतम्

जिनबिंब को
स्थापना निक्षेप द्वारा
जिनालय में
बिराजमान कर
जिनदर्शन से
निजदर्शन की
यात्रा प्रारंभ.....

जिनशासन प्रभावक
इस महामहोत्सव में
आप सभी को
पधारने का
हमारा भावभरा
आमंत्रण

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री वांछितपूर्ण पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ ॥ श्री राजेन्द्रसूरि गुरूभ्यो नमः ॥

अवसर आयो रे... आयो रे... आंगणिये... आमन्त्रण

जिनाज्ञापालक, जिनशासनप्रेमी, सुकृतानुरागी,
भारतवर्षीय सम्माननीय सकल श्रीसंघ सबहुमान सादर जय-जिनेन्द्र स्वीकारें।

पंचमकाल में आत्मशुद्धि के लिए दो आलम्बन है, जिनागम एवं जिनबिंब। जिसमें जिनबिंब को स्थापना निक्षेप द्वारा जिनालय में विराजमान कर जिनदर्शन से निजदर्शन की यात्रा प्रारंभ होती है। गत जन्मों में हमारे द्वारा देवेन्द्र जिनके दास है, सुरेन्द्र जिनकी सेवा करते है, नरेन्द्र जिनको नतमस्तक है, चक्रवर्ती जिनके चरण चूमते है, ऐसे अरिहंत परमात्मा की भावनापूर्वक आराधना की गई होगी, जिसके फल स्वरूप पुनः इस जन्म में परमात्मा भक्ति का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिससे हमारा सम्यग्दर्शन शुद्ध- विशुद्ध होता है।

हमारे रेवतड़ा नगर में 108 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् १९७१ में फाल्गुन वदि १ के शुभ दिन-शुभ मुहूर्त में चर्चा चक्रवर्ती आचार्यदेव श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा., तपस्वी मुनिश्री हर्षविजयजी म.सा. एवं मुनिश्री तीर्थविजयजी म.सा. के करकमलों से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ आदि जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हर्षोल्लास से सम्पन्न हुई थी। तत्पश्चात् श्री संघ की उन्नति में अभिवृद्धि होती रही। वर्षों पश्चात् जिनालय जीर्ण होने पर हमारे श्रीसंघ ने जिनालय का आमूल जीर्णोद्धार सम्पन्न करवाया। प्रतिष्ठा हेतु प्रयास चलते रहे, लेकिन संयोग के बिना कार्य सफल नहीं होते। शुभ संयोग का आगमन हुआ, श्रीसंघ ने त्रिस्तुतिक समुदाय के अजोडशासन प्रभावक, पुण्यसम्राट् प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के वर्तमान पट्टधर श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं भांडवपुर तीर्थोद्धारक प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. को भावभरी विनंति की। जिसे स्वीकार पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं प.पू. आचार्य भगवंतश्री ने हमें वि.सं.२०८०, महा वदि ५, दि.31/01/2024, बुधवार का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसे प्राप्त कर हमारा सकल श्रीसंघ आनंद से झूम उठा। मानो हमारा जन्म सफल हो गया।

प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में प्रतिष्ठा संबंधी चढ़ावों की जाजम ऐतिहासिक हुई, जिससे हमारा उत्साह और बढ़ गया। प्रतिष्ठा महामहोत्सव के अन्तर्गत दि.22 जनवरी 2024 को परमात्मा की नूतन प्रतिमाओं, पूज्यपाद गुरु भगवंतों एवं साध्वीजी भगवंतों का भव्यातिभव्य नगर प्रवेश होगा। दि.23 जनवरी 2024 से दि.1 फरवरी 2024 तक भव्यातिभव्य दशाह्निका महोत्सव होगा। माघ वदि ५, दि.31 जनवरी 2024, बुधवार को शुभ मुहूर्त्त में मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान आदि जिनबिम्ब आदि की महामंगलकारी प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

इस प्रसंग पर आप सभी को पधारने का हमारा भावभरा आमंत्रण प्रेषित है। जिनशासन प्रभावक इस महामहोत्सव के साक्षी बनकर अपने जीवन को धन्य बनायें।

निवेदक : **श्री आदिनाथ जैन संघ**, रेवतड़ा

जिन स्तोत्र एवं स्तवनाओं में नाम निक्षेप की महिमा

नामे हो प्रभु नामे अद्भुत रंग... (देवचंद्र चौविसी-24/6)

हे प्रभु! आपके नाम श्रवण, स्मरण मात्र से भी अद्भुत आनंद प्राप्त होता है।

नाम सुणतां मन उल्लसे रे, लोयण विकसित होय।
रोमांचित हुए देहडी रे, जाणे मीलियो सोय रे॥
पंचम काले पामवो रे, दुर्लभ तुज देदार।
तो पण तारा नामनो रे, छे मोटो आधार॥

हे परमात्मा! आपका नाम सूनते ही मेरा मन उल्लसित होता है,
मेरे नयन विकसित होते है,
मानो आप स्वयं ही मिले हो, ऐसा जानकर मेरा देह रोमांचित हो जाता है।
इस पंचमकाल में आपका साक्षात् दर्शन दुर्लभ है,
फिर भी आपके नाम स्मरण का मुझे बहुत बड़ा आधार है।

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिनः संस्तवस्ते।
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति॥ (कल्याणमंदिर-7)

हे जिनेश्वर देव! अचिन्त्य महिमावाली आपकी स्तुति तो दूर रहो,
परन्तु आपका नाम भी तीन लोक का संसार से रक्षण करता है।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्य स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति। (भक्तामर स्तोत्र-42)

आपके नाम रूप मंत्र का दिन रात जप करनेवाले मनुष्य
तुरंत ही स्वयं बंधनो के भय से मुक्त हो जाते है।

तीर्थंकर ऋषभदेव

जंबूद्वीप के दक्षिण में स्थित भरतक्षेत्र में तीसरे आरे के पूर्ण होने में जब चौरासी लाख पूर्व और तीन वर्ष साढ़े आठ पक्ष शेष थे, तब आषाढ कृष्णा चतुर्थी की मध्यरात्रि में मुनि वज्रनाभ का जीव सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान से च्यवन कर, कुलकर नाभिराय की धर्मपत्नी मरुदेवी की कुक्षि में अवतरित हुआ। इसी रात्रि में माता मरुदेवी ने चौदह स्वप्नों के दर्शन किये। माता मरुदेवी ने जब अपने पति नाभिराय को इन स्वप्नों के बारे में बताया तो वे बोले -'देवी! तुमने जो स्वप्न देखे हैं, वह बहुत ही दिव्य और शुभ हैं। हमें शीघ्र ही उत्तम संतान की प्राप्ति होने वाली है।'

प्रभु का जन्मकल्याणक

गर्भकाल नौ मास और साढ़े सात दिन बीत जाने के पश्चात् चैत्रमास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अर्धरात्रि में मरुदेवी ने एक युगल को जन्म दिया। प्रभु के जन्म होते ही सर्वत्र आनंद मंगल छा गया। तीनों लोकों में प्रकाश का उद्योत होने लगा। नारकी जीवों को भी एक पल के लिए सुख का अनुभव हुआ। आकाश में देवदुंदुभि बजने लगी। पृथ्वी पर मेघ सुगंधित जल की वर्षा करने लगे। चारों ओर खुशहाली छा गई। पक्षी खुश होकर चहकने लगे।

छप्पन दिक्कुमारियों ने अपने अवधिज्ञान से तीर्थंकर परमात्मा के जन्म को जानकर विनीता नगरी में पहुँचकर सूतिका कर्म किया। मंगल गीत गाए और अपना आशीर्वाद देकर चली गई।

सौधर्म देवलोक में इन्द्र का सिंहासन कंपायमान होने लगा। अवधिज्ञान से ज्ञात हुआ कि कुलकर नाभिराय के यहाँ आदि तीर्थंकर का जन्म हुआ है। इन्द्र ने अपना सिंहासन त्याग कर प्रभु के जन्म की दिशा के सम्मुख सात-आठ कदम चलकर चैत्यवंदन की मुद्रा में बैठकर नमुत्थुणं का पाठ कर प्रभु को वंदना की। इन्द्र के आदेश से सेनापति हरिणगमैषी ने सुघोषा नामक घंटनाद तीन बार किया। सुरपति ने मरुदेवी माता के पास आकर, उन्हें प्रणाम कर प्रभु के जन्माभिषेक के लिए माता को अवस्वापिनि निद्रा में सुला दिया। प्रभु का एक बिंब रखकर मेरुपर्वत पर स्थित पांडुक वन की ओर चले। यहाँ अतिपांडुक शिला पर रखे सिंहासन पर प्रभु को अपनी गोद में लेकर बैठ गये। यहाँ अच्युतेन्द्र ने अपने सामानिक, आत्मरक्षक, लोकपाल आदि देवों के साथ अहोभाव से परमात्मा का स्नात्र प्रारंभ किया। बाल्यकाल में एक वर्ष बीत गया, तब देवलोक के अधिपति सौधर्मेन्द्र ने कुल का नामकरण इक्ष्वाकु वंश किया।

युवा होने पर सुनंदा व सुमंगला के साथ ऋषभ का विवाह हो गया। कुछ समय पश्चात् सुमंगला ने भरत और ब्राह्मी युगलों को जन्म दिया। इसी तरह सुनंदा ने बाहुबली व सुन्दरी युगल संतानों को जन्म दिया। कुछ समय पश्चात् सुमंगला ने अनुक्रम से उनचास पुत्र युगल अर्थात् ९८ पुत्रों को जन्म दिया।

लगभग बीस लाख वर्ष पूर्व बीतने के पश्चात् ऋषभ इस पृथ्वी के पहले राजा बनें और प्रजा को असि, मसि, कृषि का ज्ञान दिया। अवधिज्ञान से नवलोकान्तिक देवों ने प्रभु की दीक्षा लेने की भावना जानी तो उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की -'हे प्रभु! आप धर्मतीर्थ की स्थापना कर जीवों के मोक्ष जाने का मार्ग प्रशस्त करें।' प्रभु ने दीक्षा अंगीकार से एक वर्ष पूर्व सांवत्सरिक दान दिया।

एक वर्ष बीत जाने पर चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में अष्टमी के दिन प्रभु ऋषभदेव सुदर्शन नामक शिबिका में आरूढ हुए। सिद्धार्थ नामक उद्यान में प्रभु ने पंचमुष्टि केश लुंचन करके सिद्धों को नमस्कार कर चारित्रधर्म को अंगीकार किया।

साधिक एक वर्ष तक प्रभु ऋषभ मौनपूर्वक आर्य-अनार्य देश में निराहार विहार करते गजपुर (हस्तिनापुर) नगरी पधारे। यहाँ बाहुबली के पौत्र श्रेयांसकुमार का शासन था। श्रेयांसकुमार को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। श्रेयांसकुमार ने इक्षुरस को ग्रहण करने की प्रार्थना की। इक्षुरस से प्रभु का पारणा हुआ, वह दिन वैशाख मास की शुक्ल तृतीय का था, जो आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है।

प्रभु ऋषभदेव ने एक हजार वर्ष तक अनेक प्रकार के अभिग्रह धारण कर मौनपूर्वक आर्य व अनार्य देश में विहार किया। प्रभु विहार करते हुए विनीता नगरी की पुरिमताल नामक उपनगरी में पधारे। यहाँ वटवृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा धारण कर ध्यान में लीन हो गये। फाल्गुन मास की कृष्ण एकादशी को प्रातःकाल चार घाति कर्मों का नाश कर प्रभु ने केवलज्ञान को प्राप्त किया।

SCAN QR CODE

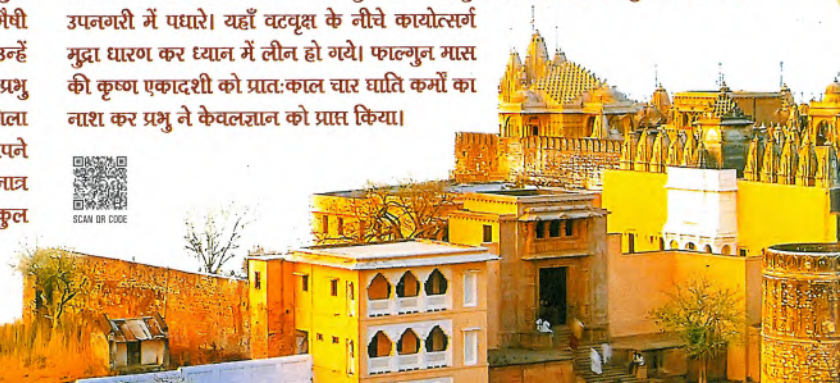

महाप्रभावक श्री वांछितपूर्ण पार्श्वनाथ

शत्रुंजा समो तीरथ नही,
रिखव समो नही देव।
गौतम
सरिखा गुरु नही,
वली वली वंदु तेह।।

भगवान पार्श्वनाथ योगी पुरुष होने के साथ-साथ एक ऐतिहासिक पुरुष भी थे, जिन्होंने ईसा पूर्व की नौवी-दसवीं शताब्दी में भगवान महावीर के निर्वाण से लगभग 380 वर्ष पूर्व भारत के पूर्वांचल में प्रसिद्ध धर्मनगरी वाराणसी (काशी) में अवतरण लिया। आपने उपदेशों से न केवल जन-मानस में व्याप्त हिंसा आदि कुरीतियों को समाप्त किया, बल्कि कठोर तप साधना के द्वारा अपनी आत्मा का भी कल्याण किया।

प्रभु पार्श्व के समय धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के वैदिक क्रियाकांड और बाल तप किए जाते थे, जिसका मुख्य उदाहरण कमठ तापस द्वारा किया जाने वाला पंचाग्नि तप था। भगवान पार्श्वनाथ ने कमठ के उस झूठे कर्मकांड का विरोध किया और जनमानस में व्याप्त धार्मिक अंधविश्वास को दूर किया। तदुपरान्त प्रभु पार्श्वनाथ ने आत्म-कल्याण हेतु जिन-दीक्षा अंगीकार की और शान्ति एवं अहिंसा का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुँचाया।

जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में आज सबसे अधिक प्रकट प्रभावी और व्यापक प्रसिद्धि वाले तीर्थंकर पार्श्वनाथ हैं। भारत में जितने प्राचीन तथा नवीन जिनमंदिर भगवान पार्श्वनाथ के हैं, जितने स्तोत्र, स्तुतियाँ, मंत्र व भक्ति गीत भगवान पार्श्वनाथ से संबंधित हैं, उतने अन्य तीर्थंकर के नहीं हैं। जैनों के अतिरिक्त हजारों अजैन भी भगवान पार्श्वनाथ की उपासना आराधना करते हैं।

SCAN QR CODE

श्री शान्तिनाथ परमात्मा

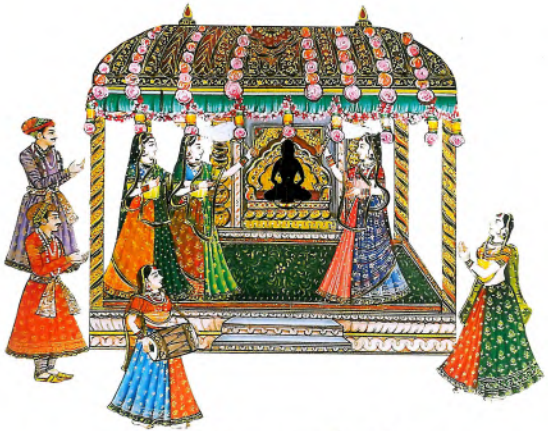

शांति जिनेश्वर साचो साहेब,
शांतिकरण इन कलिमें हो
जिणजी...
सुनो शांतिजिणंद सोभागी,
हुँ तो थयो छुं तुम गुणरागी...

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र के हस्तिनापुर नगर के इक्ष्वाकुवंशी विश्वसेन राजा और अचिरादेवी महारानी थी।

भाद्रपक्ष की कृष्ण सप्तमी को जब चन्द्र भरणी नक्षत्र में था तब मुनि मेघरथ का जीव च्यवन कर अचिरादेवी की कुक्षि में अवतरित हुआ। माता ने चौदह स्वप्नों को अपने मुख में प्रवेश होते देखा। तीनों लोक में प्रकाश जगमगा उठा। मनुष्य लोक में आनन्द की हवा बहने लगी।

एक बार हस्तिनापुर में भयंकर महामारी फैल गई। प्रतिदिन हजारों लोग मरने लगे। यह देख विश्वसेन राजा विचलित हो गये। उन्होंने प्रतिज्ञा कि "जब तक प्रजा का उपद्रव शान्त नहीं होगा, मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा।" इस भीष्म प्रतिज्ञा से द्रवित होकर शक्रेन्द्र ने स्वयं उपस्थित होकर राजा से कहा 'महाराज! आप व्यर्थ विचलित न हो। जहाँ चिन्तामणिरत्न, कल्पतरु एवं कामधेनु विद्यमान है, वहाँ किस बात की कमी? महारानी अचिरादेवी के उदर में साक्षात् शांति अवतार भगवान का जीव पल रहा है।' इन्द्र ने गर्भस्थ भावी तीर्थंकर का शांति स्तोत्र पाठ किया और कहा 'महारानी महल की छत पर खड़ी होकर स्वयं इस शांति स्तोत्र का पाठ करें और फिर जनपद पर अपनी अमृत दृष्टि डाले, जहाँ तक माता की अमिदृष्टि पहुंचेगी, उसके प्रभाव से समस्त उपद्रव, रोग, पीड़ाएँ शान्त हो जाएगी और ऐसा ही हुआ।'

नौ मास साढ़े सात दिन बीत जाने पर ज्येष्ठ मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन भरणी नक्षत्र में अचिरादेवी ने मृग चिह्न वाले कनकवर्णी पुत्र को जन्म दिया। प्रभु के जन्म लेते ही तीनों लोक प्रकाशित हो गये। छप्पन दिक्कुमारियों ने सूतिका कर्म किया चौंसठ इन्द्रों ने मेरुपर्वत पर भगवान का जन्माभिषेक किया। प्रभु जब माता के गर्भ में थे, उस समय देश में महामारी एकदम शांत हो गई थी, इसीलिए राजा ने उनका नाम 'शान्तिनाथ' रखा। राजकुमार शान्तिनाथ चालीस धनुष प्रमाण कायावाले थे। चक्रवर्ती होने से आपका अनेक राजकन्याओं से विवाह हुआ। राजा विश्वसेन ने पच्चीस हजार वर्ष की आयु में युवराज शांतिनाथ को राज्य सौंप चारित्र ग्रहण कर लिया।

एक बार शांतिनाथ प्रभु की अस्त्रशाला में दिग्विजय सूचक 'सुदर्शन चक्र' उत्पन्न हुआ। चौदहरत्नों एवं नवनिधियों के द्वारा शांतिनाथ महाराज ने छह खंडों पर विजय प्राप्त की। राजा शांतिनाथ को देवों एवं राजाओं ने चक्रवर्ती पद प्रदान किया। आपने आठ सौ वर्ष कम पच्चीस हजार वर्ष तक चक्रवर्ती पद पर रहते हुए राज्य किया।

वैराग्यवासित होने पर राज्यभार अपने पुत्र चक्रायुध को सौंप कर ज्येष्ठ वदि चतुर्दशी को भरणी नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की। उसी समय प्रभु को मनःपर्यवज्ञान की प्राप्ति हुई। एक वर्ष तक छद्मावस्था में विहार करते हुए प्रभु हस्तिनापुर पधारे, उद्यान में नंदीवृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा में लीन हो गए। पौष मास की शुक्ल नवमी के दिन भरणी नक्षत्र में चारों घाती कर्मों का क्षय होने से प्रभु को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। इसके बाद प्रभु 24,999 वर्षों तक इसी पृथ्वी पर विचरण करते रहे। निर्वाण समय नजदीक जानकर प्रभु शांतिनाथ सम्मेतशिखरजी पधारे। कर्म निःशेष होने पर ज्येष्ठ मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन भरणी नक्षत्र में परम सिद्धि (मोक्ष) पद का वरण किया।

SCAN QR CODE

चरम तीर्थंकर महावीरस्वामी

भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के लगभग 250 वर्ष पश्चात् भारतीय समाज अनेक वर्णों, जातियों, मतों एवं सम्प्रदायों में विभक्त था। उस समय तीर्थंकर पार्श्वनाथ की श्रमण परम्परा भी छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। भगवान महावीर के जन्म से पूर्व नन्दन मुनि का जीव दसवें देवलोक के पुण्डरिक विमान से ऋषभदत्त ब्राह्मण एवं उनकी पत्नी देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में अवतरित हुआ। गर्भकाल के जब बयासी दिन हुए तब सौधर्म इन्द्र का सिंहासन कंपायमान होने लगा। उन्होंने अवधिज्ञान से जाना कि श्रमण भगवान महावीर का जीव ऋषभदत्त ब्राह्मण की भार्या देवानंदा की कुक्षि में आ चुका है। आपने अंजलिबद्ध होकर 'नमुत्थुणं' के पाठ से स्तुति की। उन्होंने सोचा कि तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव तथा वासुदेव तो केवल ज्ञात, क्षत्रिय, इक्ष्वाकु, हरिवंश जैसे राजकुल में ही उत्पन्न होते हैं। अतः तुरन्त हरिणगमैषी देव को बुलाया और देवानंदा ब्राह्मणी के गर्भ से प्रभु का संहरण करवाकर त्रिशलादेवी के गर्भ में स्थापित करवाया। त्रिशला माता ने चौदह दिव्य स्वप्नों को देखा। त्रिशला माता ने गर्भकाल पूर्ण होने पर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी के दिन हस्तोतरा नक्षत्र में चन्द्रयोग होने पर मध्यरात्रि के समय जब ग्रह उच्च स्थान पर थे, तब माता त्रिशला ने देवों के समान सुन्दर आरोग्य, रूपवान और सौम्य पुत्र को जन्म दिया। उस समय संपूर्ण लोक प्रकाश से जगमगा उठा। प्रभु वर्धमान ने बाल्यकाल में एक सर्प रूपी देव को निडरता से उठा कर फैंक दिया था और एक ही मुट्ठी मारकर अपने बल का परिचय दिया था और इसलिए देवों द्वारा उन्हें महावीर नाम से संबोधित कर जय-जयकार की गई।

युवा होने पर वर्धमान ने अपने माता-पिता के अति आग्रह पर कलिंग नरेश समरसेन की पुत्री यशोदा के साथ विवाह कर लिया। वर्धमान की एक पुत्री हुई जिसका नाम 'प्रियदर्शना' रखा गया। साधना काल में अनेक उपसर्गों का समता के साथ सामना किया। आपने पाँच महासंकल्प लिये थे –

1. जहाँ अपना रहना दूसरों को अच्छा न लगे, वहाँ नहीं रहूँगा।
2. हमेशा कायोत्सर्ग में रहूँगा।
3. प्रायः मौन धारण करके रहूँगा।
4. करपात्र में भोजन करूँगा।
5. गृहस्थ का अनुनय-विनय नहीं करूँगा।

साढे बारह वर्ष में अनेक उपसर्ग सहन करते हुए परमात्मा महावीर विहार करते ऋजुबालिका नदी के तट पर पधारे। यहाँ शाल वृक्ष के नीचे गोदुहासन में चौविहार छट्ठ के साथ गहरी समाधि में लीन हो गये। वैशाख सुदी दशमी के दिन प्रभु महावीर चार घाति कर्मों का क्षय कर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन गए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को छट्ठ का उपवास कर प्रभु महावीर ने अपनी अंतिम देशना देना प्रारंभ किया। कार्तिक कृष्ण अमावस्या को संध्या के समय भगवान महावीरस्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए।

SCAN QR CODE

गणधर गौतम

अंगूठे अमृत वसे,
लब्धितणा भंडार।
श्रीगुरु
गौतम समरिये,
वांछित फल दातार।।

प्रभु महावीर ने जब पावापुरी पर दिव्य समवसरण की रचना की। उसी समय सोमिल नामक ब्राह्मण ने अपापा नगरी में एक विशाल महायज्ञ का आयोजन किया था। इसमें भारतभर के 11 प्रकाण्ड ब्राह्मण विद्वान (इन्द्रभूति गौतम, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्म, मण्डित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मैतार्य व प्रभास) अपने 4400 शिष्यों के साथ आए हुए थे। उन्होंने देखा कि देव-देवियों के विमान भगवान महावीर के समवसरण की ओर जा रहे हैं। वे अपने आपको सर्वज्ञ मानते थे। उन्होंने प्रभु की सर्वज्ञता के बारे में सुना तो उनमें से इंद्रभूति गौतम क्रोधित हो गये। उन्होंने मायावी वर्धमान की संज्ञा देते हुए झूठा सर्वज्ञपना दिखाने की बात कही। प्रभु ने जब उन्हें अपनी देशना से संतुष्ट कर दिया तो उन्होंने अपने 500 शिष्यों के साथ प्रवज्या ग्रहण कर ली।

परमात्मा महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात् तथा देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के पश्चात् गौतम स्वामी तुरन्त लौटना चाहते थे, परन्तु रात्रि होने के कारण रूकना पड़ा। प्रातः लौटने पर जब उन्हें प्रभु के निर्वाण का समाचार मिला तो सुकोमल कमल पुष्प पर जैसे वज्र का आघात होता है, उसी तरह भावविह्वल होकर गौतम स्वामी विलाप करने लगे। महाज्ञानी गौतम स्वामी का यह अत्यन्त करुण रूदन था। उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। कुछ समय बाद गौतमस्वामी ने स्वयं को संभाला। विचार किया -'अरे! मैं किसका शोक मना रहा हूँ, अपने वीर प्रभु का? वह तो राग-द्वेष से परे वीतरागी थे। मैं भी कितना अज्ञानी हूँ, जो रागी बनकर प्रभु के वीतराग भाव को पहचान नहीं सका।'

गौतमस्वामी को स्मरण हुआ कि भगवान मुझे बार-बार कहते थे -'हे गौतम! निरालम्ब बन। आलम्बन का त्याग कर दे। अन्तर की दुनिया की तरफ मुड़ जा।' ओह! मेरा यह मोह ही मुझे रोक रहा है। मैं इसको त्यागकर अपने पथ का पथिक स्वयं ही बनूँगा। धीरे-धीरे गौतम स्वामी का चित्त शांत होने लगा। वे राग-दशा से बाहर आये और ज्ञान-दशा की ओर मुड़ गये। उनकी संताप से निकलकर आत्म-निरीक्षण की यात्रा शुरू हो गई। मोह-माया और ममता के बंधन टूटने लगे। उन्होंने स्वयं से कहा -'ओह! गुरु की देह का ममत्त्व ही मुझे रोके हुए था। यही विचार करके प्रभु ने अंतिम घड़ी में मुझे अपने से अलग कर दिया। मैं दूर चला गया, मेरा मोह क्षीण हो गया।'

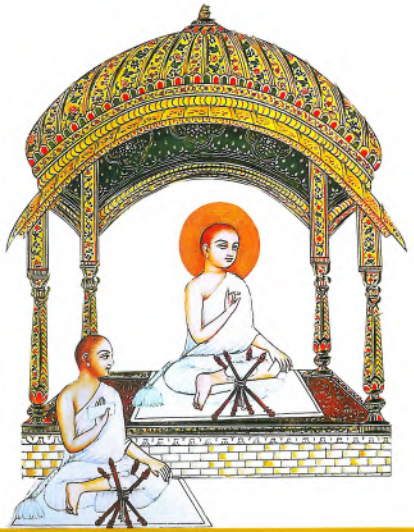

इस तरह चिन्तन करते-करते गौतम स्वामी आत्मज्ञान की प्रबल गहराइयों में उतर गए। उनके हृदय में हजारों सूरज का प्रकाश प्रकाशित हो गया। इसके पश्चात् कार्तिक शुक्ला १ के दिन गौतम स्वामी ने चारों घाति कर्मों का क्षय करके लोकालोक को उद्योत करने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। देव-दुन्दुभि बज उठी। देव और मानव सभी ने मिलकर उनका केवलज्ञान महोत्सव मनाया।

वि.सं. से 470 वर्ष पूर्व आसोज कृष्णा अमावस्या की रात्रि के पिछले प्रहर की यह घटना थी। दीपावली प्रभु महावीर के महानिर्वाण का स्मरण कराती है और उससे अगली सुबह गौतम स्वामी के केवलज्ञान की स्मृति जगा देती है।

केवली बनकर गौतमस्वामी ने 12 वर्षों तक जनकल्याण किया। आयुकाल निकट देखकर सुधर्मास्वामी को गण सौंपकर गुणशील चैत्य में अनशन पूर्वक संथारा करके निर्वाण प्राप्त किया।

SCAN OR CODE

जीवन चरित्र

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

पंचमकाल में परमात्मा महावीर के शासन का सफल संचालन का महत्वपूर्ण कार्य पंचम गणधर श्री सुधर्मास्वामी की पाट-परम्परा बहुत ही जवाबदारी से कर रही है। 2671 वर्ष में अनेक प्रभावशाली आचार्य हो गए, जिन्होनें जिनशासन की अद्भुत प्रभावना की। उसमे एक नाम है - विश्ववंदनीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.।

जिनका जन्म वि.सं.१८८३ में पोष सुदि ७ के शुभ दिन भरतपुर नगर में श्रेष्ठीवर्य श्रीऋषभदास पारख के घर, धर्मपत्नि केशरबाई की कुक्षी से हुआ, जिसका रत्नराज नामकरण किया गया। बचपन से ही सुंदर संस्कारों का सिंचन होता रहा। शुभ संयोग से भरतपुर में प.पू. जैनाचार्य श्रीमद्विजय प्रमोदसूरीश्वरजी म.सा का शुभागमन मानो रत्नराज के लिए ही हुआ हो। उनकी वैराग्यमय प्रवचनधारा ने रत्नराज के हृदय में संसार के प्रति उदासीन भाव की ज्योति प्रज्वलित की। माता-पिता के स्वर्गवास पश्चात् पितातुल्य बडे भ्राता माणकचंदजी से आज्ञा लेकर रत्नराज वि.सं.१९०४ वैशाख सुदि ५ के दिन उदयपुर में प्रवज्या लेकर मुनि रत्नविजय बने। दीक्षा लेकर संयम साधना, गुरु सेवा एवं ज्ञानार्जन में लीन बन गए। अन्य समुदायों से आत्मीय संबंध होने से अध्ययन हेतु खतरगच्छीय सागरचंदजी के पास भी रहे। न्याय, व्याकरण एवं आगमों का अति गहन अध्ययन किया। उस समय में यति जीवन में बढ़ी शिथिलता को देख उनका मानस व्यथित हुआ एवं शुद्ध साध्वाचार के प्रति अभिमुख हुआ। परिणाम स्वरूप क्रियोद्धार के लिए संकल्पित हुए। वि.सं.१९२४ आहोर (राज.) में सकल श्रीसंघ की उपस्थिति में, आचार्य श्रीमद्विजय प्रमोदसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से "आचार्यपद" प्रदान कर श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. नाम उद्घोषित हुआ। वि.सं.१९२५ में आषाढ़ वदि १० के दिन जावरा (म.प्र.) नगर में क्रियोद्धार कर शिथिलाचार को मूल से त्याग कर शुद्ध साध्वाचार को अंगीकार किया।

साहित्य साधना की यात्रा में आपका विशिष्ट सृजन रहा अभिधान राजेन्द्र कोष! 15 वर्षों के अखंड परिश्रम की यह अनुपम देन थी, जिसका उपयोग अनेक ग्रंथों के संशोधन, संपादन में निष्पक्षता से हो रहा है। इस कोष की रचना ने ही पूज्य को विश्वपूज्य के नाम से प्रसिद्ध किया। यह कोष वर्तमान में राष्ट्रपति भवन में भी स्थापित है। इसके अतिरिक्त कल्पसूत्र प्रबोधिका, बालावबोध आदि अनेक संस्कृत-प्राकृत ग्रंथों की रचना की गई, अनेक चैत्यवंदन, स्तुति एवं स्तवनों की भी रचना हुई। आपने ३ बार श्री संघ के समक्ष 45 आगम आधारित वाचना प्रदान की। पूज्य गुरुदेवश्री ने केवल क्रियोद्धार ही नहीं किया बल्कि जिनशासन को "श्री अभिधान राजेन्द्रकोष" प्रदान कर ज्ञानोद्धार भी किया।

तीर्थोद्धार के कार्यों में स्वर्णगिरि तीर्थ जालोर, केसरियाजी तीर्थ, तालनपुर तीर्थ, मोहनखेड़ा तीर्थ, भांडवपुर तीर्थ आदि मुख्य है, जिनका जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से हुआ। साथ ही अनेक गाँव-नगरों में अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाई, जिसमें आहोर में सर्वाधिक 900 बिंबों की अंजनशलाका करवाई।

शासन प्रभावना का इतिहास भी अजोड़ है। शत्रुंजय, गिरनार, मक्षी, केशरियाजी आदि तीर्थों के छःरी पालित संघ, ज्ञानभंड़ारों की स्थापना, अनेक मुमुक्षुओं को दीक्षा प्रदान, कई अपूजकों को मूर्तिपूजक बनाया, आदि अनेक कार्य किए।

तप और जप भी आपके जीवन की मुख्य साधना रही, जिसमें मांगीतुंगी पहाड़ एवं चामुंड वन में 8 अट्ठाई + 8 पारणा, 72 दिवसीय साधना, तेले-बेले की तपस्या, अरिहंतपद का सवाकरोड़ जाप, कुक्षि श्रीसंघ को अग्निप्रकोप से सावधान किया।

वर्तमान में सर्वाधिक गुरु मंदिर (300 से अधिक) आपके ही है, अभी लंदन में भी प्रतिष्ठा संपन्न हुई, श्री शत्रुंजय महातीर्थ में भी बाबु देरासर में आपकी प्रतिमा स्थापित है। आपके सर्वाधिक गुरुमंदिरों की प्रतिष्ठा पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री के करकमलों द्वारा हुई है।

वि.सं.१९६३, पोष सुदि ६ की रात्रि में राजगढ़ में आपका देवलोकगमन हुआ। पोष सुदि ७ को मोहनखेड़ा में अग्निसंस्कार हुआ। मोहनखेड़ा तीर्थ में निरंतर गुरुभक्तों को आवागमन चलता रहता है।

SCAN OR CODE

दिव्याशीष

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय तीर्थेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

जीवन यात्रा

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

श्रीमती केसरबाई तथा श्रीयुत मोहनलालजी मुंदियाड़ा के प्रतिभावान् सुपुत्र, खरसोदकला के अद्वितीय रत्न, परमपूज्य आचार्य तीर्थेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञाकारी शिष्य श्रद्धेय प.पू. आचार्य लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म विक्रम संवत् १९७७ में हुआ था, मुनि दीक्षा विक्रम संवत् १९९२ में तथा उन्हें आचार्य पदवी विक्रम संवत् २०२४ में प्रदान की गयी। विक्रम संवत् २०५१, पोष सुदि सप्तमी, दि.08 जनवरी 1995 को बाकरा रोड, राजस्थान में उनका देवलोकगमन हुआ।

शान्त स्वभावी, सरल परिणामी, हित-मित-प्रिय वाणी से विभूषित आचार्य लब्धिचन्द्रसूरि के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को देख-पढ़कर कोई भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उनका गरिमामय व्यक्तित्व तथा ओजस्वी वक्तृत्व सहज ही आकर्षित कर लेते थे। वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, उर्दू एवं गुजराती के ज्ञाता थे। यद्यपि उनका विहारक्षेत्र राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्यों तक सीमित था तथापि अपने उदारमना व्यक्तित्व से उन्होंने भारतभर के श्रावकों का दिल जीत लिया था। वे युगप्रधान आचार्य राजेन्द्रसूरि की दैदीप्यमान परम्परा के उज्वल सूर्य थे।

उनके गुरु आचार्य तीर्थेन्द्रसूरि बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं सामुद्रिकशास्त्र में निष्णात थे। अपने खरसोदकला प्रवास के दौरान उन्होंने बालक माणकलाल को देखकर जिनशासन की सेवा में उसका उज्वल भविष्य भाँप लिया एवं उसे अपनी सेवा में ले लिया। तदनन्तर उसे योग्य जानकर उसे मुनि दीक्षा प्रदान की। बालक माणकलाल जिनप्रव्रज्या ग्रहण कर अब मुनि लब्धिविजय बन चुके थे। गुरुवर आचार्य तीर्थेंद्रसूरि के कालधर्म होने पर मुनि लब्धिविजय को आचार्य पद से अलंकृत किया गया। वे अब आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचन्द्रसूरि इस नाम से जाने जाते थे।

SCAN OR CODE

आचार्यश्री लब्धिचन्द्रसूरि ने अपने जीवनकाल में अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठाएँ करवायीं, दीक्षाएँ प्रदान की, उपधान तप करवाये, संघयात्राएँ निकलवायीं तथा उजमणा किये।

बाकरा रोड में एक नवनिर्मित जिनालय को निरखकर आचार्यश्री ने कहा कि "मेरा अन्तिम संस्कार इसी स्थल पर करना।" उसी स्थल पर उन्होंने अपने दण्ड से चिह्न बनाया और अपना पूर्वोक्त कथन दोहराया। तत्पश्चात् गुरु सप्तमी के कार्यक्रम में आगन्तुक अतिथियों का योग्य सेवा-सत्कार हो, कार्यक्रम सुचारु रूप से चले, इन बातों के प्रति आश्वस्त होकर आचार्यश्री अपने कमरे में चले गये। कार्यक्रम पूर्णतः समाप्त होने के बाद आचार्यश्री का निजी सेवक चिल्ला पड़ा। उसकी आवाज सुनकर सभी गुरु के कक्ष की ओर दौड़ पड़े। वहाँ पहुँचे तो देखा कि आचार्यश्री अनन्त की ओर महाप्रयाण कर चुके थे। आचार्यश्री को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। इस संबंध में उनके द्वारा कही गयी सभी बाते सत्य प्रमाणित हुई। उन्होंने अपनी मृत्यु का भी दिन क्या चुना पोष सुदी ७, गुरु सप्तमी। जो पर्व सारे देश में धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। आचार्यश्री ने अपने आप को उपकारी दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि के साथ जोड़कर, स्वयं को हमेशा के लिए अमर कर दिया।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, प्रज्ञा पुरुष परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. भी एक ऐसे ही विरले संत थे, जो सहस्रों भक्तों की आस्था के केन्द्र होने पर भी अहम् और अभिमान से कोसों दूर रहे। वे जीवन पर्यन्त चेहरे पर स्मित मुस्कान बिखेरते हुए जन-जन में भगवान महावीर के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करने को रत रहे। आचार्यश्री इस दुनिया में नहीं है, फिर भी उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की खुशबू आज भी भक्तों में दिखाई देती है।

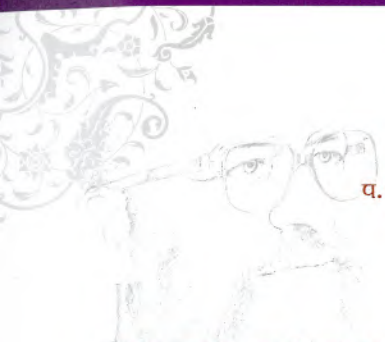

दिव्याशीष

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जीवन यात्रा

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

समता, सरलता, सादगी, समयज्ञता आदि अनेकानेक सद्गुणों के सौरभ से सुवासित-सुशोभित पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अवतरण गुजरात राज्य के, बनासकांठा जिले के थराद के समीपस्थ पेपराल गाँव में श्रेष्ठिवर्य स्वरूपचंदजी धरु के घर आँगन में रत्नकुक्षिणी श्रीमती पार्वतीबाई की कुक्षी से वि.सं.१९९३ मगसर वदि १३ (गुजराती तिथि कार्तिक वदि १३) के शुभ दिन हुआ। आपश्री का नाम पूनमचंद रखा गया। बाल्यकाल से ही आपश्री को परिवार में धर्ममय वातावरण मिला। जीवन के पायदान चढ़ते हुए आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा निरन्तर बढ़ती गई। उस समय पेपराल में जिनालय नहीं था, इसलिए आप यहां से 2 कि.मी. दूर जेतडा गांव में नित्य पूजन-दर्शन करने जाते थे। आपका परिवार कुछ समय पश्चात् पेपराल से थराद में आकर रहने लगा। यहाँ आपकी विद्यालयी एवं धार्मिक शिक्षा हुई।

वि.सं.२००४/२००५ में प.पू. व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास थराद में हुआ। इस चातुर्मास ने पूनमचंद के परिवर्तन में अहम् भूमिका निभाई और आपश्री का मन वैराग्यवासित बन गया। आपश्री परिवार की अनुमति से गुरुकुलवासी बन धार्मिक अध्ययन करते रहे। पुण्ययोग से राजस्थान के सियाणा गाँव में वि.सं.२०१० महा सुदि ४ को पूनमचंद प्रव्रज्या ग्रहण कर मुनि जयन्तविजय बने। संयम अंगीकार करने के पश्चात् गुरु की चरण-शरण में पूर्ण समर्पणता के साथ संयम साधना, श्रुत साधना में लीन बन गये। आपश्री की योग्यता, गंभीरता, शासननिष्ठा को दृष्टि में रखकर गुरुदेवश्री ने अपने मुख से आपको 'उपाचार्य' उद्घोषित किया। वि.सं.२०१७ में गुरुवियोग के पश्चात् आपश्री ने निरंतर तीन वर्ष अहमदाबाद में प्रबुद्ध पंडीतवर्यों से विद्याध्ययन किया। कर्तव्यपालन के रूप में आपकी विचरणयात्रा प्रारंभ हुई। अनेकविध शासन प्रभावना के कार्य आपकी निश्रा में होते गये। समग्र त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की उपस्थिति में भांडवपुर तीर्थ में वि.सं.२०४० महा सुदि १३ के दिन आप 'आचार्यपद' पर आसीन होकर त्रिस्तुतिक समुदाय के संघनायक बने। तत्पश्चात् मानो अजोड शासन प्रभावना का अनवरत क्रम चलता रहा। हर क्षेत्र में आपका विशिष्ट मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त होती रही। स्वयं की संयम साधना में रत रहकर आप शासन उत्कर्ष के कार्य संभालने में सक्षम रहे।

» **तीर्थ प्रभावक** के रूप में आपकी सद्प्रेरणा से प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं अनेक नूतन तीर्थों के निर्माण हुए।

» **साहित्य-मनीषी** के रूप में आपके द्वारा 250 से अधिक पुस्तकों का आलेखन, प्रकाशन, संपादन, संकलन हुआ। लगभग 3000 जितनी काव्य रचनाएँ हुई।

» **संघ एकता शिल्पी** के रूप में अनेक श्रीसंघों में वर्षों से चल रहे विवादों का सुखद समाधान हुआ।

» **प्रतिष्ठाशिरोमणि** के रूप में 300 से अधिक जिनालयों एवं गुरुमंदिरों की प्रतिष्ठा करवाई गयी एवं साथ ही 2000 से अधिक प्रतिमाओं की अंजनशलाका भी करवाई गयी।

» **आत्मोद्धारक** के रूप में आपश्री ने 192 आत्माओं को रजोहरण प्रदान कर दीक्षित किया।

» **राष्ट्रसंत/लोकसंत** के रूप में आपकी सद्प्रेरणा से अनेक स्थानों में अस्पताल, गौशाला, विद्यालय आदि का निर्माण हुआ एवं साथ ही कुदरती आपदाओं के समय में अनेक बार सेवा प्रवृत्तियाँ करवाई गई।

» अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार को आपका पूर्ण आशीर्वाद-मार्गदर्शन 60 वर्षों तक अनवरत मिलता रहा एवं साथ ही शाश्वत-धर्म मासिक पत्रिका आपके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रही।

» भारतभर में 14 प्रांतो में 1 लाख से अधिक कि.मी. का विहार करके जिनशासन एवं गुरु गच्छ की महिमा में खूब अभिवृद्धि की।

» आपने मध्यप्रदेश में 24, दक्षिण भारत में 12, राजस्थान में 12, शेष गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रांतो में कुल 63 चार्तुमास किये।

81 वर्ष की उम्र तक अप्रमत्तभाव से अकल्पनीय शासन प्रभावना करते हुए आपका वि.सं.२०७३ में वैशाख वदि ५ की रात्रि को भांडवपुर तीर्थ में समाधिपूर्वक देवलोकगमन हुआ। वैशाख वदि ७ को अंतिम संस्कार के साथ श्रीसंघ को आपका देहवियोग हुआ।

अखंड ऊर्जा के रूप में आप हमेशा जीवंत हो। देवलोकगमन पश्चात् श्रद्धांजलि सभा में सकल श्रीसंघ द्वारा 'पुण्यसम्राट्' पद पर उद्घोषित किया गया।

SCAN OR CODE

धन्य है धर्म नगरी रेवतड़ा

जिनशासन की जाज्वल्यमान यशस्वी यशोगाथा के स्वर्णिम पृष्ठों में अनेक स्वनामधन्य महात्माओं, धर्मानुरागी सुश्रावकों एवं गाँवों-नगरों के नाम अंकित हैं।

राजस्थान की धन्य धरा में जालोर जिले में अवस्थित रेवतड़ा गाँव अपनी आस्था एवं श्रद्धा के कारण जगप्रसिद्ध है।

इस नगर की गौरव गाथा का शुभारंभ विक्रम संवत् १६७५ माघ सुदि २ के शुभ दिन सर्वप्रथम जिनशासनरत्न शा. भारतमलजी टीलाजी वेदमुथा (जालोर) यहाँ व्यापार हेतु आए थे। तत्पश्चात् गोदरा निवासी हीराजी बालर यहाँ पधारे, जिन्हें हिराणी परिवार के रूप में जाना जाता है। विक्रम संवत् १८२२ में वेरठ निवासी देदाजी मांडोत परिवार का यहाँ पदार्पण हुआ। लगभग 200 वर्ष पूर्व लालन गोत्रीय सोफाड़िया परिवार सोफाड़ा गाँव से आए। इसी शृंखला में उम्मेदाबाद (गोल) से लुक्कड़ परिवार एवं तुरा गाँव से कवाड़ मुथा परिवार, ठाकुर साहब के साथ यहाँ आकर बस गये। परिवारजन अपने संग नित्य पूजा के लिए श्री शांतिनाथ प्रभु की पंचधातु प्रतिमा एवं श्री सिद्धचक्रजी लेकर आए थे। नगर के पुण्ययोग से विचरण करते हुए साध्वीजी भगवंत का आगमन हुआ। उनकी सद्प्रेरणा से प्राचीन आदिनाथ भगवान की 11 ईंच की प्रतिमा पूजा के लिए स्थापित की गई।

संवत् १८४० में वेदमुथा परिवार की पूजनीय दादीजी श्रीमती चन्द्रादेवी केरींगजी सती हुई तथा रेवतड़ा नगर में इनका मंदिर भी बना हुआ है।

रेवतड़ा नगर में जिनालय निर्माण का शिलान्यास, विक्रम संवत् १९५१ में किया गया, तब इस नगर में जैन घरों की संख्या 28 थी। सन् १९५५ में आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने आहोर नगर में 900 जिनबिंबों की अंजनशलाका करवाई, तब रेवतड़ा मंदिरजी हेतु श्री आदिनाथजी, श्री शांतिनाथजी, श्री महावीरस्वामीजी, श्री पार्श्वनाथजी एवं अधिष्ठायक गोमुख यक्ष एवं चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमाजी को प्रतिष्ठा के लिए रखा।

प्रतिमाओं की अंजनविधि के पश्चात् विक्रम संवत् १९७१ को पूज्यपाद आचार्य श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. से प्राणप्रतिष्ठा करवाने की भावभरी विनंती की गई। उस समय जैन घरों की संख्या 35 थी। प्रबल पुण्योदय से पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा., परम पूज्य श्री हर्षविजयजी म.सा., परम पूज्य श्री तीर्थविजयजी म.सा. के कर कमलों से जिनालय की प्रतिष्ठा हर्षोल्लास के वातावरण में सानंद संपन्न हुई। जिनालय प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद नगर के पुण्य-पराग निरन्तर बढ़ने लगे और धार्मिक एवं सामाजिक शुभ कार्य होते रहे।

विक्रम संवत् २०१८ में जिनालय का ध्वजदंड जीर्ण-शीर्ण होने से आचार्य श्री लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अष्टाह्निका महोत्सव में नवीन ध्वजदंड स्थापित किया गया।

पूज्यपाद आचार्य भगवंतों के निर्देशानुसार प्राचीन आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को नूतन जिनालय में बिराजमान करने का निर्णय श्रीसंघ द्वारा लिया गया। विक्रम संवत् २०६३ माघ सुदी १३ को प्राचीन श्री आदिनाथजी, श्री गौतमस्वामीजी एवं श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा को पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संयम स्थविर मुनिराज श्री शान्तिविजयजी म.सा. के शिष्य मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा. (वर्तमान में आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.) के करकमलों से चतुर्विध संघ की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ बिराजमान किया गया।

वर्तमान में रेवतड़ा, धर्मनगरी के रूप में विख्यात है। यहाँ जैन धर्मावलम्बियों के लगभग 270 घर हैं। रेवतड़ा नगरी का परम सौभाग्य है कि इस नगर से 8 मुमुक्षु लाड़ले भाई-बहनों ने दीक्षा अंगीकार की है और वे भगवान महावीर के अनुगामी बन स्व-पर कल्याण कर रहे हैं तथा उनके पथ पर अग्रसर है। रेवतड़ा नगर में अन्य समुदायवर्ती लोगों के लगभग 3500 घर विद्यमान हैं।

धन्य रेवतड़ा की माटी को... धन्य है वातावरण में घुली धर्म-अध्यात्म की खुश्बु को।

देव-गुरु-धर्म की कृपा रेवतडा नगर पर इसी तरह बनी रहे...

रेवतड़ा की संयम पथ-पथिक पुण्यात्माएँ

प्रभु महावीर के जिनशासन को उजमाल करने में पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों की अहम् भूमिका होती है। शासन शणगार हमारे अणगार पूज्य गुरु भगवंत जिनशासन की धर्म-प्रभावना करते हुए स्व-पर कल्याण करने को कटिबद्ध रहते हैं।

रेवतड़ा नगर का परम सौभाग्य है कि इस छोटे से गाँव की कुछ पुण्यात्माओं ने भगवान महावीर के पथ का अनुगमन करते हुए दीक्षा अंगीकार की है, जिससे रेवतड़ा नगरवासी अति गौरवान्वित हैं। हमारी जिनेश्वरदेव से अभ्यर्थना है कि इन संयम साधकों का संयम जीवन सुखशाता पूर्वक गतिमान बनें, हमारे नगर पर इनका आशीर्वाद हमेशा बना रहे।

1. **प. पू. साध्वीजी श्री तपोरूचिताश्रीजी म.सा.** (पिंकी बहन)
   - » दीक्षा दिवस : 07 दिसम्बर 2008
   - » दीक्षा दाता : प.पू. मुनिराजश्री विश्वरत्नविजयजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती कमलादेवी-श्री मीठालालजी मुल्तानमलजी वेदमुथा
2. **प. पू. साध्वीजी श्री दर्शनरत्नाश्रीजी म.सा.** (प्रमिला बहन)
3. **प. पू. साध्वीजी श्री ज्ञानरत्नाश्रीजी म.सा.** (विनीता बहन)
4. **प. पू. साध्वीजी श्री चारित्ररत्नाश्रीजी म.सा.** (अनिता बहन)
   - » दीक्षा दिवस : 23 फरवरी 2011
   - » दीक्षा दाता : प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय शीलचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
     प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय रविन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती लीलादेवी-श्री घेवरचंदजी मुल्तानमलजी वेदमुथा
5. **प. पू. मुनिराज श्री आर्यप्रभविजयजी म.सा.** (आकाश भाई)
   - » दीक्षा दिवस : 17 अप्रैल 2017
   - » दीक्षा दाता : प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय उदयप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती चंद्रादेवी-श्री महेन्द्रकुमारजी सरदारमलजी वेदमुथा
6. **प. पू. साध्वीजी श्री इक्षुज्योतिश्रीजी म.सा.** (सिमरन बहन)
   - » दीक्षा दिवस : 22 फरवरी 2021
   - » दीक्षा दाता : प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय अजितशेखरसूरीश्वरजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती संगीतादेवी-श्री अभयकुमारजी बाबुलालजी मांडोत
7. **प. पू. साध्वीजी श्री परमार्थधर्माश्रीजी म.सा.** (पायल बहन)
   - » दीक्षा दिवस : 13 जून 2021
   - » दीक्षा दाता : प.पू. आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती लीलादेवी-श्री सुरेशकुमारजी भंवरलालजी वेदमुथा
8. **प. पू. साध्वीजी श्री सम्यक्प्रज्ञाश्रीजी म.सा.** (डॉ. शीतल बहन)
   - » दीक्षा दिवस : 24 अप्रैल 2022
   - » दीक्षा दाता : प.पू. मुनिराजश्री भव्यचंद्रविजयजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती अनितादेवी-श्री शांतिलालजी मिश्रीमलजी कवाड़मुथा
9. **मुमुक्षु तनुषकुमार जितेन्द्रजी सोफाड़िया**
   - » दीक्षा दिवस : 11 फरवरी 2024
   - » दीक्षा दाता : कर्नाटक कोहिनूर प.पू. श्री महेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.
   - » माता-पिता : श्रीमती आशादेवी-श्री जितेन्द्रकुमारजी धनराजजी सोफाड़िया

श्री ढंढार जैन संघ के जाज्वल्यमान जिनालय दर्शन

रेवतड़ा
श्री आदिनाथाय नमः

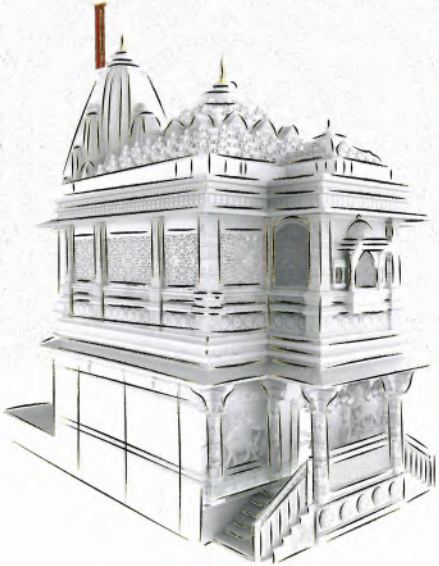

सांथू

बागरा

मोदरा

मोदरा स्टेशन

बाकरा रोड तीर्थ

बाकरा

अड़सठ जिनालय तीर्थ

बोरटा

सेरना

सरत

चूरा

धानसा

नून

नाम है तेरा तारणहारा...

परमात्मा का नाम स्मरण करने से –

» उनके गुणों के अभिमुख अत्यन्त भक्तिसभर, जितना अधिक चित्त होता है, तदनुरूप वही गुणों की प्राप्ति में बाधक बननेवाले कर्म नाश हो जाते है।

» नामस्मरण के समय गुणों के प्रति राग के अनुकूल निर्जरा एवं पुण्यानुबंधी पुण्य की प्राप्ति होती है।

» नामस्मरण के काल में जितना अधिक सूक्ष्मबोध, अर्थबोध होता है एवं परमार्थ प्राप्ति के लिए अप्रमादभाव जितना अतिशय होता है, उतना संसार परिभ्रमण सीमित होता है।

» नामस्मरण के समय परमात्मा के गुणों में प्रवर्तित उपयोग अगर अत्यधिक सूक्ष्म हो तो तीर्थंकर बनने योग्य तीर्थंकर नामकर्म के बंध का कारण भी होता है।

» वीतरागता का स्पर्श हो और उसके अनुरूप अप्रमत्तभाव प्रकर्षवाला हो तो क्षपकश्रेणी की प्राप्ति होती है।

» नामस्मरण के द्वारा अवीतरागभाव से संचित अनादिकालीन सर्व कर्मों का क्षय करके जीव वीतराग सर्वज्ञ बन जाता है।

» एकाग्रतापूर्वक परमात्मा का नामस्मरण करने से साधक परमात्मा के उपयोगवाला बनता है, इस एकरूपता को समापत्ति कहते हैं, जो सर्व इष्टसिद्ध करने में समर्थ है।

आधार : ललितविस्तरा ग्रन्थ

प्रथम शिला के लाभार्थी

पिताश्री सुमेरमलजी गुणेशाजी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री शांतिदेवी सुमेरमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. जयंतीलाल, सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, विमलकुमार,
नरेश, दर्शन, विपुल, मानव, मानविक
बेटा-पोता **शा. सुमेरमलजी गुणेशाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : पद्मावती हार्डवेयर, हुबली - दिल्ली

दूसरी शिला के लाभार्थी

मातुश्री शांतिदेवी मांगीलालजी के दिव्याशिष से
एवं पिताश्री मांगीलालजी शेषमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. दिनेश-सुशीलादेवी, संतोष-रेखादेवी, कमलेश-विमलादेवी,
भावेश-पूजादेवी, ध्रुव, उर्वेश, हर्ष, अंकिता, सुहानी
बेटा-पोता **शा. मांगीलालजी शेषमलजी अक्काजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. मांगीलाल शेषमलजी, धुलियाँ - औरंगाबाद - अहमदाबाद

तीसरी शिला के लाभार्थी

मातुश्री मोहिनीदेवी छगनराजजी भीमाजी तथा भ्राताश्री रमेशकुमारजी छगनराजजी
व रोशनलालजी छगनराजजी वेदमुथा के दिव्याशिष से
शा. टिकमचंद, विक्रम, पंचम, अनिल, सुनिल, नितिन,
महावीर, ध्यान, विहान, मनन, मोक्ष, स्तवित
बेटा-पोता-पडपोता **शा. छगनराजजी भीमाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. टीकमचंद छगनराज एण्ड को., मैसुर

चौथी शिला के लाभार्थी

मातुश्री शांतिदेवी शंकरलालजी के दिव्याशिष से
एवं पिताश्री शंकरलालजी शेषमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. नेमीचंद-मंजुदेवी, संजय-सुमित्रादेवी, प्रतीक-पिंकीदेवी,
लाभेश-वर्षादेवी, लक्ष, पक्षाल
बेटा-पोता **शा. शंकरलालजी शेषमलजी अक्काजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. शंकरलालजी शेषमलजी वेदमुथा, अहमदनगर

पंचम शिला के लाभार्थी

मातुश्री ढेलीदेवी किशोरीलालजी भीमाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. भंवरलाल, दिनेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, ललितकुमार,
राकेशकुमार, विनयकुमार, श्लोक, युक्ति, रियांश
बेटा-पोता **शा. किशोरीलालजी भीमाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : राजेन्द्र स्पोर्ट्स, मैसुर

छट्ठी शिला के लाभार्थी

मातुश्री डेपीदेवी वस्तीमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, चम्पालाल, कांतिलाल, सुमीत, विक्रम,
राजेश, संजय, अभिषेक, विधान, नियम, प्रीतम
बेटा-पोता-पडपोता
शा. वस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : रोहिणी ओटो पार्ट्स, हैदराबाद

सातवी शिला के लाभार्थी

मातुश्री पाबुदेवी ओटमलजी गोराजी
एवं भ्राताश्री मदनलालजी ओटमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. जोगराज-पुष्पादेवी, रमेशकुमार-फेन्सीदेवी, जयन्तीलाल-वर्षादेवी,
प्रवीणकुमार-अंजुदेवी, किशनकुमार-पिंकीदेवी, बिशनकुमार-रेखादेवी,
कपिलकुमार-चेतनादेवी, आकाशकुमार-रीनादेवी, अक्षितकुमार-सोनलदेवी,
आतिशकुमार-दिव्यादेवी, दर्शन, आर्यन, जश, पर्व, आह्वान
बेटा-पोता **शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : श्रीमती पाबुदेवी ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, मुंबई - विजयवाड़ा - बेंगलुरु

आठवी शिला के लाभार्थी

मातुश्री पातीदेवी भारतमलजी भगाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
गृहिणी परिवार
पुत्रवधू : श्रीमती सीतादेवी, चन्द्रादेवी, कान्तादेवी, मंजुदेवी, मंगला, ललिता,
सुरेखा, अरुणा, नीता, टिना, मनीषा, नीता, शिल्पा, प्रिया, सपना, सुमन
पौत्री : खुशबु, काजल, कोमल, अक्षिता, वृद्धि, दीक्षा, क्रिषी, उर्वी,
रिया, हेतवी, प्रिशा, पार्शी, पेहल, स्तुति **वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : एम. के. गार्मेन्ट्स, बेंगलुरु

नवमी शिला के लाभार्थी

मातुश्री सुआदेवी सुमेरमलजी एवं
भ्राताश्री जीतमलजी सुमेरमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
तथा श्रीमती पानीदेवी जीतमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. अशोककुमार-संजुदेवी, ललितकुमार-रंगीलादेवी,
चिन्टुकुमार-रेखादेवी, अर्पणकुमार-श्रेयादेवी, पनव, अर्हम्
बेटा-पोता-पडपोता **शा. सुमेरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : महेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी, बेंगलुरु

द्वार शाखा उत्तरंग के लाभार्थी

पिताश्री घेवरचन्दजी सुखराजजी एवं
भ्राताश्री विजयकुमार घेवरचंदजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से
तथा मातुश्री बादामीदेवी घेवरचन्दजी सोफाड़िया के आशीर्वाद से
संघवी शा. राजेन्द्रकुमार-बबीतादेवी, दिनेशकुमार-पिंकीदेवी,
खुशी, कियान
बेटा-पोता **संघवी शा. घेवरचन्दजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : पवन टेक्स, बेंगलुरु

गंभारा पदम शिला के लाभार्थी

मातुश्री पानीदेवी हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मदनलाल-संगीतादेवी, जयंतीलाल-विमलादेवी,
भेरुलाल-मंजुलादेवी, गौतमकुमार-संगीतादेवी,
विक्रम-अरुणा, निखिल-स्नेहा, गौरव-विनीशा, यश-पूजा, पर्व
बेटा-पोता **शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : मास्टर ग्रुप, चेन्नई

अरिहंत परमात्मा की उपासना का उपाय

अरिहंत परमात्मा की आराधना चार निक्षेप द्वारा हम कर सकते है, ऐसा उल्लेख ललितविस्तरा, प्रतिमा शतक, आवश्यक सूत्र, अनुयोगद्वार सूत्र, विशेषावश्यक भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों में मिलता है।

नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव इन चार निक्षेपों द्वारा जगत के जीवों को पवित्र करनेवाले, सर्व क्षेत्र एवं सर्व काल में होनेवाले अरिहंतों की हम उपासना करते है।

इन चार निक्षेप में प्रथम है – नाम निक्षेप! जिसका विशेष स्वरूप हम यहां प्रकाशित कर रहे है। एक निक्षेप की विशेषता जानकर शेष निक्षेपों की विशेषता आप जान सकते हो या जानने की विशेष जिज्ञासा प्रगट हो सकती है। प्रथम तीन निक्षेप साधन रूप है, चतुर्थ निक्षेप साध्य रूप है। भाव जिन में एकाकार होने के लिये नामादि निक्षेप आवश्यक माध्यम है। अतः उसका आलम्बन लेकर हम अरिहंतमय बनने का प्रयास करेंगे।

नाम निक्षेप की स्पष्टता, यथार्थ बोध शास्त्रों के आधार से जानकर अरिहंत परमात्मा की उपासना कर धन्य बने।

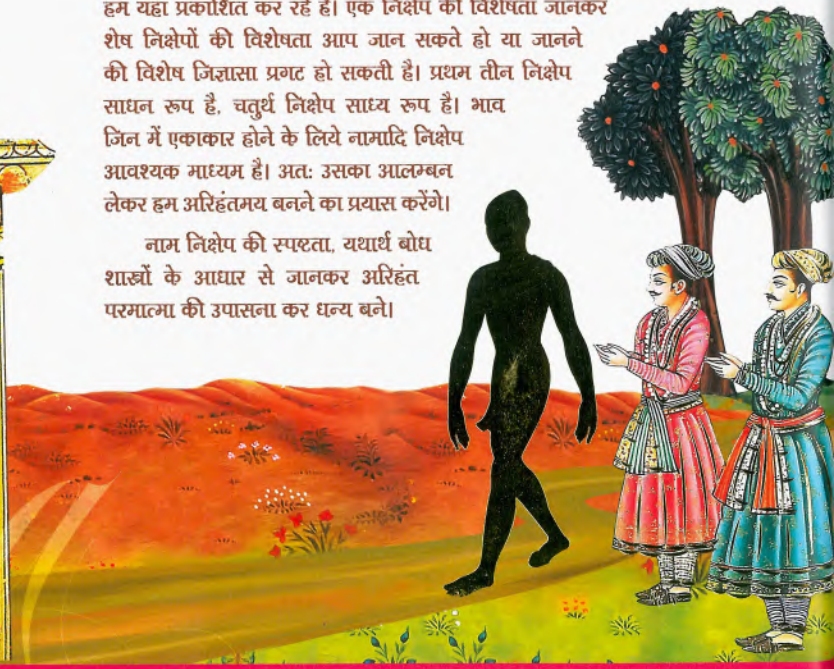

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

जिन प्रतिमा भरवानेवाले लाभार्थी

1. शा. लकमीचन्दजी सागरमलजी वेदमुथा
2. संघवी श्रीमती बसुदेवी कपुरचंदजी वेदमुथा
3. संघवी श्रीमती कमलादेवी कानराजजी वेदमुथा
4. संघवी श्रीमती इन्द्रादेवी हिराचंदजी वेदमुथा
5. शा. हडमतमलजी सागरमलजी वेदमुथा
6. संघवी शा. मदनलालजी ओटमलजी वेदमुथा
7. श्रीमती चन्द्रावतीदेवी कांतिलालजी हिराणी
8. संघवी श्रीमती पातिदेवी भारतमलजी वेदमुथा
9. संघवी श्रीमती सीतादेवी मांगीलालजी वेदमुथा
10. संघवी श्रीमती चंद्रादेवी गणपतचन्दजी वेदमुथा
11. संघवी श्रीमती कान्तादेवी रमेशकुमारजी वेदमुथा
12. संघवी श्रीमती मंजुदेवी कैलाशकुमारजी वेदमुथा
13. संघवी शा. जुगराजजी सरेमलजी वेदमुथा
14. संघवी श्रीमती सोवनदेवी आनन्दकुमारजी वेदमुथा
15. श्रीमती बगसुदेवी जुगराजजी वेदमुथा
16. श्रीमती मीनाक्षीदेवी मुकेशकुमारजी वेदमुथा
17. श्रीमती संगीतादेवी दिनेशकुमारजी वेदमुथा
18. शा. पृथीराजजी कुन्दनमलजी वेदमुथा
19. शा. भागचंदजी कुन्दनमलजी वेदमुथा
20. शा. कांतिलालजी कुन्दनमलजी वेदमुथा
21. शा. जयन्तीलालजी कुन्दनमलजी वेदमुथा
22. श्रीमती प्यारीदेवी कुन्दनमलजी वेदमुथा
23. श्रीमती कमलादेवी दीपचंदजी मांडोत
24. शा. रोषमलजी उकाजी कवाड़मुथा
25. श्रीमती कान्तादेवी उत्तमचन्दजी कवाड़मुथा
26. शा. रमेशकुमारजी मूलचंदजी कवाड़मुथा
27. शा. भंवरलालजी हस्तीमलजी हिराणी
28. श्रीमती शांतिदेवी भंवरलालजी हिराणी
29. शा. कांतिलालजी मन्छालालजी वेदमुथा
30. श्रीमती मोवनदेवी कांतिलालजी वेदमुथा
31. शा. जुठमलजी गोमाजी वेदमुथा
32. शा. भंवरलालजी जुठमलजी वेदमुथा
33. श्रीमती सकुदेवी अमीचंदजी वेदमुथा
34. शा. बाबुलालजी अमीचंदजी वेदमुथा
35. श्रीमती कमलादेवी छगनराजजी मांडोत
36. शा. सुरेशकुमारजी छगनराजजी मांडोत
37. शा. प्रेमचंदजी छगनराजजी मांडोत
38. शा. चम्पालालजी छगनराजजी मांडोत
39. शा. चम्पालालजी इन्द्रमलजी कवाड़मुथा
40. श्रीमती पाबुदेवी हरकचंदजी मांडोत
41. शा. श्रीपालकुमारजी वस्तीमलजी लुंकड
42. शा. बाबुलालजी जेठमलजी कवाड़मुथा
43. शा. दिनेशकुमारजी वेलचन्दजी कवाड़मुथा
44. शा. जीतमलजी मोड़ाजी वेदमुथा
45. श्रीमती वदामीदवी वेवरचंदजी सोफाड़िया
46. श्रीमती शांतिदेवी भंवरलालजी कवाड़मुथा
47. श्रीमती चौथीदेवी छगनराजजी कवाड़मुथा
48. श्रीमती मीरादेवी पारसमलजी कवाड़मुथा
49. श्रीमती वदामीदेवी मोहनलालजी कवाड़मुथा
50. श्रीमती मंजुदेवी रमेशकुमारजी कवाड़मुथा
51. श्रीमती मंजुदेवी महेंद्रकुमारजी कवाड़मुथा
52. श्रीमती सकुदेवी पारसमलजी वेदमुथा
53. श्रीमती शान्तिदेवी अमीचंदजी वेदमुथा
54. शा. भंवरलालजी गोराजी वेदमुथा
55. शा. मनोहरमलजी गोराजी वेदमुथा
56. संघवी शा. अमरचंदजी रघुनाथमलजी वेदमुथा
57. शा. रतनचंदजी दीपचंदजी कवाड़मुथा
58. शा. पारसमलजी कुन्दनमलजी कवाड़मुथा
59. शा. अशोककुमारजी पारसमलजी वेदमुथा
60. शा. शांतिलालजी मुल्तानमलजी वेदमुथा
61. श्रीमती सुकीदेवी सोकलचंदजी वेदमुथा
62. श्रीमती लीलादेवी वेवरचंदजी वेदमुथा
63. श्रीमती हेमादेवी विनोदकुमारजी वेदमुथा
64. श्रीमती कमलादेवी मीठालालजी वेदमुथा
65. शा. संजयकुमारजी मीठालालजी वेदमुथा
66. श्रीमती संगीतादेवी संजयकुमारजी वेदमुथा
67. शा. मुकेशकुमारजी मीठालालजी वेदमुथा
68. श्रीमती उषादेवी मुकेशकुमारजी वेदमुथा
69. शा. संयमकुमारजी संजयकुमारजी वेदमुथा
70. शा. वीरकुमारजी संजयकुमारजी वेदमुथा
71. श्रीमती फैन्सीदेवी देवीचंदजी हिराणी
72. श्रीमती डीम्पलदेवी विनोदकुमारजी हिराणी
73. श्रीमती शीतलदेवी मुकेशकुमारजी हिराणी
74. शा. दिवेशकुमार मुकेशकुमारजी हिराणी
75. शा. दिनेशकुमारजी मंगलचंदजी हिराणी
76. शा. देवांशकुमारजी मुकेशकुमारजी वेदमुथा
77. शा. पारसमलजी भंवरलालजी वेदमुथा
78. शा. कांतिलालजी भंवरलालजी वेदमुथा
79. श्रीमती ज्योतिदेवी कपूरचंदजी सोफाड़िया
80. शा. बाबुलालजी कपूरचंदजी सोफाड़िया
81. श्रीमती गुलाबीदेवी हकमीचंदजी कवाड़मुथा
82. शा. दरजमलजी छोगाजी हिराणी
83. श्रीमती प्यारीदेवी दरजमलजी हिराणी
84. शा. हडमतमलजी दरजमलजी हिराणी
85. श्रीमती बगुदेवी हडमतमलजी हिराणी
86. शा. बाबुलालजी कुन्दनमलजी हिराणी
87. श्रीमती शांतिदेवी बाबुलालजी हिराणी
88. शा. अशोककुमारजी पुखराजजी वेदमुथा
89. श्रीमती कंचनदेवी जयंतीलालजी कवाड़मुथा
90. श्रीमती सुकीदेवी दरगचंदजी कवाड़मुथा
91. श्रीमती सुखीदेवी बाबुलालजी वेदमुथा
92. श्रीमती संतोषदेवी राणमलजी वेदमुथा
93. श्रीमती चंद्रादेवी किशोरकुमारजी वेदमुथा
94. श्रीमती रेखादेवी किरणकुमारजी वेदमुथा
95. श्रीमती शांतिदेवी भंवरलालजी वेदमुथा
96. श्रीमती पुष्पादेवी चन्दनमलजी लुंकड़
97. श्रीमती रुपीबाई सोनमलजी कबदी
98. शा. रमेशकुमारजी हिराचंदजी वेदमुथा
99. श्रीमती रम्भादेवी माणकचंदजी कवाड़मुथा
100. शा. कमलेशकुमारजी छगनराजजी कवाड़मुथा
101. श्रीमती ढेलीदेवी सोकलचन्दजी वेदमुथा
102. श्रीमती जेठीदेवी सुमेरमलजी वेदमुथा
103. शा. जीतमलजी सोकलचन्दजी वेदमुथा
104. शा. अशोककुमारजी सोकलचन्दजी वेदमुथा
105. शा. अमृतलालजी सोकलचन्दजी हिराणी
106. श्रीमती शांतिदेवी अमृतलालजी हिराणी
107. शा. प्रकाशचन्दजी सोकलचन्दजी हिराणी
108. श्रीमती देवीबाई प्रकाशचंदजी हिराणी
109. शा. तिलोकचन्दजी कुन्दनमलजी मुथा
110. संघवी शा. नेमीचंदजी पारसमलजी वेदमुथा
111. संघवी शा. भंवरलालजी रघुनाथमलजी वेदमुथा
112. शा. दीपचंदजी पुनमाजी वेदमुथा
113. श्रीमती ढेपीदेवी वस्तीमलजी वेदमुथा
114. श्रीमती जड़ावीदेवी मीठालालजी वेदमुथा
115. शा. कुवालालजी मीठालालजी वेदमुथा
116. श्रीमती पवनीबाई जुगराजजी मांडोत
117. शा. मनोहरमलजी मुल्तानमलजी वेदमुथा
118. श्रीमती मोहनदेवी मनोहरमलजी वेदमुथा
119. शा. बाबुलालजी खिमाजी मांडोत
120. श्रीमती रतनादेवी चैनमलजी मांडोत

महा वद-९ 31-01-2024

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

जिन प्रतिमा भरवानेवाले लाभार्थी

121. श्रीमती पाबुदेवी उम्मेदमलजी लुंकड़
122. श्रीमती लीलादेवी अचलचंदजी मांडोत
123. शा. तिकमचंदजी छगनराजजी वेदमुथा
124. श्रीमती फैन्सीदेवी हमैरमलजी कवाड़मुथा
125. श्रीमती देवीबाई किशोरकुमारजी कवाड़मुथा
126. श्रीमती शांतिबाई मोटमलजी कवाड़मुथा
127. श्रीमती डिम्पलबाई सुरेशकुमारजी कवाड़मुथा
128. शा. राजेशकुमारजी पारसमलजी लुंकड़
129. श्रीमती मंजुदेवी रमेशकुमारजी हिराणी
130. श्रीमती शांतिदेवी सुमेरमलजी वेदमुथा
131. श्रीमती कनीदेवी जुठमलजी वेदमुथा
132. श्रीमती सुमतिदेवी तगराजजी हिराणी
133. श्रीमती मंजुलादेवी प्रकाशचंदजी हिराणी
134. श्रीमती पिंकीदेवी धीरजकुमारजी हिराणी
135. श्रीमती रितुदेवी चेतनकुमारजी हिराणी
136. श्रीमती पुष्पादेवी कांतिलालजी हिराणी
137. श्रीमती कुसुमदेवी राकेशकुमारजी हिराणी
138. श्रीमती मंजुदेवी गौतमचन्दजी हिराणी
139. श्रीमती मंजुलादेवी राजेन्द्रकुमारजी हिराणी
140. श्रीमती पूजादेवी आकाशकुमारजी हिराणी
141. शा. आशीषकुमारजी भेरुलालजी हिराणी
142. श्रीमती स्नेहा आशीषकुमारजी हिराणी
143. सु.श्री. रीयाना आशीषकुमारजी हिराणी
144. श्रीमती भाग्यवन्तीदेवी भेरुलालजी हिराणी
145. श्रीमती ओटीदेवी जीतमलजी हिराणी
146. श्रीमती ममतादेवी प्रवीणकुमारजी हिराणी
147. श्रीमती गवरीदेवी उकचंदजी हिराणी
148. श्रीमती शांतिदेवी मीठालालजी हिराणी
149. श्रीमती लीलादेवी अशोककुमारजी हिराणी
150. श्रीमती विमलादेवी घिसुलालजी हिराणी
151. श्रीमती सूर्यादेवी महेंद्रकुमारजी हिराणी
152. श्रीमती परमिलादेवी विमलकुमारजी हिराणी
153. श्रीमती चेतनादेवी मुकेशकुमारजी हिराणी
154. श्रीमती फैन्सीदेवी रमेशकुमारजी वेदमुथा
155. शा. रमेशकुमारजी ओटमलजी वेदमुथा
156. शा. आकाशकुमारजी रमेशकुमारजी वेदमुथा
157. श्रीमती रीनादेवी आकाशकुमारजी वेदमुथा
158. शा. जोगराजजी ओटमलजी वेदमुथा
159. श्रीमती पुष्पादेवी जोगराजजी वेदमुथा
160. शा. किशनकुमारजी जोगराजजी वेदमुथा
161. शा. बिशनकुमारजी जोगराजजी वेदमुथा
162. श्रीमती पिन्कीदेवी किशनकुमारजी वेदमुथा
163. सु.श्री रैनाकुमारी किशनकुमारजी वेदमुथा
164. श्रीमती रेखादेवी बिशनकुमारजी वेदमुथा
165. शा. कपिलकुमारजी जोगराजजी वेदमुथा
166. श्रीमती चेतनादेवी कपिलकुमारजी वेदमुथा
167. शा. जस किशनकुमारजी वेदमुथा
168. शा. प्रवीणकुमारजी ओटमलजी वेदमुथा
169. श्रीमती अन्जुदेवी प्रवीणकुमारजी वेदमुथा
170. शा. अक्षितकुमारजी प्रवीणकुमारजी वेदमुथा
171. श्रीमती सोनलदेवी अक्षितकुमारजी वेदमुथा
172. शा. आतिशकुमारजी प्रवीणकुमारजी वेदमुथा
173. श्रीमती दिव्यादेवी आतिशकुमारजी वेदमुथा
174. शा. आर्यनकुमारजी प्रवीणकुमारजी वेदमुथा
175. शा. आहानकुमार अक्षितकुमारजी वेदमुथा
176. शा. जयंतीलालजी ओटमलजी वेदमुथा
177. श्रीमती वर्षादेवी जयंतीलालजी वेदमुथा
178. श्रीमती मतरादेवी छगनराजजी हिराणी
179. श्रीमती भंवरीदेवी लकमीचन्दजी हिराणी
180. श्रीमती ललितादेवी रमेशकुमारजी हिराणी
181. श्रीमती कमलादेवी मुन्नीलालजी हिराणी
182. शा. राजेन्द्रकुमारजी मुन्नीलालजी हिराणी
183. श्रीमती रेखादेवी राजेन्द्रकुमारजी हिराणी
184. शा. साहिलकुमारजी राजेन्द्रकुमारजी हिराणी
185. शा. अजयकुमारजी मुन्नीलालजी हिराणी
186. श्रीमती संगीतादेवी अजयकुमारजी हिराणी
187. सु.श्री. ईशिकाकुमारी अजयकुमारजी हिराणी
188. शा. पर्वकुमार अजयकुमारजी हिराणी
189. सु.श्री. हिनल अजयकुमारजी हिराणी
190. शा. विनोदकुमारजी मुन्नीलालजी हिराणी
191. श्रीमती पिंकीदेवी विनोदकुमारजी हिराणी
192. शा. रेहांशकुमारजी विनोदकुमारजी हिराणी
193. सु.श्री. छविकुमारी विनोदकुमारजी हिराणी
194. शा. अशोककुमारजी मुन्नीलालजी हिराणी
195. श्रीमती अन्जुदेवी अशोककुमारजी हिराणी
196. सु.श्री. दियाकुमारी अशोककुमारजी हिराणी
197. शा. दक्षकुमारजी अशोककुमारजी हिराणी
198. शा. दीपककुमारजी मुन्नीलालजी हिराणी
199. श्रीमती सुमनदेवी दीपककुमारजी हिराणी
200. सु.श्री. दिहाकुमारी दीपककुमारजी हिराणी
201. सु.श्री. आरवी दीपककुमारजी हिराणी
202. श्रीमती चंद्रादेवी दिनेशकुमारजी हिराणी
203. शा. रिषभकुमारजी दिनेशकुमारजी हिराणी
204. शा. निलेशकुमारजी दिनेशकुमारजी हिराणी
205. श्रीमती फैन्सीदेवी मंगलचंदजी हिराणी
206. शा. महावीरकुमारजी मंगलचंदजी हिराणी
207. श्रीमती मन्जुदेवी महावीरकुमारजी हिराणी
208. शा. मोन्टुकुमारजी महावीरकुमारजी हिराणी
209. श्रीमती भव्यादेवी मोन्टुकुमारजी हिराणी
210. सु.श्री. अर्पिताकुमारी महावीरकुमारजी हिराणी
211. श्रीमती विमलादेवी जुगराजजी मांडोत
212. श्रीमती सुमटीदेवी हरकचंदजी मांडोत
213. शा. जुगराजजी हरकचंदजी मांडोत
214. श्रीमती कमलादेवी सुमेरमलजी मांडोत
215. शा. गजराजजी मंगलचंदजी हिराणी
216. श्रीमती मीनादेवी गजराजजी हिराणी
217. शा. ध्रुव गजराजजी हिराणी
218. सु. श्री रिधिमा गजराजजी हिराणी
219. सु. श्री रिशिता गजराजजी हिराणी
220. श्रीमती जडावीदेवी जुगराजजी वेदमुथा
221. श्रीमती शांतिदेवी मांगीलालजी सोफाड़िया
222. शा. मांगीलालजी रिकबचंदजी सोफाड़िया
223. श्रीमती विमलादेवी जयंतीलालजी वेदमुथा
224. श्रीमती वलमीदेवी कांतिलालजी कवाड़मुथा
225. शा. सोनमलजी नेमीचंदजी कवाड़मुथा
226. श्रीमती पानीदेवी हस्तीमलजी वेदमुथा
227. श्रीमती संगीतादेवी मदनलालजी वेदमुथा
228. श्रीमती मंजुलादेवी भेरुलालजी वेदमुथा
229. श्रीमती संगीतादेवी गौतमकुमारजी वेदमुथा
230. शा. शांतिलालजी लालचंदजी वेदमुथा
231. श्रीमती लीलादेवी जीतमलजी सोफाड़िया
232. श्रीमती बबीतादेवी निखिलकुमारजी सोफाड़िया
233. श्रीमती प्रसनदेवी खुशालकुमारजी सोफाड़िया
234. श्रीमती मुलीदेवी जुठमलजी सोफाड़िया
235. श्रीमती मंजुदेवी कांतिलालजी सोफाड़िया
236. श्रीमती सुनितादेवी उत्तमचन्दजी सोफाड़िया
237. श्रीमती कमलादेवी जुगराजजी सोफाड़िया
238. सु.श्री. निकिताकुमारी जुगराजजी सोफाड़िया
239. सु.श्री. मेघाकुमारी जुगराजजी सोफाड़िया
240. शा. जीतमलजी मुल्तानमलजी वेदमुथा

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

जिन प्रतिमा भरवानेवाले लाभार्थी

241. श्रीमती बदामीदेवी शंकरलालजी मांडोत
242. श्रीमती ललितादेवी हीरालालजी मांडोत
243. श्रीमती शांतिदेवी भंवरलालजी मांडोत
244. शा. विनोदकुमारजी धुकचंदजी वेदमुथा
245. श्रीमती उगमदेवी घेवरचंदजी वेदमुथा
246. संघवी शा. वसंतकुमारजी तिलोकचंदजी वेदमुथा
247. श्रीमती सरस्वतीदेवी उदयचंदजी वेदमुथा
248. श्रीमती शांतिदेवी मांगीलालजी वेदमुथा
249. श्रीमती शांतिदेवी शंकरलालजी वेदमुथा
250. शा. मोहनलालजी कानमलजी वेदमुथा
251. शा. चंपालालजी नैनमलजी वेदमुथा
252. श्रीमती चोथीदेवी चंपालालजी वेदमुथा
253. शा. दिलीपकुमारजी नैनमलजी वेदमुथा
254. शा. नरेंद्रकुमारजी शेषमलजी वेदमुथा
255. शा. तगराजजी लालचंदजी वेदमुथा
256. श्रीमती शीतलदेवी संदीपकुमारजी हिराणी
257. श्रीमती भारतीदेवी प्रदीपकुमारजी हिराणी
258. श्रीमती चिंकीदेवी दिलीपकुमारजी हिराणी
259. श्रीमती जम्मूदेवी फतेहराजजी हिराणी
260. श्रीमती मंजुदेवी भंवरलालजी वेदमुथा
261. श्रीमती अर्चनादेवी संदीपकुमारजी वेदमुथा
262. श्रीमती सोनमदेवी अंकुशकुमारजी वेदमुथा
263. श्रीमती कमलादेवी जयंतीलालजी सोफाड़िया
264. श्रीमती सरितादेवी विनोदकुमारजी सोफाड़िया
265. श्रीमती सुशीलादेवी जयंतीलालजी मांडोत
266. श्रीमती पवनीबाई सुबटमलजी हिराणी
267. श्रीमती मीनादेवी भेरुलालजी हिराणी
268. श्रीमती वलमीदेवी मुल्तानमलजी हिराणी
269. श्रीमती पवनीदेवी जयंतीलालजी हिराणी
270. श्रीमती संगीतादेवी कांतिलालजी हिराणी
271. श्रीमती संगीतादेवी उत्तमचंदजी हिराणी
272. श्रीमती हुलीदेवी हस्तीमलजी हिराणी
273. श्रीमती कंचनदेवी मदनलालजी हिराणी
274. श्रीमती मीनादेवी महावीरकुमारजी हिराणी
275. श्रीमती संगीतादेवी गौतमकुमारजी हिराणी
276. श्रीमती विमलादेवी चंपालालजी हिराणी
277. श्रीमती अमितदेवी हंजारीमलजी सोफाड़िया
278. श्रीमती बीजुदेवी भूरमलजी सोफाड़िया
279. श्रीमती नैनुदेवी वेलचंदजी सोफाड़िया
280. श्रीमती फूलीदेवी नैनमलजी सोफाड़िया
281. श्रीमती शांतिदेवी तिलोकचंदजी कवाड़मुथा
282. शा. मांगीलालजी वस्तीमलजी वेदमुथा
283. श्रीमती विजुदेवी मांगीलालजी वेदमुथा
284. शा. कांतिलालजी दुर्गचंदजी कवाड़मुथा
285. श्रीमती अंजनादेवी प्रकाशचंदजी वेदमुथा
286. श्रीमती जड़ावीदेवी जुगराजजी वेदमुथा
287. शा. सरदारमलजी गोराजी वेदमुथा
288. श्रीमती ओटीदेवी कुंदनमलजी सोफाड़िया
289. श्रीमती मीनादेवी महेंद्रकुमारजी सोफाड़िया
290. श्रीमती सोनादेवी योगेशकुमारजी सोफाड़िया
291. शा. हीराचंदजी मोड़ाजी वेदमुथा
292. शा. किशोरीलालजी भीमाजी वेदमुथा
293. श्रीमती हेलीदेवी किशोरीलालजी वेदमुथा
294. शा. दिनेशकुमारजी किशोरीलालजी वेदमुथा
295. शा. राजुकुमारजी किशोरीलालजी वेदमुथा
296. श्रीमती सुआदेवी सुमेरमलजी वेदमुथा
297. श्रीमती पानीदेवी जीतमलजी वेदमुथा
298. श्रीमती संजुदेवी अशोककुमारजी वेदमुथा
299. श्रीमती सुशीलादेवी ललितकुमारजी कवाड़मुथा
300. शा. भंवरलालजी किशोरीलालजी वेदमुथा
301. शा. जयंतीलालजी भबुतमलजी हिराणी
302. श्रीमती सुवनदेवी जयंतीलालजी हिराणी
303. सु.श्री. सेजल जयंतीलालजी हिराणी
304. शा. सुमेरमलजी रकबाजी वेदमुथा
305. श्रीमती बदामीदेवी साकलचन्दजी वेदमुथा
306. शा. विनोदकुमारजी भबुतमलजी मांडोत
307. श्रीमती देवीबाई भबुतमलजी मांडोत
308. शा. बाबुलालजी जेठमलजी मांडोत
309. श्रीमती गुणवंतीदेवी बाबुलालजी मांडोत
310. शा. गणपतराजजी जुगराजजी कवाड़मुथा
311. श्रीमती सोहनदेवी कालुचंदजी वेदमुथा
312. शा. सुरेशकुमारजी घेवरचंदजी वेदमुथा
313. शा. जीतमलजी भंवरलालजी वेदमुथा
314. शा. बाबुलालजी सांकलचन्दजी वेदमुथा
315. श्रीमती देवीबाई भबुतमलजी मांडोत
316. श्रीमती फैसीदेवी पारसमलजी मांडोत
317. शा. फतेहराजजी कपुरचन्दजी सोफाड़िया
318. शा. दिलीपकुमारजी मन्छालालजी वेदमुथा
319. श्रीमती सेमीदेवी मोटमलजी वेदमुथा
320. शा. गौतमकुमारजी अमीचन्दजी वेदमुथा
321. श्रीमती राजुलदेवी जुगराजजी मांडोत
322. शा. जीतमलजी तगराजजी वेदमुथा
323. शा. मुकेशकुमारजी शांतिलालजी वेदमुथा
324. शा. राकेशकुमारजी शांतिलालजी वेदमुथा
325. श्रीमती रोहिणीदेवी मनोहरमलजी वेदमुथा
326. शा. पुखराजजी मिश्रीमलजी मांडोत
327. श्रीमती साईतीदेवी घेवरचंदजी वेदमुथा
328. शा. प्रियेशकुमारजी रमेशकुमारजी कवाड़मुथा
329. श्रीमती छायादेवी वीरचंदजी वेदमुथा
330. श्रीमती जमनादेवी छगनराजजी वेदमुथा
331. शा. मदनलालजी छगनराजजी वेदमुथा
332. श्रीमती अंजनादेवी मदनलालजी वेदमुथा
333. श्रीमती शांतिदेवी हस्तीमलजी वेदमुथा
334. श्रीमती भंवरीदेवी जुगराजजी वेदमुथा
335. श्रीमती चंद्रादेवी नरेंद्रकुमारजी कवाड़मुथा
336. श्रीमती रमकुदेवी कुयालालजी वेदमुथा
337. श्रीमती कंचनदेवी महावीरजी वेदमुथा
338. श्रीमती रेखादेवी सुरेशकुमारजी हिराणी
339. श्रीमती कवितादेवी मुकेशकुमारजी हिराणी
340. श्रीमती नीतुदेवी मुकेशकुमारजी छाजेड़
341. शा. घेवरचन्दजी पूनमचन्दजी मांडोत
342. शा. महावीरकुमारजी सोकलचन्दजी वेदमुथा
343. श्रीमती पुष्पादेवी कानराजजी वेदमुथा
344. श्रीमती सुशीलादेवी अशोककुमारजी कवाड़मुथा
345. शा. धनराजजी हरकचंदजी सोफाड़िया
346. संघवी शा. गणपतलालजी ओटमलजी वेदमुथा
347. संघवी शा. चम्पालालजी ओटमलजी वेदमुथा
348. शा. रमेशकुमारजी छगनराजजी वेदमुथा
349. शा. रोशनलालजी छगनराजजी वेदमुथा
350. श्रीमती पुष्पादेवी प्रेमचन्दजी वेदमुथा
351. श्रीमती शान्तिदेवी भूरमलजी सोफाड़िया
352. शा. रमेशकुमारजी भूरमलजी सोफाड़िया
353. शा. मनोहरमलजी गोराजी कवाड़मुथा
354. श्रीमती चौथादेवी भलेचन्दजी वेदमुथा

नाम जपुं नित्य तेरो तेरो...

» प्रभु का नाम निक्षेप भावजिन के साथ अभेदभाव में आलम्बन होने से भाव की तरह पूज्य है। प्रभु के नाम स्मरण से जो रोमांच प्रगटता है, भावोल्लास बढ़ता है, उसका वर्णन शब्दातीत है, कोई समर्थ नहीं है।

» प्रभु के नामरटण से मानो ऐसा लगता है कि साक्षात् परमात्मा हमारे सम्मुख उपस्थित हो, हमारे हृदय सिंहासन पर बिराजने के लिए प्रवेश कर रहे हो, उनसे मधुर संवाद चलता हो, सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक रक्त बूंद में समा गए हो, हृदय की हर धड़कन में, शरीर के रोम-रोम में परमात्मा का वास हो गया हो, सम्पूर्ण शरीरव्यापी हो गये हो, ऐसा दिव्य अनुभव होता है और आगे ऐसी भी अनुभूति होती है कि हमारे सर्व आत्मप्रदेश परमात्मामय बन गये है, परमात्मात्वस्वरूप बन गये हो, उस समय "मैं भी परमात्मा तुल्य हूँ", ऐसी अवर्णनीय अनुभूति होती है। "मैं परमात्मा ही हूँ", ऐसा प्रणिधानयोग प्राप्त होता है, फिर अंदर-बाहर सर्वत्र परमात्मा ही दिखते है, ऐसे तीव्र भावोल्लास से सर्वकल्याण की प्राप्ति होती है।

» नाम निक्षेप आलम्बन रूप है, जो उपदेश की तरह हृदय में भावोल्लास प्रगट करता है। बाह्य निमित्तों के द्वारा निरालंबन अवस्था तक पहुंचा जाता है। अतः शुभ भावों को प्रगट करनेवाले नाम निक्षेप का निरंतर आसेवन करना चाहिये।

» नामस्मरण, नाम जप करनेवाले का जुड़ाव अन्य सारे माध्यमों से हटकर एकमात्र परमात्मा से हो जाता है। जिससे वह परमात्मा में एकाकार हो जाता है। यह प्रभुमयता उन्हें प्रभु बना देती है। जैसे गौतम स्वामी, सुलसाजी, श्रेणिक महाराजा का जीवन प्रभुमय था। लौकिक दृष्टांतों में भी हनुमान, शबरी, राधा आदि प्रसिद्ध है।

आधार : प्रतिमाशतक

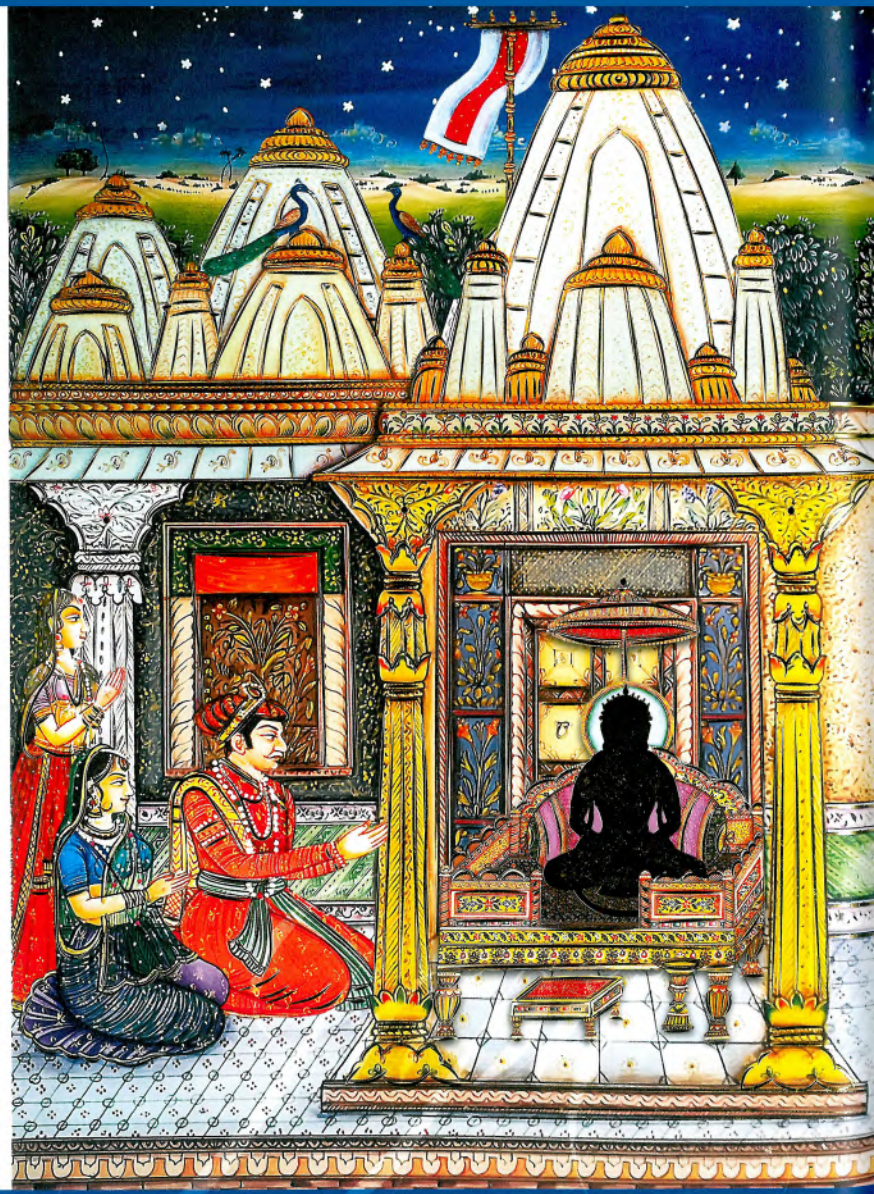

श्री सम्मेतशिखरजी पट्ट के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं मातुश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी के दिव्याशीष से
पुत्र-पुत्रवधू : रमेशकुमार-मंजुदेवी
पौत्र-पौत्रवधू : सुनीलकुमार-शिल्पादेवी, रविकिरणकुमार-मनीषादेवी
पडपोता-पडपोती : दिव्यांश, अरमान, जिनाया
बेटा-पोता-पडपोता शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : हिराणी फाउन्डेशन्स, चेन्नई

श्री गिरनारजी पट्ट के लाभार्थी

मातुश्री पानीदेवी हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मदनलाल-संगीतादेवी, जयंतीलाल-विमलादेवी,
भेरुलाल-मंजुलादेवी, गौतमकुमार-संगीतादेवी,
विक्रम-अरुणा, निखिल-स्नेहा, गौरव-विनीशा, यश-पूजा, पर्व
बेटा-पोता शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मास्टर ग्रुप, चेन्नई

भगवान के भण्डार के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री फैंसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : मोंटूकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रुवराज • पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा
बेटा-पोता-पडपोता शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्रीमती फैंसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई

प्रतिष्ठा याने...

अंजनशलाका किये हुए परमात्मा का
जिन मंदिर में एक ही स्थान पर
हमेशा के लिए स्थिरीकरण...
चौंतीस अतिशयों से मनोज्ञ एवं
पैंतीस गुणयुक्त वाणी से सुशोभित
अरिहंत की भक्ति द्वारा...
तन के आरोग्य का समीकरण...
मन की अशांति का दूरीकरण...
धन-दौलत की लालसा का निराकरण...
परमात्मा की प्रतिष्ठा
सर्व विघ्नों का नाश करती है...
सर्वमंगलों का सर्जन करती है...
सर्व दोषों का विसर्जन करती है...
अतः प्रभुजी की जिन मंदिर में प्रतिष्ठा
भक्तों को अपूर्व परमानन्द अर्पण करती है...
यदि प्रभु-प्रतिमा नीतियुक्त धन से निर्मित हो...
यदि शासनप्रभावक निष्ठ सूरिदेव का सुयोग हो...
यदि प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजकों
एवं दानवीर उदार हो...
यदि संघ के कार्यकर्ता
नम्र तथा सेवाभावी हो...
तो... तो... तो...
इस धरती-तल पर
स्वर्ग सुख का अवतरण होगा...

परमात्मा के मुनीमजी बनने के लाभार्थी

मातुश्री धरोपीदेवी इंद्रमलजी एवं श्रीमती गुलाबीदेवी छगनराजजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. छगनराज, पृथ्वीराज, देवीचन्द, महेन्द्रकुमार, दिनेशकुमार, नरेश, हितेश,
कमलेश, आकाश, रोहित, तनुश, जिनम्, हितांश, ध्वज
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. इन्द्रमलजी छोगाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : वर्ल्डवाइड पेपर कंपनी, चेन्नई - बेंगलुरु

मंगल जाजम के लाभार्थी

मातुश्री भुरीदेवी जेठमलजी जुहाराजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. भंवरलाल-मंजुदेवी
पुत्र-पुत्रवधू : संदीपकुमार-अर्चनादेवी, अंकुशकुमार-सोनमदेवी
पौत्र-पौत्री : आदित्य, अद्विक, रीती, प्रिश्वी
बेटा-पोता **शा. जेठमलजी जुहाराजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : पूनम इलेक्ट्रिकल्स अपलाईन्सेंस, बेंगलुरु

घर-घर तोरण के लाभार्थी

मातुश्री पातीदेवी लालचन्दजी वेदमुथा के दिव्य आशीष से
शा. तगराज, शान्तिलाल, कमलेश, किशन, बिशन,
अंकित, सन्तोष, अक्षिता, ऐशवी, ऐलीना
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. लालचन्दजी गुणेशाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : ब्ल्यू स्टार ईलेक्ट्रिकल्स, गुंटुर - दिल्ली

तिलक द्वारा बहुमान के लाभार्थी

मातुश्री शांतिदेवी कानमलजी खीमाजी वेदमुथा के दिव्याशीष एवं
श्रीमती पुष्पादेवी मोहनलालजी कानमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : ललितकुमार-हेमादेवी, संतोषकुमार-पूजादेवी,
पुत्री-जमाईसा : ममता-अजीतजी मांडोत, नीतु-सचिनजी कटारिया संघवी,
पौत्र-पौत्री : यश, पूरव, आर्यन, जिया
बेटा-पोता-पडपोता शा. कानमलजी खीमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एम. एक्स. ग्रुप, बेंगलुरु - स्टॉकहोम - लंदन

माला द्वारा बहुमान के लाभार्थी

पिताश्री कुन्दनमलजी रिखबचन्दजी एवं
भ्राताश्री नेमिचंदजी कुंदनमलजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से तथा
मातुश्री ओटीदेवी कुंदनमलजी सोफाड़िया के आशीर्वाद से
संघवी शा. मांगीलाल, जीतमल, जयन्तीलाल, जुगराज, राजेन्द्र, महेन्द्र, योगेश,
सुरेश, निखिल, विनोद, खुशाल, जयेश, जॉय, दीपक, रित्विक, हितार्थ, अर्हम्, हर्ष
बेटा-पोता-पड़पोता शा. रिखबचन्दजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री वर्धमान इलेक्ट्रिकल्स, जोधपुर

श्रीफल द्वारा बहुमान के लाभार्थी

मातुश्री पाबुदेवी ओटमलजी गोराजी एवं
भ्राताश्री मदनलालजी ओटमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. जोगराज-पुष्पादेवी, रमेशकुमार-फेन्सीदेवी, जयन्तीलाल-वर्षादेवी,
प्रवीणकुमार-अजुदेवी, किशनकुमार-पिंकीदेवी, बिशनकुमार-रेखादेवी,
कपिलकुमार-चेतनादेवी, आकाशकुमार-रीनादेवी, अक्षितकुमार-सोनलदेवी,
आतिशकुमार-दिव्यादेवी, दर्शन, आर्यन, जश, पर्व, आहान
बेटा-पोता-पडपोता शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्रीमती पाबुदेवी ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, मुंबई - विजयवाड़ा - बेंगलुरु

साफा चुनड़ी द्वारा बहुमान के लाभार्थी

पिताश्री मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी के दिव्याशीष एवं
मातुश्री कमलादेवी मुन्नीलालजी हिराणी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : राजेंद्रकुमार-रेखादेवी, अजयकुमार-संगीतादेवी,
विनोदकुमार-पिंकीदेवी, अशोककुमार-अंजनादेवी, दीपककुमार-सुमनदेवी
पुत्री-जमाईसा : भारतीदेवी मदनलालजी वाणीगोता
पौत्र : साहिल, रेहांश, दक्ष, पर्व • पौत्री : ईशीका, हीनल, दीया, छवि, दीहा, आरवी
बेटा-पोता शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : दीपक ट्रेडर्स, चेन्नई - मुंबई

मोमेंटो द्वारा बहुमान के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री फैंसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : मोंटूकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रुवराज
पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा
बेटा-पोता-पडपोता शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्रीमती फैंसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई - रेवतड़ा

पंच कल्याणक महोत्सव

- विश्व वंदनीय बेटे ने जिनको विश्व वंदनीय बनाया ऐसे परमात्मा के 'माता-पिता'
- बतीस लाख विमानों की मालिकी से भी ज्यादा आनंद जिन्हें प्रभु की चरण सेवा में आता है, ऐसे परमात्मा के 'इन्द्र-इन्द्राणी'
- दुनिया के सबसे 'दौलतमंद' दामाद जिनके आंगन को पावन करेंगें ऐसे पुण्यशाली परमात्मा के 'सास-ससुर'
- तीन जगत के अधिपति एवं अयोध्या नगरी के महाराजा के घर 'मामेरा' से सुशोभित करनेवाले ऐसे परमात्मा के 'मामा-मामी'
- अनामी बनने जा रहे प्रभु का अंतिम नामकरण करने के एक मात्र अधिकारी ऐसे परमात्मा के 'भुआ-भुडोसा'
- कर्मशत्रु को पराजित करने निकले प्रिय भ्राता को सुवर्णकटोरी में कुमकुम द्वारा अंतिम विदाई तिलक करने वाली भाग्यशाली 'बहना'
- परमकृपालु परमात्मा के जन्म की आनंददाई बधाई, महाराजा एवं प्रजा तक पहुंचाने वाली सौभाग्यशाली 'प्रियंवदा दासी'
- नीती-निधान एवं निर्भयता से अलंकृत ऐसे परमात्मा के 'नगर-सेठ'
- जिनकी वाणी मंत्र समान है ऐसे महाराजा के साथ मंत्रणा करने वाले परमात्मा के भाग्यशाली 'महामंत्री'
- ज्योतिष विद्या की कुंजी से चौदह महास्वपन के रहस्यवेता 'राज-ज्योतिष'
- अजातशत्रु राजा के बिना संग्राम के विजयशृंखला प्राप्त करनेवाले सेनानायक 'सर-सेनापति'
- सागर सी संपत्ति के कुशल संचालक ऐसे 'कोषाध्यक्ष'
- आत्म-शौर्य की शीर्ष भेरी बजाकर मोह सेना को जीतने निकले परमात्मा को हित-शिक्षा देनेवाली 'कुल-महत्तरा'
- घणी खम्मा-घणी खम्मा के गगन भेदी नाद से कर्णयुगल को पावन बनाने वाले 'छडीदार'
- सुघोषा घंटनाद से दुनिया की मोहनिद्रा दूर करनेवाले 'हरिणगमैषी देव'

च्यवन कल्याणक

तरसता हूँ

अशुभ अध्यवसाय में से
शुभ अध्यवसाय में
होने वाले च्यवन को।

जन्म कल्याणक

तरसता हूँ

पारमार्थिक सम्यक्त्व की
प्राप्ति रुप सच्चे जन्म को।

दीक्षा कल्याणक

तरसता हूँ

संसार की समाप्ति लाकर दे
वैसी भाव-प्रव्रज्या को।

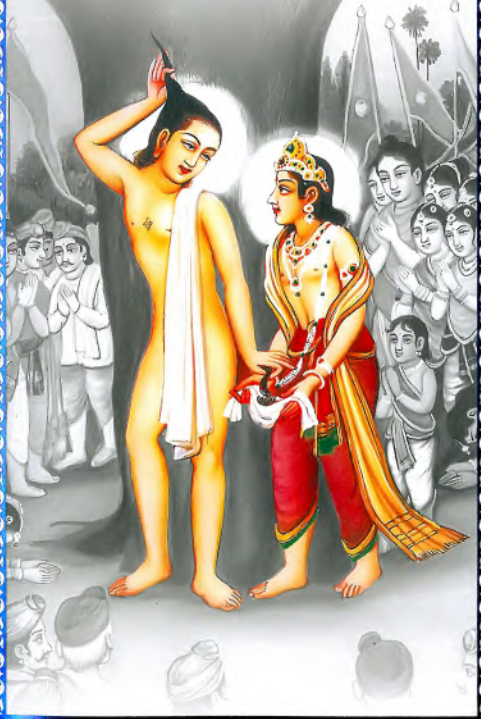

केवलज्ञान कल्याणक

तरसता हूँ

ऐसे आत्मज्ञान को
जो केवलज्ञान का बीज बना रहे।

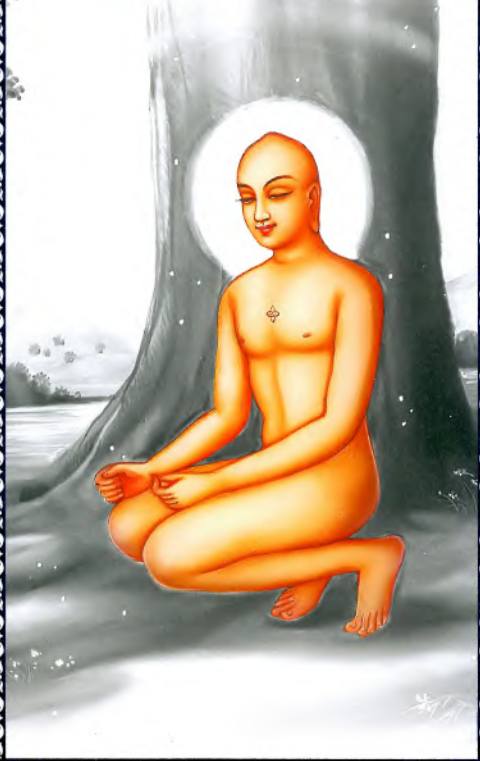

निर्वाण कल्याणक

तरसता हूँ

ऐसी निर्माणयात्रा को
जो निर्वाण की मंजिल तक
पहुँचकर ही रुकती है।

आदि प्रभु परमात्मा का पुण्यवंत परिवार

परमात्मा के माता-पिता बनने के लाभार्थी

पिताश्री घेवरचन्दजी सुखराजजी एवं भ्राताश्री विजयकुमार घेवरचंदजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से
तथा मातुश्री बादामीदेवी घेवरचन्दजी सोफाड़िया के आशीर्वाद से
संघवी शा. राजेन्द्रकुमार-बबीतादेवी, दिनेशकुमार-पिंकीदेवी • पौत्र-पौत्री : खुशी, कियान

बेटा-पोता संघवी शा. घेवरचन्दजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : पवन टेक्स, बेंगलुरु

इन्द्र-इन्द्राणी बनने के लाभार्थी

मातुश्री फतुदेवी भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी एवं बहनश्री बदामीदेवी मोहनलालजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. जयंतीलाल-सोहनदेवी • बहन-बहनोई : श्रीमती लीलादेवी-दिलीपजी गांधी, श्रीमती पुष्पादेवी-नरेन्द्रजी छाजेड़,
श्रीमती अंजुदेवी-संजयकुमारजी संघवी • पुत्री-जमाईसा : सुरभि-हितेशजी भंडारी, सेजल-चिरागजी सालेचा

बेटा-पोता शा. भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : राजेन्द्र नॉवेल्टी, चेन्नई

मामा-मामी बनने के लाभार्थी

मातुश्री टीपुदेवी अमीचंदजी अकाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. जयन्तीलाल-विमलादेवी, विक्रम-अरुणा, पर्व

बेटा-पोता शा. अमीचन्दजी अकाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : मास्टर ग्रुप, चेन्नई

भुआ-भुडोसा बनने के लाभार्थी

मातुश्री सुमटीदेवी जुठमलजी गोमाजी एवं श्री भंवरलालजी जुठमलजी व लक्ष्मीचंदजी जुठमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मदनलाल, सूरजकुमार, राजेशकुमार, गौतमकुमार, धनपतकुमार, प्रकाशकुमार, प्रदीपकुमार,
महावीरकुमार, आकाशकुमार, नमन, हनीक, लक्ष, रिद्धांष, निमित्त

बेटा-पोता-पडपोता शा. जुठमलजी गोमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : सूरजकुमार एंड को., रायचुर

भगवान के सास-ससूर बनने के लाभार्थी

मातुश्री गवरीदेवी भंवरलालजी सागरमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. पारसमल-कमलादेवी, कान्तिलाल-मंजुलादेवी, नरेन्द्रकुमार-रतनदेवी, किरणकुमार-ऊषादेवी,
दिनेशकुमार-टिनादेवी, धर्मेन्द्रकुमार-निकितादेवी, नीता, दीपिका, डिशा, जतिन, रियांश, रुतवी, रिश्वि

बेटा-पोता-पडपोता शा. भंवरलालजी सागरमलजी वेदमुथा परिवार, (मेड़ीवाला), रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : राज-धन एंटरप्राइजेस, चेन्नई

बहन बनने के लाभार्थी

पिताश्री मोडाजी केवलजी के दिव्याशीष से एवं मातुश्री पकुदेवी मोडाजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. मीठालाल-चंपादेवी, राजेश-सेवन्तीदेवी, कमलेश-अंबिकादेवी, शैलेश-भारतीदेवी, विवेक-आयुषीदेवी,
विशाल, तनीष, तमन्ना, मेहक, सानीया, प्रान्जल
बेटा-पोता-पडपोता **शा. मोडाजी केवलजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : राज-विद्या निधि लिमिटेड, अंबरनाथ - ठाणे

प्रियंवदा दासी बनने के लाभार्थी

मातुश्री बदामीदेवी मूलचंदजी केसाजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. उत्तमकुमार, रमेशकुमार, संजयकुमार, प्रवीणकुमार, प्रणय, जयवीर, धैर्य
बेटा-पोता-पडपोता **शा. मूलचंदजी केसाजी कवाडमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : अरिहंत मार्केटिंग, बेंगलुरु

प्रधान मंत्री बनने के लाभार्थी

मातुश्री सकुदेवी अमीचंदजी पोलाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. बाबुलाल, विक्रमकुमार
बेटा-पोता **शा. अमीचन्दजी पोलाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : कोहिनूर ईलेक्ट्रिकल्स, अहमदाबाद

कोषाध्यक्ष (खजांची) बनने के लाभार्थी

पिताश्री जुगराजजी छोगाजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. चंपालाल, गणपतराज, प्रवीणकुमार, सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, आशीषकुमार,
देवकिरण, नमन, श्रेयांस, हेमन्त, यातीश, कृपा
बेटा-पोता **शा. जुगराजजी छोगाजी कवाड़मुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : आशीष एंटरप्राईजेस, चेन्नई

नगरसेठ बनने के लाभार्थी

पिताश्री उम्मेदमलजी मगाजी लुंकड़ के दिव्याशीष से
शा. हुकमीचंद (हकजी), मुकेशकुमार, विनोदकुमार, पर्वकुमार
बेटा-पोता **शा. उम्मेदमलजी मगाजी लुंकड़ परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : कॉन्सेप्ट इंडिया, अहमदाबाद - कोयम्बतुर

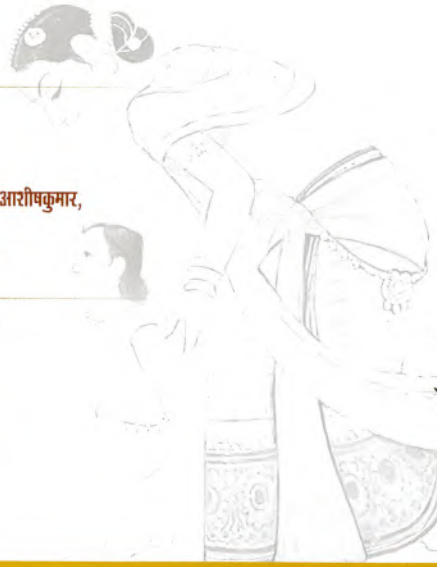

सजेगा
विनीता
नगरी का
राजदरबार

सेनापति बनने के लाभार्थी

मातुश्री अमृतीदेवी हंजारीमलजी एवं वीजुदेवी भूरमलजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से
शा. कांतिलाल-लक्ष्मीदेवी, ऋषभ-आयुषी, कियारा
बेटा-पोता शा. हंजारीमलजी भूरमलजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एम. कांतिलाल एंड को., बैंगलुरु

कुल महत्तरा बनने के लाभार्थी

पिताश्री जुटमलजी सुखराजजी सोफाड़िया के दिव्याशीष एवं मातुश्री मूलीदेवी जुटमलजी सोफाड़िया के आशीर्वाद से
शा. कांतिलाल, उत्तमचंद, महेन्द्रकुमार, विक्रमकुमार, विशाल, मोक्ष, ईशान, आगम
बेटा-पोता-पड़पोता शा. जुटमलजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : पर्फेक्ट फेब्रिक्स, बैंगलुरु

हरिणगमैषी देव बनने के लाभार्थी

मातुश्री ढेलीदेवी फूलचंदजी चुनाजी लुंकड के दिव्याशीष से
शा. चंदनमल-पुष्पादेवी, जीतमल-चंद्रादेवी, बाबुलाल-पुष्पादेवी, कमलेश-रेखादेवी, सुरेश-कवितादेवी, विनय-रेखादेवी, किरण-शीतलदेवी, महावीर-पिंकीदेवी, योगेश-अलिशादेवी, भरत-कोमलदेवी, कीर्ति-भाविकादेवी, दीपक, अक्षम, नेहल, रिद्धि, खुश, ज्ञाना, पर्व, आरवी, आरव, तीर्था, क्षमा, मिवान, रिवा, त्रिशा
बेटा-पोता-पड़पोता शा. फूलचंदजी चुनाजी लुकड परिवार,, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एफ. चंदनमल जैन, चेन्नई

राज ज्योतिष बनने के लाभार्थी

मातुश्री पाबुदेवी हरकचन्दजी खुबाजी एवं भ्राताश्री दूधमलजी हरकचन्दजी मांडोत के दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, नेमीचंद, नरेन्द्रकुमार, वैभवकुमार
बेटा-पोता शा. हरकचन्दजी खुबाजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री मांडोत ज्वेलर्स, चेन्नई

राजपंडित (अध्यापक) बनने के लाभार्थी

मातुश्री मोहनदेवी मनोहरमलजी मुलतानमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. धीरजकुमार, निर्मलकुमार, कीर्तिकुमार, रिषभ, रोनक
बेटा-पोता-पड़पोता शा. मनोहरमलजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री नवकार मेटल, चेन्नई

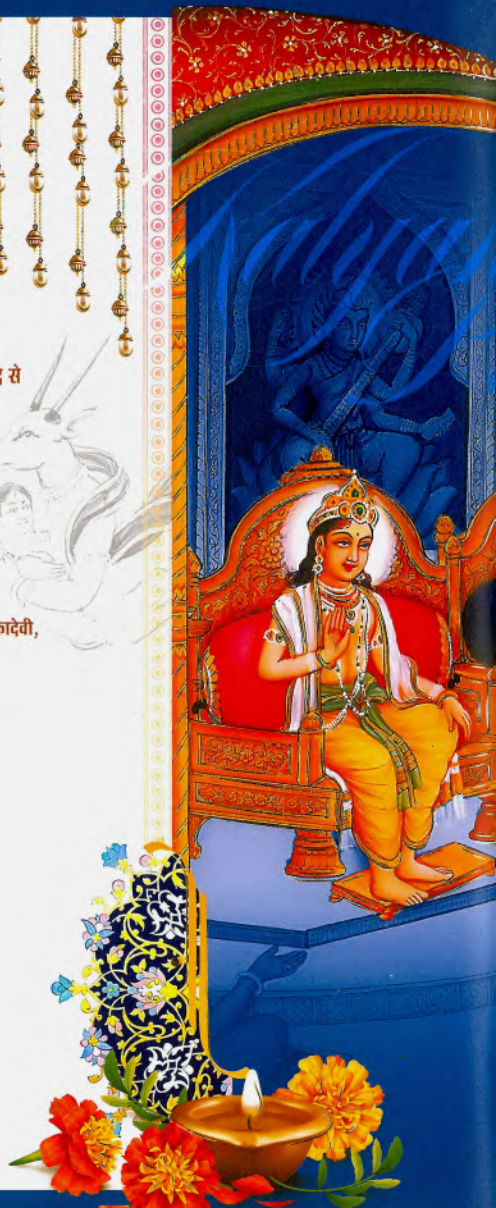

छड़ीदार 01 बनने के लाभार्थी

मातुश्री ढेलीदेवी फूलचंदजी चुनाजी लुंकड़ के दिव्याशीष से
शा. चंदनमल-पुष्पादेवी, जीतमल-चंद्रादेवी, बाबुलाल-पुष्पादेवी, कमलेश-रेखादेवी, विनय-रेखादेवी,
सूरेश-कवितादेवी, किरण-शीतलदेवी, महावीर-पिंकीदेवी, योगेश-अलिशादेवी, भरत-कोमलदेवी, कीर्ति-भाविकादेवी,
दीपक, अक्षम, नेहल, रिद्धि, खुश, ज्ञाना, पर्व, आरवी, आरव, तीर्था, क्षमा, मीवान, रिवा, त्रिशा
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. फूलचंदजी चुनाजी लुंकड़ परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : विनय इंटरलाईनिंग्स, चेन्नई

छड़ीदार 02 बनने के लाभार्थी

मातुश्री जमनादेवी छगनराजजी हंजारीमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. कुयालाल-रमकुदेवी, वीरचंद-छायादेवी, मदनलाल-अंजनादेवी, हितेशकुमार-प्रीतिदेवी, नरेशकुमार-दिव्यादेवी,
ललितकुमार-अरुणादेवी, रविकुमार-सारिकादेवी • पौत्र-पौत्री : विधान, लक्ष, ऋषभ, मनन, भविक, अमीष, नीलम, मान्या, महक
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. छगनराजजी हंजारीमलजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. छगनराजजी हंजारीमलजी वेदमुथा, रेवतड़ा

अच्युतपति इन्द्र बनने के लाभार्थी

पिताश्री उमेदाजी मांडोत के दिव्याशीष से
शा. चैनमल-रत्नादेवी, भरतकुमार-ममतादेवी, विजयकुमार-स्नेहादेवी, रोहितकुमार-अल्फादेवी,
नयन, दियान, वृष्टि, भवित
बेटा-पोता **शा. चैनमलजी उमेदाजी मांडोत परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : रतन इलेक्ट्रिकल एजेंसी, चेन्नई

ईशान इन्द्र बनने के लाभार्थी

पिताश्री रमेशकुमारजी दुरगचंदजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. खुशालचन्द, उदयचन्द, महावीर, नरेश, नितेश, प्रियेश, पक्षाल, दीक्षित, कुनाल, यश, पर्व, हितांश, पवित
बेटा-पोता **शा. दुरगचन्दजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : कावेरी ट्रेडर्स, दावणगेरे (कर्नाटक)

कुबेरदेव (बत्तीसकोडी कनकमणीमाणेक) बनने के लाभार्थी

मातुश्री सुखीदेवी सोकलचंदजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. रमेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, कांतिलाल, हितेन्द्र, दर्शन, प्रतीक, जिनेन्द्र, राहुल, मेहुल, पीयुष, पक्षाल, विशेष, निवाण
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. सोकलचंदजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. सोकलचंदजी मुलतानमलजी वेदमुथा, चेन्नई

पोष सुदी 12
JANUARY
22
2024
MONDAY

आदिजिन प्रतिष्ठोत्सव

TIME
8:00 AM
ONWARDS

भव्यातिभव्य नगर प्रवेश शोभा यात्रा-सामैया

प्रभुजी की नूतन प्रतिमा, पूज्यपाद आचार्य भगवंतों एवं
साधु-साध्वी भगवंतों का भव्यातिभव्य नगर प्रवेश शोभा यात्रा-सामैया

TIME
11:00 AM
ONWARDS

अयोध्या नगरी का उद्घाटन

दोनों आचार्यों के मंगल आशीर्वाद एवं वासक्षेप से
श्रीसंघ द्वारा उद्घाटन किया जायेगा।
प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा

भरत चक्रवर्ती नगरी (भोजन खंड) के लाभार्थी

मातुश्री सुआदेवी सुमेरमलजी एवं भ्राताश्री जीतमलजी सुमेरमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
तथा श्रीमती पानीदेवी जीतमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. अशोककुमार-संजुदेवी, ललितकुमार-रंगीलादेवी, चिन्टुकुमार-रेखादेवी, अर्पणकुमार-श्रेयादेवी, पनव, अर्हम्
वेटा-पोता-पडपोता **शा. सुमेरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : महेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी, बेंगलुरु

विनीता नगरी (कल्याणक मंडप) के लाभार्थी

पिताश्री मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष एवं मातुश्री कमलादेवी मुन्नीलालजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : राजेंद्रकुमार-रेखादेवी, अजयकुमार-संगीतादेवी, विनोदकुमार-पिंकीदेवी, अशोककुमार-अंजनादेवी,
दीपककुमार-सुमनदेवी • पौत्र : साहिल, रेहांश, दक्ष, पर्व • पौत्री : ईशीका, हीनल, दीया, छवि, दीहा, आरवी
वेटा-पोता-पडपोता **शा. मुन्नीलालजी कुन्दमलजी हिराणी परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : दीपक ट्रेडर्स, चेन्नई - मुंबई

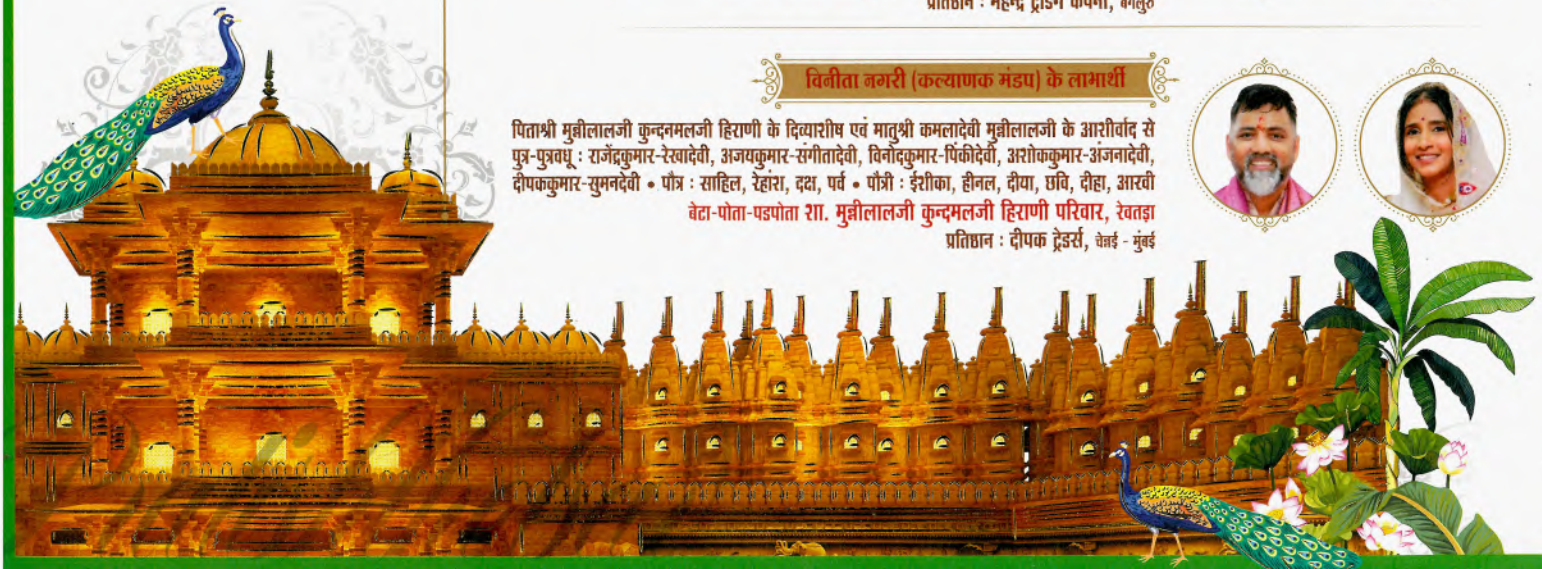

कुंभ स्थापना के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं मातुश्री सुमटीदेवी तगराजजी हिराणी के दिव्याशिष से
शा. चंपालाल, फतेहराज, कान्तिलाल, प्रकाशचंद, गौतमचंद, राजेन्द्रकुमार,
महावीर, संदीप, प्रदीप, राकेश, दिलीप, धीरज, चेतन, अमित, आकाश, अमन, जनित, मनित
बेटा-पोता-पडपोता शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : भावना कॉर्प., चेन्नई

दीपक स्थापना के लाभार्थी

पिताश्री माणकचंदजी जुहाराजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. खुशालचंद, नरेशकुमार, नितेशकुमार, यश, हितांश
बेटा-पोता शा. माणकचंदजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : खुशाल टेक्स, के. जी. एफ

ज्वारा रोपण के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
मातुश्री श्रीमती सुमटीदेवी तगराजजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. चम्पालाल, फतेहराज, कान्तिलाल, प्रकाशचन्द, गौतमचन्द, राजेन्द्रकुमार, सन्दीप, प्रदीप, दिलीप, ध्रुव, नकुल, समर, हिरव
बेटा-पोता-पडपोता शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : फैबकॉट इंडिया क्लोथिंग एल. एल. पी, नई दिल्ली

वेदिका पूजन के लाभार्थी

मातुश्री बदामीदेवी सॉकलचंदजी एवं भ्राताश्री कानराजजी सॉकलचंदजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. बाबुलाल, अशोककुमार, मदनलाल, महावीरचन्द, निर्मलकुमार, संजय, नरेश. के, नरेश. बी, यशवन्त, राकेश,
अभिषेक, रितिक, आयुष, मन्नत, प्रिंस, वश, सार्थक, हियान्श, निवान, अविक
बेटा-पोता-पडपोता शा. सॉकलचंदजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. कानराज सॉकलचंद, फिरोझाबाद - बेंगलुरु - हुबली

प.पू.आ. श्री लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.आ. श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की पूजा-अंगरचना-प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री शा. लखमीचंदजी प्रतापजी एवं मिश्रीमलजी प्रतापजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. भीमराज, शांतिलाल, संजय, राहुल, सागर, धीरज, डॉ. संयम, हितेन्द्र, यानिष, वीतराग
बेटा-पोता शा. प्रतापजी रामाजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : भीमराज लखमीचंद ओसवाल, जत (महाराष्ट्र)

हे देव!
आपकी अंजन-
प्रतिष्ठा हमारे हृदय में
आपकी आज्ञा की
प्रतिष्ठा
करनेवाली हो...

TIME
8:00 AM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

पोष सुदी 13

JANUARY

23

2024

TUESDAY

परमार्थदायक प्रथम दिवस

नवग्रह पाटला पूजन के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं मातुश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी के दिव्याशीष से
पुत्र-पुत्रवधू : रमेशकुमार-मंजुदेवी • पौत्र-पौत्रवधू : सुनीलकुमार-शिल्पादेवी, रविकिरणकुमार-मनीषादेवी
पड़पोता-पड़पोती : दिव्यांश, अरमान, जिनाया
बेटा-पोता-पड़पोता शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : हिराणी फाउन्डेशन्स, चेन्नई

अष्ट मंगल पाटला पूजन के लाभार्थी

मातुश्री पाबुदेवी ओटमलजी जेठाजी, श्री गणपतलालजी ओटमलजी
एवं श्रीमती पुष्पादेवी वसंतकुमारजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
संघवी शा. मदनलाल, वसंतकुमार, चंपालाल, दिनेशकुमार, मुकेशकुमार, सुरेशकुमार, जोगेशकुमार,
गुलाब, दीपक, आकाश, प्रफुल, रिषभ, रोहान, धीर
बेटा-पोता शा. ओटमलजी जेठाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : डिंपल होजरी सेंटर, बेंगलुरु

दश दिकपाल पूजन के लाभार्थी

पिताश्री भंवरलालजी तेजराजजी वेदमुथा के दिव्याशीष
एवं मातुश्री शांतिबाई भंवरलालजी के आशीर्वाद से
शा. जीतमल, हिराचन्द, दिनेशकुमार, ललितकुमार,
महेन्द्र, विक्रम, संजय, श्रीपाल, चेतन, अंकुश, दिव्येश, अर्णव, आगम, विरांश
बेटा-पोता शा. भंवरलालजी तेजराजजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : जलगांव - सूरत - बेंगलुरु

जल यात्रा के लाभार्थी

पिताश्री भंवरलालजी मुलतानमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष
एवं मातुश्री पानीदेवी भंवरलालजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. सुरेश-रेखादेवी, कमलेश-संगीतादेवी, साहिल-पायलदेवी, ऋषभ-मनीषादेवी
बेटा-पोता शा. भंवरलालजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : महावीर मेटल्स, चेन्नई

श्री 108 पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजन के लाभार्थी

मातुश्री बदामीदेवी सॉकलचन्दजी चुन्नीलालजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. प्रकाशचन्द, अमृतलाल, विक्रमकुमार, पंकजकुमार,
रिषभकुमार, प्रणवकुमार, रिया, हिनल, पलक
बेटा-पोता शा. सॉकलचन्दजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : जितेन्द्र इन्टरप्राइजेस, चेन्नई

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री जडावीदेवी मीठालालजी उम्मेदाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. कुयालाल, कांतिलाल, प्रकाशचंद, उत्तम, रजीत,
राहुल, सुरेंद्र, आकाश, चेतन, विशाल, दर्शन, हिरेन
बेटा-पोता-पडपोता शा. मीठालालजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : प्रिन्स इलेक्ट्रिकल्स, कोयम्बतुर

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री सुमेरमलजी गुणेशाजी के दिव्याशीष से एवं
मातुश्री शांतिदेवी सुमेरमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. जयंतीलाल, सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, विमलकुमार, नरेश, दर्शन, विपुल, मानव, मानविक
बेटा-पोता शा. सुमेरमलजी गुणेशाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री धनलक्ष्मी बैंगिल्स स्टोर, फिरोजाबाद (हुबली)

जिन पूजा

प्रभु के विशिष्ट शक्ति केन्द्रों के पावन स्पर्श द्वारा की गई अंग पूजा जीव को प्रभु के साथ सामिप्य-योग में ले जाती है। नैवेद्य आदि के अर्पण से की गई अग्र-पूजा प्रभु के प्रति समर्पण-योग का कारण बनती है। उत्तम द्रव्यों से की गई द्रव्य पूजा यह स्तवन-गुणगान आदि द्वारा होने वाली भाव पूजा में उत्कृष्टता प्रकटा कर प्रभु के साथ एकत्व-योग में ले जाती है। यही एकत्व-योग आत्मा को अंततः सर्व जीवों के लिए परम अभयदान रूप मोक्ष तक ले जाता है।

पोष सुदी 13
JANUARY
23
2024
TUESDAY

परमार्थदायक प्रथम दिवस

प्रतिष्ठा
याने श्रद्धा की स्थिरता

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातुश्री मंवरीदेवी धेवरचन्दजी एवं भ्राताश्री महावीरकुमार धेवरचन्दजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. रमेशकुमार, मदनलाल, सुरेशकुमार, संजयकुमार, अंकित, राहुल, आशिष,
आकाश. आर, आकाश. एस, चिराग, युवन, तक्श, रियांश, कृतिक
बेटा-पोता-पडपोता शा. धेवरचन्दजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मदन मार्केटिंग, मदुरै

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

पिताश्री भलेचंदजी जुहारमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से एवं
मातुश्री चौथाबाई भलेचंदजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : शा. रतनलाल-गीतादेवी, कमलराज-संतोषदेवी
पौत्र-पौत्री : संतोष, मोहित, खुशी, सचिनराज, ख्याति
पुत्री-जमाई : स्व. राजुबाई-बाबुलालजी श्रीश्रीश्रीमाल अगन गोत्र, कंचनदेवी-अमनजी गाँधीमुथा
बेटा-पोता शा. भलेचंदजी जुहारमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. रतनलाल भलेचंद पॉन ब्रोकर्स, कोलार

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री प्यारीदेवी रोषमलजी अकाजी, श्रीमती शान्तिदेवी मांगीलालजी
एवं श्रीमती शान्तिदेवी शंकरलालजी वेदमुथा की दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, शंकरलाल, नेमिचंद, दिनेश, संजय, संतोष, कमलेश,
प्रतीक, भावेश, लाभेष, ध्रुव, उर्वेश, हर्ष, लक्ष, पक्षाल
बेटा-पोता शा. रोषमलजी अकाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. रोषमलजी अकाजी वेदमुथा, अहमदनगर - धुलियाँ - औरंगाबाद - अहमदाबाद

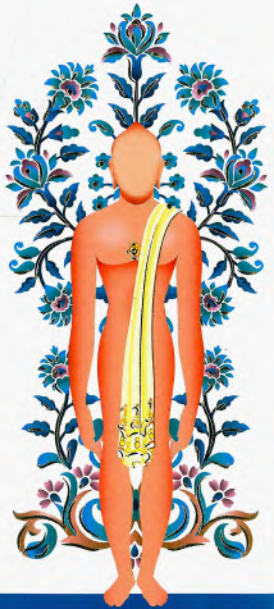

पोष सुदी 14

JANUARY

24

2024

WEDNESDAY

दिव्यतादायक द्वितीय दिवस

श्री आदिनाथ प्रभु का पूर्वभव

श्री आदिनाथ भगवान के पूर्व 12 भवों का अद्भुत अलौकिक सुंदर वर्णन

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

श्री सिद्धचक्र पाटला पूजन के लाभार्थी

मातुश्री भदीदेवी पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा एवं भ्राताश्री मोहनलालजी पुखराजजी कवाड़मुथा
व बहन श्रीमती विमलादेवी के दिव्याशीष से
शा. भंवरलाल, छगनराज, पारसमल, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार, विक्रमकुमार
बेटा-पोता **शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : डायमंड सेल्स, चेन्नई

वीस स्थानक पूजन के लाभार्थी

मातुश्री ढेपीदेवी वस्तीमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, चम्पालाल, कान्तिलाल, सुमित, विक्रम, राजु, संजय, अभिषेक, विधान, नियम, प्रीतम
बेटा-पोता-पडपोता **शा. वस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : संजय ईलेक्ट्रिकल्स, विजयवाड़ा

श्री नंदावर्त पाटला पूजन के लाभार्थी

मातुश्री भंवरीदेवी गोडीदासजी के दिव्याशीष से
शा. रतनचंद-मोवनदेवी, मनोरमल-लीलाबाई, गौतमचंद-लीलाबाई, आशिष-संतोषदेवी,
राजु, जीतु, पिंटु, आशीष, रवि, विहान, हितांरा
बेटा-पोता **शा. गोडीदासजी हजारीमलजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : भेरुलाल हजारीमल, के. जी. एफ.

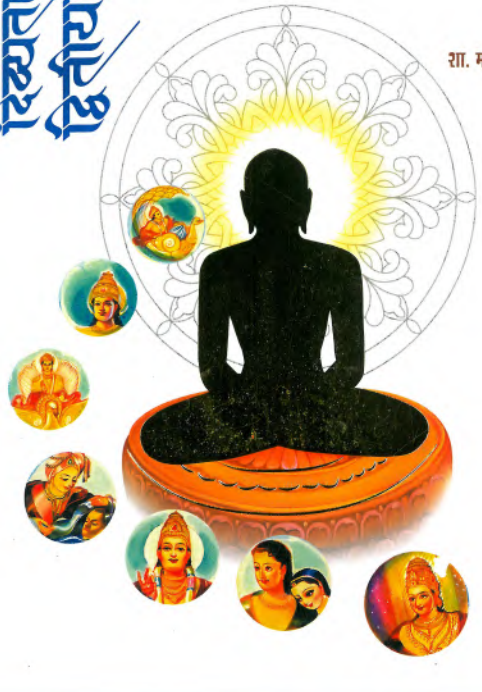

प्रतिष्ठा याने
भक्ति
की
शरणता

पोष सुदी 14

JANUARY

24

2024

WEDNESDAY

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

दिव्यतारायक द्वितीय दिवस

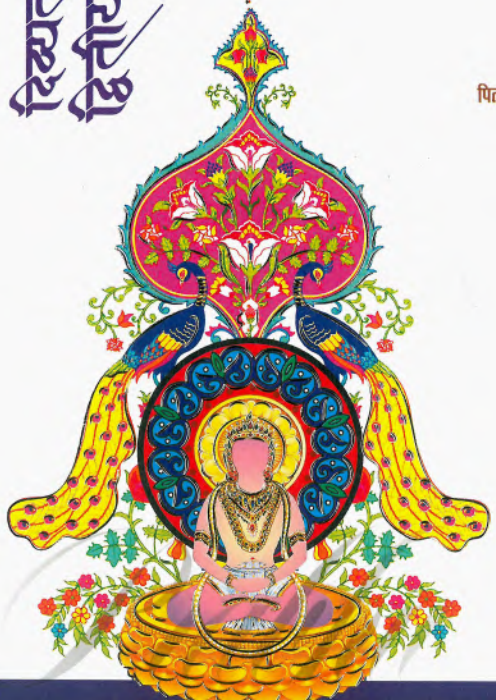

श्री आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा के लाभार्थी

पिताश्री हस्तीमलजी खुमाजी के दिव्याशीष एवं मातुश्री हुलीबाई हस्तीमलजी हिराणी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : शा. मदनलाल-कंचनदेवी, महावीरकुमार-मीनादेवी, गौतमकुमार-संगीतादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : अविनाश-नीलम, अभिषेक, निखिल • पौत्री : पूजा, नेहा • पडपौत्री : सृष्टि, वृद्धि
बेटा-पोता शा. हस्तीमलजी खुमाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : गौतम फेन्सी स्टोर, तिरुनेलवेली

अंगरचना के लाभार्थी

पिताश्री पारसमलजी मिश्रीमलजी वेदमुथा एवं भ्राताश्री कालुचंदजी मिश्रीमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष
तथा श्रीमती जडावीदेवी पारसमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. अशोककुमार, मुकेशकुमार, दिवेश, मीत
बेटा-पोता शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शांति अप्लाईन्सेन्स, मैसुर

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

मातुश्री रोहिणीदेवी मनोहरमलजी के दिव्याशीष से
एवं पिताश्री मनोहरमलजी गोराजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. ललितकुमार, प्रकाशकुमार, श्रेयांसकुमार, ऋषभकुमार, गिरीशकुमार, निकिता, रोशनी
बेटा-पोता शा. मनोहरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. फौजाजी मनोहरमल, चेन्नई

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

पिताश्री संघवी सोकलचन्दजी इन्दरमलजी के दिव्याशीष
एवं मातुश्री ढेलीदेवी सोकलचन्दजी इन्दरमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : कानराज-कमलादेवी, अशोककुमार-ललितादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : अरविंदकुमार-रीनादेवी, चन्द्रकांत-खुशबुदेवी, अखिल-सेजलदेवी
पौत्री : सलोनी • पडपौत्र-पडपौत्री : नीवकुमार, ऐशा, अयाना
बेटा-पोता-पडपोता संघवी शा. सोकलचंदजी इंदरमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. इन्दरमल सुखराज एण्ड को., बेंगलुरु

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं
मातुश्री श्रीमती सुमटीदेवी तगराजजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. चम्पालाल, फतेहराज, कान्तिलाल, प्रकाशचन्द, गौतमचन्द, राजेन्द्रकुमार, महावीर, सन्दीप, प्रदीप, राकेश, दिलीप, धीरज, चेतन, अमित, आकाश, अमन, मीत, ध्रुव, नकुल, जनित, समर, भव्य, मनित, हिरव, धीर
बेटा-पोता-पडपोता शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी, दिल्ली - चेन्नई - बेंगलुरु

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

पूज्य सुमेरमलजी सुखराजजी एवं सुरेशकुमार सुमेरमलजी के दिव्याशीष से
संघवी शा. कपुरचंद, कीर्तिकुमार, प्रवीणकुमार, महेन्द्रकुमार, मुकेशकुमार, अमितकुमार, आकाशकुमार, यश, यक्षित, हर्ष, युग, हित, तान्या, यारिका, दीक्षिता, छवि, दिश्री
बेटा-पोता-पडपोता शा. सुखराजजी भगाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : संघवी होजेरी कॉर्पोरेशन, बेंगलुरु

,प्रभु के
वियोग में भी
भक्तों को प्रभु का
साक्षात् मिलन
करवाने वाले
परम पुष्ट
आलंबन का नाम है
जिन प्रतिमा।

पोष सुदी पूर्णिमा

JANUARY

25

2024

THURSDAY

तारकपदायक तृतीय दिवस

१४ स्वप्न दर्शन

राज ज्योतिषी का आगमन

स्वप्नों का फलादेश

च्यवन कल्याणक विधान

CHYAVAN

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

TIME
2:00 PM
ONWARDS
•
VENUE
ARADHANA
BHAVAN

श्री सीमंधर स्वामी पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी

पिताश्री प्रेमचंदजी छोगाजी वेदमुथा के दिव्याशीष एवं मातुश्री पुष्पादेवी प्रेमचंदजी छोगाजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : पुष्पादेवी-दिलीपकुमार, मंजुदेवी-सुरेशकुमार, जयादेवी-अशोककुमार कंचनदेवी-संजयकुमार,
कवितादेवी-मनोजकुमार, परिनादेवी-विक्रमकुमार सोनलदेवी-दीपककुमार, मोनादेवी-अभयकुमार,
गिरीश, मोहित, नीरव, माहिर • पुत्री-जमाई : पद्मादेवी-अशोकजी कांकरिया, प्रभादेवी-दिनेशजी क्षत्रियवोहरा
बेटा-पोता-पडपोता शा. प्रेमचंदजी छोगाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री भारत स्टील्स, चेन्नई

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री सुखीदेवी दुरगचंदजी जुहाराजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. खुशालचन्द, उदयचन्द, महावीर, नरेश, नितेश, प्रियेश, पक्षाल, दिक्षित, कुनाल, यश, पर्व, हितांश, पवित
बेटा-पोता शा. दुरगचन्दजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. जुहारमल खुशालचन्द, के. जी. एफ

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री दीपचंदजी प्रतापजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. रतनचंद, मनोहरमल, गौतमचंद, राजेन्द्रकुमार, जितेन्द्रकुमार, पिन्टुकुमार, आशीष, रवि, हितांश
बेटा-पोता शा. दीपचंदजी प्रतापजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एम. जे. एजेन्सीस, सेलम

पोष सुदी पूर्णिमा
JANUARY
25
2024
THURSDAY

तारकपदायक तृतीय दिवस

हमारी छाया,
हमारा छत्र
और
हमारा उजाला
हे प्रभु!
आप ही बने रहे...

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

पिताश्री सुबटमलजी चुन्नीलालजी हिराणी के दिव्याशीष से एवं मातुश्री पवनीदेवी सुबटमलजी हिराणी के आशीर्वाद से
शा. भेरुलाल, राहुल, विहान
बेटा-पोता-पड़पोता शा. सुबटमलजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. मुलतानमल सोकलचंद जैन, चेन्नई

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

हुबली मंडण श्री शांतिनाथ प्रभु की परम कृपा से मातुश्री सुमतीदेवी हरकचंदजी के दिव्याशिष से
शा. जुगराजजी-राजुलदेवी, अचलचंद-लीलादेवी • पुत्र-पुत्रवधू : ललित-संगीतादेवी, श्रीपाल-कुसुमदेवी,
मनोज-ममतादेवी, विक्रम-टीनादेवी • पौत्र-पौत्री : यश, यशिका, युक्ति, टीशा, ध्वनि, पलक, मयंक,
सृष्टि, युग, ईशानी, रौनक • पुत्री-जमाई : मोहनबाई-दलीचंदजी संघवी, अर्चना-संदीपजी वेदमुथा
बेटा-पोता-पड़पोता शा. हरकचंदजी होसाजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : पी. वी. ग्रुप ऑफ कंपनीस, हुबली

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री पातीदेवी भारतमलजी भगाजी के दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, गणपतचन्द, रमेशकुमार, कैलाशकुमार, ललितकुमार, मुकेशकुमार, निर्मलकुमार, संजयकुमार,
प्रवीणकुमार, अरविंदकुमार जितेशकुमार, दिनेशकुमार, राजेशकुमार, विक्रमकुमार,
युवराज, अक्षय, आयुष, संयम, समकित, सम्यक्, लगन, अद्विक, अर्हम्, संभव, भव्य, जैनव, प्रियांश
बेटा-पोता-पड़पोता शा. भारतमलजी भगाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. सुमेरमल मांगीलाल, बेंगलुरु

माघ वदि 1

JANUARY

26

2024

FRIDAY

चारित्रायक
पर्युषण पर्व

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

जन्म कल्याणक विधान

JANMA

५६ दिक्कुमारी महोत्सव

६४ इंद्रों द्वारा प्रभु का मेरुशिखर पर अभिषेक

माघ वदि 1
JANUARY
26
2024
FRIDAY

चारित्रदायक चतुर्थ दिवस

अट्ठारह अभिषेक विधान (भगवान जन्म कल्याणक दिवस) के लाभार्थी

मातुश्री भदीदेवी पुखराजजी सोनाजी एवं भ्राताश्री मोहनलालजी पुखराजजी कवाड़मुथा
व बहन श्रीमती विमलादेवी के दिव्याशीष से
शा. मंवरलाल, छगनराज, पारसमल, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार, विक्रमकुमार
बेटा-पोता शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : डायमंड सेल्स, चेन्नई

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

अट्ठारह अभिषेक पूजन के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं मातुश्री ककुदेवी हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी के दिव्य आशीष से
शा. देवीचंद, कांतिलाल, आशीषकुमार, राहुलकुमार
बेटा-पोता शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : भंवरलाल एजेंसीज, चेन्नई

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
PRABHU
MANDIRJI

अंगरचना के लाभार्थी

श्रीमती सूरजदेवी सरदारमलजी गोराजी के दिव्याशीष से
शा. मनोहरमलजी, सरदारमलजी सुरेश, महेन्द्र, ललित, अशोक, महेन्द्र, प्रकाश,
अरविंद, प्रकाश, राजेश, प्रवीण, भरत, संदीप, उमेश, दर्शील, मान्य, देवांश
बेटा-पोता शा. सरदारमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. सरदारमलजी गोराजी वेदमुथा, चेन्नई

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री सुमेरमलजी रिखबचंदजी मांडोत के दिव्याशीष
एवं मातुश्री कमलादेवी सुमेरमलजी मांडोत के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : नरेशकुमार-ममतादेवी, गौतमकुमार-पिंकीदेवी
पौत्र-पौत्री : त्रिशा, जैनम, जिया, तक्ष
बेटा-पोता शा. सुमेरमलजी रिखबचंदजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : केसरिया टेप्स, चेन्नई

प्रतिष्ठा याने समर्पण की शुद्धता

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

पिताश्री इन्दरमलजी हिमताजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. चंपालाल, गणपतराज, प्रवीणकुमार, सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, आशीषकुमार,
देवकिरण, नमन, श्रेयांस, हेमन्त, यातिश
बेटा-पोता शा. इन्दरमलजी हिमताजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मुथा एंड मुथा, चेन्नई

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री प्यारीदेवी कुन्दनमलजी तेजराजजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. पृथ्वीराज, भागचन्द, कांतिलाल, जयन्तीलाल, रणजीतकुमार, देवेन्द्रकुमार, सुरेशकुमार, मदनलाल,
योगेशकुमार, दिलीपकुमार, मनोजकुमार, विकास, राहुल, अंकुश, मिहिर, आरिष,
मन, आदित्य, संयम, मोक्ष, समर, रिषभ, दक्ष, अर्हम्, रीवान
बेटा-पोता-पड़पोता शा. कुन्दनमलजी तेजराजजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. कुन्दनमलजी तेजराजजी, जलगाँव

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं मातुश्री कंकुदेवी हस्तीमलजी छोगाजी,
भ्राताश्री-भाभीश्री शांतिदेवी भंवरलालजी व भेरूलालजी हस्तीमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. देवीचंद, कांतिलाल, विनोदकुमार, मुकेशकुमार, आशीषकुमार, राहुलकुमार, दिवेशकुमार, धीरकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री स्टील, चेन्नई

तुज नाम सूण्युं जब काने...

- प्रभु के नाम स्मरण से 'प्रभु हमारे साथ ही हैं', ऐसा अनुभव होता है।
- साक्षात् परमात्मा के दर्शन से जो शुभ भाव प्रगट होते है, वैसे ही शुभ भाव नाम स्मरण से भी प्रगट होते है।
- परमात्मा के नाम स्मरण से जब समग्र अस्तित्व रंग जाता है, तब अस्तित्व में रहे राग-द्वेष, अहंकार शिथिल बन जाते है।
- राग-द्वेष की शिथिलता जीव को निर्मल बनाकर शुद्ध दशा में ले जाती है, वही शुद्ध दशा में अपने निर्मल गुणों की अनुभूति होती है, अभेदानुभूति होती है, इशानुभूति होती है।
- प्रभु का नाम रटण अस्तित्व के स्तर पर जब छा जाता है, तब प्रभु ही रहते है, भक्त गायब हो जाता है, प्रभु को पूर्ण समर्पित हो जाता है।
- जैसे बेहोश व्यक्ति जल छांटने से होश में आता है, वैसे मोहरूपी बेहोशी को दूर करने के लिए प्रभु का नाम जल समान है।
- परमात्मा के नाम गुणनिष्पन्न होते है। जैसे शक्कर बोलते ही मीठास, नींबु बोलते ही खटाश स्मृतिपथ पर आ जाती है। श्री स्थूलिभद्रजी बोलते ही ब्रह्मचर्य, गौतमस्वामी बोलते ही समर्पण स्मृतिपथ पर आ जाता है। वैसे गुणसमुद्र का परमात्मा का नामस्मरण करते ही उनके गुण स्मृतिपथ पर आ जाते है। जैसे ऋषभदेव बोलते ही उनके कल्याणक, 400 उपवास की महातपस्या, तीर्थस्थापना, धर्मदेशनादि का स्मरण हो ही जाता है। नाम में तो जादु होता है, 24 तीर्थंकरों के नाम जिसमें है ऐसे लोगस्स सूत्र का दूसरा नाम **नामस्तव** है। नाम बोलते ही प्रभु की मुखाकृति, समवसरण, निर्लेपता आदि स्मृतिपथ पर आ जाते है।

माघ वदि 2

JANUARY

27

2024

SATURDAY

पवित्रायक
पंचम दिवस

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

जन्म बधाई

JANMA

- प्रियंवदा द्वारा जन्म बधाई
- नामकरण
- भुआ-भुडोसा का आगमन
- पाठशाला गमन

श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा के लाभार्थी

मातुश्री भदीदेवी पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा एवं भ्राताश्री मोहनलालजी पुखराजजी कवाड़मुथा
व बहन श्रीमती विमलादेवी के दिव्याशीष से
शा. भंवरलाल, छगनराज, पारसमल, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार, विक्रमकुमार
बेटा-पोता शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : डायमंड सेल्स, चेन्नई

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

जिस समय अपने
मन मन्दिर में
परमात्मा की स्थापना
होती है, उस समय
परमात्मा के प्रति
अहोभाव
उत्पन्न होता है।

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री मतरादेवी छगनराजजी खुमाजी
एवं भ्राताश्री लक्ष्मीचन्दजी छगनराजजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. रमेशकुमार, सुरेशकुमार, मुकेशकुमार, हितेशकुमार, अंकेशकुमार, सिद्धांत, क्रिश, वेदांश
बेटा-पोता शा. छगनराजजी खुमाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : गणपति पेपर मार्ट, तिरुनेलवेली

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री बाबुलालजी जेठमलजी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री कमलाबाई बाबुलालजी कवाड़मुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : नरेन्द्रकुमार-सुमनदेवी • पौत्र : हितांश कुमार
बेटा-पोता शा. बाबुलालजी जेठमलजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : अरिहंत एजेन्सी, चेन्नई

माघ वदि 2

JANUARY

27

2024

SATURDAY

पवित्रदायक पंचम दिवस

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातुश्री सुंगीदेवी जुगराजजी एवं भ्राताश्री आनंदकुमार वेदमुथा के दिव्याशीष से
संघवी शा. कांतिलाल-विमलादेवी, देवीचन्द-मंजुदेवी, आनंदकुमार-सोवनदेवी,
महावीरकुमार-इन्द्रादेवी, अंकुशकुमार-दिव्यादेवी
सुपुत्री : सुरज, नीलम, कविता, पिंकी, सोनु, हिना
बेटा-पोता शा. जुगराजजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मेघदुत अपेरेल गार्मेंट्स, बेंगलुरु

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री सुमटीदेवी पुखराजजी खुमाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. जुगराज, मुकेशकुमार, दिनेशकुमार, यशकुमार, दक्षीशकुमार
बेटा-पोता-पडपोता शा. पुखराजजी खुमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : ब्लू स्टार इलेक्ट्रिकल्स, विजयवाड़ा - दिल्ली

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री शांतिदेवी कानमलजी खीमाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
एवं श्रीमती पुष्पादेवी-मोहनलालजी कानमलजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : ललितकुमार-हेमादेवी, संतोषकुमार-पूजादेवी
पुत्री-जमाईसा : ममता-अजीतजी मांडोत,
नीतु-सचिनजी कटारिया संघवी • पौत्र-पौत्री : यश, पूरव, आर्यन, जिया
बेटा-पोता-पडपोता शा. कानमलजी खीमाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एम. एक्स. ग्रुप, बेंगलुरु - स्टॉकहोम - लंदन

जिनमंदिर

जगत में सर्वोत्कृष्ट वास्तु जिनमंदिर का होता है। विशुद्ध व प्रभाव संपन्न क्षेत्र में श्रेष्ठतम माप, आकार, दिशा, कोण आदि वास्तु सिद्धान्तों के श्रेष्ठतम समन्वय से बने महा-मंगलकारी स्थापत्य का नाम है जिनमंदिर।

पिरामीड जैसा प्रभाव धराने वाला होता है मंदिर का शिखर। प्रासाद-पुरुष, सदा ही मंगलकारी कलश एवं श्रेष्ठतम चौदह स्वप्नों में से एक ऐसे ध्वज आदि को, उनके प्रभाव को विधिपूर्वक जागृत कर के शिखर पर स्थापित किया जाता है। ऐसे मंगल प्रतीकों से युक्त होता है जिनमंदिर।

जैसे सिद्धचक्र आदि यंत्र दिखने में जड़ होने पर भी चैतन्य पर अपना मंगल प्रभाव बताते हैं, उसी तरह जिनमंदिर रूपी महायंत्र का भी हमारे चैतन्य पर बड़ा ही कल्याणकारी व जीवंत प्रभाव होता है।

माघ वदि 3.

JANUARY

28

2024

SUNDAY

समतिरायक षष्टम दिवस

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

प्रभु LAGNA का लग्नोत्सव

- सगाई
- मामेरा (मामाजी द्वारा मामेरा)
- फेरा (सास-ससुरजी का आगमन)
- राज्याभिषेक (बहन द्वारा)

माघ वदि 3
JANUARY
28
2024
SUNDAY

सुमतिदायक पष्टम दिवस

मेहन्दी के लाभार्थी

मातुश्री उगमदेवी घेवरचंदजी फुलचंदजी वेदमुथा के दिव्याशिष से
शा. जयन्तीलाल, ललितकुमार, चंदनकुमार, हियांश
बेटा-पोता शा. घेवरचंदजी फुलचंदजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : पोपुलर हार्डवेयर मार्ट, कड़पा (आं.प्र.)

TIME
2:30 PM
ONWARDS

VENUE
AYODHYA
NAGARI

श्री शान्तिनाथ पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी

पिताश्री रमेशकुमारजी कुंदनमलजी गोराजी के दिव्याशीष से एवं
मातुश्री सीमादेवी रमेशकुमारजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : विक्रमकुमार-नीतुदेवी, हितेशकुमार-शिल्पादेवी • पौत्र-पौत्री : ध्रुव, शाईनी, जीया, जीनी
बेटा-पोता-पडपोता शा. कुंदनमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : वेदमुथा इलेक्ट्रिक को., बेंगलुरु

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री शान्तिदेवी मोटमलजी सोनाजी एवं भ्राताश्री कांतिलालजी-हमेरमलजी-अशोकजी मोटमलजी
व पुत्रश्री विक्रमकुमार हमेरमलजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. किशोरकुमार, ललितकुमार, अरविन्दकुमार, सुरेशकुमार, राकेशकुमार,
कमलेशकुमार, हितेशकुमार, चिराग, दिव्यांश, विहान, सम्यग्, पृथ्वी
बेटा-पोता शा. मोटमलजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : किशोरकुमार मोटमलजी कवाड़मुथा, रेवतड़ा

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री छगनराजजी हिमताजी के दिव्याशीष से मातुश्री कमलादेवी छगनराजजी मांडोत के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : चम्पालाल-स्व. सजनदेवी, सुरेशकुमार-भारतीदेवी, प्रेमचंद-सुशीलादेवी, जवेरचंद-रेखादेवी
पुत्री : मंजुदेवी-गौतमचंदजी • पौत्र-पौत्रवधू : विजय-दिव्या, राहुल-त्रिशला • पुत्री-जमाई : खुरबु-विपुलजी
पौत्र-पौत्री : महेन्द्र, पक्षाल, हितेन, सारांश, मोक्ष, नेहा, याक्षी, हेतवी
बेटा-पोता शा. छगनराजजी हिमताजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : गुरु स्टील, चेन्नई

रात्रि भक्ति

रात्रि भक्ति में मंगल ध्वजा, तोरण, विराजमान एवं
मन्दिरजी प्रतिष्ठा के सभी चढ़ावे बोले जाएंगे।

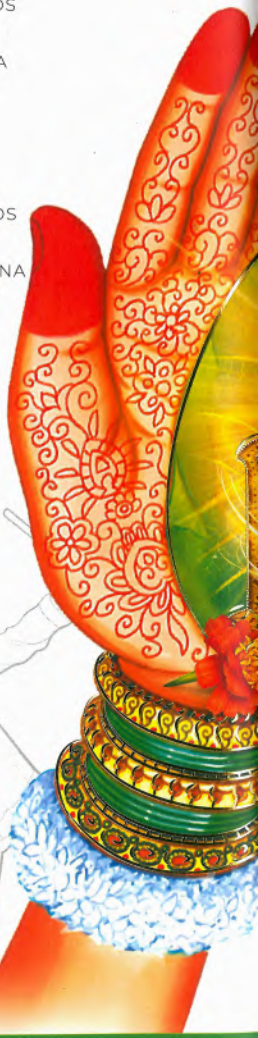

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातुश्री वलमीदेवी मुलतानमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. जयंतीलाल, कान्तिलाल, उत्तमचन्द, राकेशकुमार, कपिलकुमार, अंकितकुमार,
पीयुष, रितिक, हिरांग
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. मुलतानमलजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : कमल बेंगल्स, चेन्नई

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

श्रीमती पावुदेवी ओटमलजी जेठाजी, श्री गणपतलालजी ओटमलजी एवं
श्रीमती पुष्पादेवी बसंतकुमारजी के दिव्याशीष से
संघवी शा. मदनलाल, बसंतकुमार, चंपालाल, दिनेशकुमार, मुकेशकुमार, सुरेशकुमार, जोगेशकुमार,
गुलाब, दीपक, आकाश, प्रफुल, रिषभ, रोहान, धीर
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. ओटमलजी जेठाजी वेदमुथा परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मेडल होजरी सेंटर, बेंगलुरु

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
दादीश्री-दादाश्री श्रीमती प्यारीदेवी दरजमलजी एवं पिताश्री-मातुश्री बगुदेवी हडमतमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, विक्रमकुमार, कुशलकुमार, अर्हम्
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. हडमतमलजी दरजमलजी हिराणी परिवार**, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. हडमतमलजी दरजमलजी हिराणी, चेन्नई

माघ वदि 4

JANUARY

29

2024

MONDAY

समतादायक सप्तम दिवस

TIME
9:30 AM
ONWARDS

VENUE
VINITA
NAGARI

DEV
नवलोकांतिक देव की विनंती

- दीक्षा की आज्ञा मांगना
- माता-पिता बहन, कुलमहत्तरा द्वारा हित-शिक्षा

मोक्ष माने मुक्त होना।

दुःखों से, विकारों से, बन्धनों से
मुक्त होना ही मोक्ष है।
मोक्ष आत्मा की अनंत-आनन्दमय
अतीन्द्रिय दशा है। अबाधित
अनन्त-आनन्दमय होने से

मोक्ष ही परमकल्याणक स्वरूप है।

इस मोक्ष की प्राप्ति की विधि के
प्रदर्शन का ही
यह महोत्सव है और
इस मोक्ष प्राप्ति के कारण ही
गर्भ, जन्म, तप आदि
कल्याणस्वरूप माने गये हैं।

गाँव रांझी के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री फैंसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : मोंटूकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रुवराज
पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा

बेटा-पोता-पडपोता शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : श्रीमती फैंसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई - रेवतड़ा

TIME
2:30 PM
ONWARDS

VENUE
AYODHYA
NAGARI

श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं दादीश्री ककूदेवी हस्तीमलजी छोगाजी व पिताश्री भेरुलालजी हस्तीमलजी
हिराणी के दिव्याशीष से तथा मातुश्री भागवंतीदेवी भेरुलालजी हिराणी के आशीर्वाद से
शा. देवीचन्द, कान्तिलाल, विनोदकुमार, मुकेशकुमार, आशीषकुमार, राहुलकुमार

बेटा-पोता शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : ट्रस्ट मेटल, चेन्नई

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

अंगरचना के लाभार्थी

पिताश्री कानराजजी सॉकलचंदजी वेदमुथा के दिव्याशीष से एवं मातुश्री पुष्पादेवी कानराजजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. बाबुलाल, अशोककुमार, मदनलाल, महावीरचन्द, निर्मलकुमार, संजय, नरेश. के, नरेश. बी,
यशवन्त, राकेश, अभिषेक, रितिक, आयुष, मन्नत, प्रिस, वंश, सार्थक, हियान्श, निवान, अविक

बेटा-पोता-पडपोता शा. सॉकलचंदजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : अशोक ट्रेडिंग कंपनी, बेंगलुरु

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री गौतमचंदजी अमीचंदजी गोराजी वेदमुथा के दिव्याशीष एवं मातुश्री वसंतीदेवी गौतमचंदजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
मातुश्री वसंतीदेवी गौतमचंदजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. भरतकुमार, दिव्येशकुमार, जियान, भविश

बेटा-पोता शा. अमीचन्दजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा

प्रतिष्ठान : जय गार्मेन्ट, पुडुचेरी

रात्रि भक्ति

रात्रि भक्ति में दीक्षा कल्याणक वरघोड़े के चढावे बोले जाएंगे।

नामस्मरण के आलम्बन से प्रगट केवलज्ञान

प्रथम तीर्थपति ऋषभदेवजी की माता मरुदेवा ने इस अवसर्पिणी काल में प्रथम मोक्ष प्राप्त किया. इसका मूल-मुख्य कारण है - नामस्मरण।

परमात्मा ने दीक्षा ली. तत्पश्चात् 1000 वर्ष पर्यन्त पुत्र के प्रति स्नेहरागवश मरुदेवा माता ने ऋषभ-ऋषभ रटन किया. इस वजह से अन्य सभी सामग्रीओं पर रही हुई राग-आसक्ति हटकर एक मात्र ऋषभदेव पर स्थिर हो गयी। जिसके कारण आत्मा पर रही कर्मराशि भी दूर हुई. परिणाम अन्यत्व भावना एवं क्षपक श्रेणि सुलभ हो गई।

पुत्र भरत ने कहा कि "आप मुझे रोज कहती हो. मैं राज-पाट भोग रहा हूँ. वो वन में घूम रहा है. चलो आज आपके पुत्र का ऐश्वर्य बताता हूं". मरुदेवा "प्रसन्न-प्रसन्न" हो गये।

मरुदेवा माता ने हाथी पर आसीन होकर समवसरण की ओर प्रस्थान किया। परमात्मा का अद्भुत बाह्य वैभव देखा. साथ ही आतर वैभव भी देखा। जिसे देखकर मरुदेवा माता स्वयं के अभिमुख हो गई. "ऋषभ तो ऋषभ में मस्त है. मैं भी मेरे में मस्त हो जाऊँ". मरुदेवा माता द्वारा 'ऋषभ ऋषभ' का 1000 वर्ष तक किए गए रटण ने जो निर्मलता दी. वो यहां साक्षात् प्रगट हो गई। मरुदेवा माता अन्यत्व भावना में रहकर. क्षपकश्रेणि पर आरूढ हुई और वही केवलज्ञान हुआ... यह है नामनिक्षेप की महिमा...

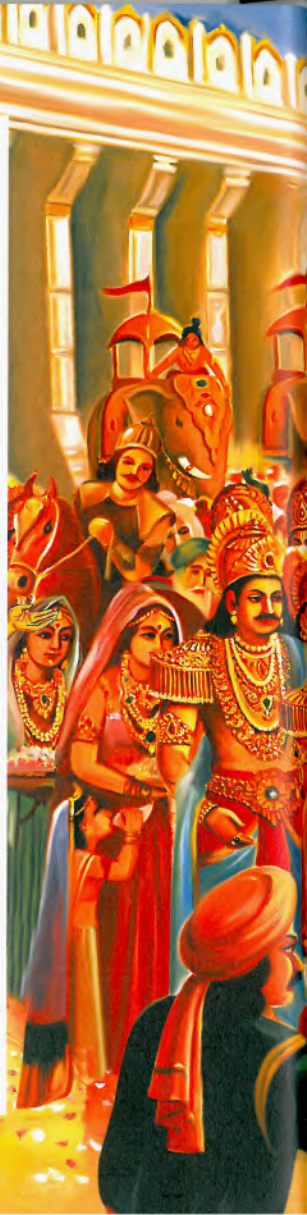

नमो
आदि
जिनेश्वरम्

माघ वदि 4

JANUARY

29

2024

MONDAY

समतादायक सप्तम दिवस

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

पिताश्री नैनमलजी पोलाजी के दिव्याशीष से
शा. चंपालाल, दिलीपकुमार, नरेन्द्रकुमार, रमेशकुमार,
उत्तम, निर्मल, नरेश, निखिल,
आरिष, रक्षित, कल्प, धवल, युगांत, दिवित
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. नैनमलजी पोलाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : नरेन्द्र एन्टरप्राईसेस, बेंगलुरु - अहमदाबाद

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी की कृपा से
एवं मातुश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी तथा
भाभी-भ्राताश्री ओटीदेवी जीतमलजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. मीठालाल, रमेशकुमार, अशोक, गौतम, महेन्द्र, विमल, प्रवीण, मुकेश,
सुनील, रविकिरण, आशीष, पीयुष, रोहित, परम, प्रणव, यश, दिव्यांश, अरमान
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी, चेन्नई - दिल्ली

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

मातुश्री बगसुदेवी रिखबचंदजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से
संघवी शा. मांगीलाल, जीतमल, जयन्तीलाल, जुगराज, राजेन्द्रकुमार,
महेन्द्रकुमार, योगेश, सुरेश, निखिल, विनोद,
खुशाल, जयेश, जॉय, दीपक, रित्विक, हितार्थ, अर्हम्, हर्ष
बेटा-पोता-पड़पोता **शा. रिखबचंदजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा**
प्रतिष्ठान : शा. रिखबचंदजी सरुपाजी सोफाड़िया, बेंगलुरु - विजयवाड़ा - जोधपुर - जालोर

माघ वदि 4

JANUARY

30

2024

TUESDAY

आनंददायक अष्टम दिवस

TIME
8:30 AM
ONWARDS

VENUE
FROM
PRABHU
MANDIR
TO VINITA
NAGARI

दीक्षा कल्याणक विधान

DIKSHA

प्रभु दीक्षा कल्याणक

एवं वर्षीदान वरघोड़ा

माघ वदि 4

JANUARY

30

2024

TUESDAY

आनंददायक अष्टम दिवस

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN

चैत्य अभिषेक के लाभार्थी

मातुश्री पानीदेवी मुल्तानमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. शांतिलाल-मंजुदेवी, मुकेशकुमार, राकेशकुमार, मनन, कैरव
बेटा-पोता शा. मुल्तानमलजी चुनाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मोहनखेडा मोबाईल स्टोर्स, बीजापुर

श्री सामकित अष्टप्रकारी पूजा के लाभार्थी

मातुश्री ढेपीदेवी वस्तीमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. मांगीलाल, चम्पालाल, कांतिलाल, सुमीत, विक्रम,
राजेश, संजय, अभिषेक, विधान, नियम, प्रीतम
बेटा-पोता-पडपोता शा. वस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : रोहिणी ओटो पार्ट्स, हैदराबाद

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री बदामीदेवी शंकरलालजी प्रतापजी मांडोत के दिव्याशीष से
शा. हीरालाल, मुन्नीलाल, मनीषकुमार, जितेन्द्रकुमार, नरेशकुमार,
बेटा-पोता शा. शंकरलालजी प्रतापजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : होमी डेकॉर्स, चेन्नई

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट गुरुदेव श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से
एवं मातुश्री फतुदेवी भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. जयंतीलाल-सोवनदेवी • बहन-बहनोई : श्रीमती लीलादेवी-दिलीपजी गांधी, श्रीमती पुष्पादेवी-नरेन्द्रजी छाजेड़,
श्रीमती अंजुदेवी-संजयकुमारजी संघवी • पुत्री-जमाईसा : सुरभि-हितेशजी भंडारी, सेजल-चिरागजी सालेचा
बेटा-पोता शा. भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : राजेन्द्र नॉवेल्टी, चेन्नई

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातुश्री मतरादेवी छगनराजजी खुमाजी हिराणी एवं भ्राताश्री लटभीचन्दजी छगनराजजी हिराणी के दिव्याशीष से
शा. रमेशकुमार, सुरेशकुमार, मुकेशकुमार,हितेशकुमार, अंकेशकुमार, सिद्धांत, क्रिश, वेदांश
बेटा-पोता शा. छगनराजजी खुमाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : सुरेश एन्ड को., तिरुनेल्वेली

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष से एवं मातुश्री फैंसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी
पौत्र-पौत्रवधू : मोंटूकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रुवराज
पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा
बेटा-पोता-पडपोता शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्रीमती फैंसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई - रेवतड़ा

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

पिताश्री मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी के दिव्याशीष एवं मातुश्री कमलादेवी मुन्नीलालजी हिराणी के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : राजेंद्रकुमार-रेखादेवी, अजयकुमार-संगीतादेवी, विनोदकुमार-पिंकीदेवी,
अशोककुमार-अंजनादेवी, दीपककुमार-सुमनदेवी • बेटी-जमाईसा : भारतीदेवी-मदनलालजी वाणीगोता
पौत्र : साहिल, रेहांश, दक्ष, पर्व • पौत्री : ईशीका, हीनल, दीया, छवि, दीहा, आरवी
बेटा-पोता शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : दीपक ट्रेडर्स, चेन्नई - मुंबई

दीक्षा कल्याणक

अद्भुत त्याग के धारक तीर्थंकर परमात्मा जब माता की कुक्षि में आते हैं तब से ही निर्मल, शुद्धमति, श्रुत और अवधिज्ञान के स्वामी होने से स्वयं दीक्षा का समय जानते हैं फिर भी परम्परा, आचार, मर्यादा के कारण नवलोकांतिक देवों की प्रार्थना तीर्थ प्रवर्तकों की विनंती के पश्चात् ही भगवान एक वर्ष तक प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख सोनैया का दान देकर जगत के जीवों की दरिद्रता दूर करते है। पश्चात् सर्व विरति धर्म (संयम) को स्वीकार करते हैं।

माघ वदि 5

JANUARY

31

2024

WEDNESDAY

निर्मलतारायक नवम दिवस

शुभ मुहूर्त में MUHURT

प्रतिष्ठोत्सव

Pratishtha

शाही करबा के लाभार्थी

मातुश्री भुरीदेवी पारसमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
संघवी शा. नेमिचंद-इन्द्रादेवी, जितेन्द्रकुमार-ललितादेवी, संजयकुमार-अंजुदेवी,
रितेशकुमार-त्रिशलादेवी, ध्रुवकुमार, वैभवकुमार, लक्ष, कमलाबाई, नैनाबाई, दिक्षिता, आयुषी, दीया
बेटा-पोता-पडपोता शा. पारसमलजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : हीरा ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, बेंगलुरु

श्री बृहद् शांति स्नात्रपूजा के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेवश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं
मातुश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी के दिव्याशीष से
पुत्र-पुत्रवधू : रमेशकुमार-मंजुदेवी
पौत्र-पौत्रवधू : सुनीलकुमार-शिल्पादेवी, रविकिरणकुमार-मनीषादेवी
पडपोता-पडपोती : दिव्यांश, अरमान, जिनाया
बेटा-पोता-पडपोता शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : हिराणी फाउन्डेशन्स, चेन्नई

TIME
2:00 PM ONWARDS

VENUE
ARADHANA BHAVAN

अंगरचना के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं
मातुश्री सुमटीदेवी तगराजजी जेठमलजी हिराणी के दिव्याशिष से
शा. चम्पालाल, फतेहराज, कान्तिलाल, प्रकाशचन्द, गौतमचन्द,
राजेन्द्रकुमार, महावीर, सन्दीप, प्रदीप, राकेश,
दिलीप, धीरज, चेतन, अमित, आकाश, अमन, मीत, ध्रुव,
नकुल, जनित, समर, भव्य, मनित, हिरव, ध्वीर
बेटा-पोता-पडपोता शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : कावेरी होम अप्लायन्स, बेंगलुरु

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं
पिताश्री तेजराजजी मगाजी एवं
जवेरीलालजी तेजराजजी मण्डोत के दिव्याशीष से
शा. दीपचन्द, जयन्तीलाल, हितेशकुमार (विक्की),
संजयकुमार, धीरज कुमार (रितीक), कुलदीप
बेटा-पोता-पडपोता शा. तेजराजजी मगाजी मण्डोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. तेजराजजी मगाजी मण्डोत, गुंटूर

हे करुणानिधि परमात्मा! ऐतिहासिक प्रतिष्ठा के अवसर पर
हमें श्रीसंघ दर्शन-वन्दन-साधर्मिक भक्ति का दुर्लभ अवसर प्रदान किया।
आपके श्रीचरणों में कोटिशः वन्दना... वन्दना... वन्दना...

मीठी मधुरी लापसी संग, पकवानों की होगी बहार
साधर्मिक भक्ति में, धन्य-धन्य हुआ श्रीसंघ

पूज्य मातुश्री पाबुदेवी ओटमलजी गोराजी एवं भ्राताश्री मदनलालजी ओटमलजी वेदमुथा के दिव्याशीष से

फले चुन्दडी

(बड़ी नवकारशी)
के लाभार्थी

पुत्र-पुत्रवधू : जोगराज-पुष्पादेवी, रमेशकुमार-फेन्सीदेवी, जयन्तीलाल-वर्षादेवी, प्रवीणकुमार-अंजुदेवी

पौत्र-पौत्रवधू : किशनकुमार-पिंकीदेवी, बिशनकुमार-रेखादेवी, कपिलकुमार-चेतनादेवी, आकाशकुमार-रीनादेवी, अक्षितकुमार-सोनलदेवी, आतिशकुमार-दिव्यादेवी

पौत्र-पौत्री : दर्शन, ईशा, ईशिका, आर्यन • पडपौत्र-पडपौत्री : रैना, जश, काव्या, शनाया, पार्श्वी, जीया, पर्व, आहान

बेटा-पोता-पडपोता शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा

.. विशेष प्रार्थी ..

• श्रीमती सूरजदेवी-मोहनलालजी दातेवाडिया, माण्डवला • श्रीमती दरियादेवी-बाबूलालजी बन्दा, आहोर • श्रीमती ललितादेवी-नेमिचन्दजी मांडोत, बाकरा • श्रीमती टीनादेवी-राजेन्द्रकुमारजी कटारिया संघवी, धानसा
• श्रीमती पूनमदेवी-मुकेशकुमारजी धोका, निम्बली • श्रीमती मेघादेवी-दिलीपकुमारजी हिराणी, रेवतड़ा • श्रीमती ईशादेवी-सोनुकुमारजी दातेवाडिया, माण्डवला

Goldmedal SWITCHES & SYSTEMS GM SWITCH TO A BETTER WORLD

माघ वदि 6

FEBRUARY

01

2024

THURSDAY

दोषमुक्तिदायक दसम दिवस

द्वार उद्घाटन के लाभार्थी

पिताश्री जुगराजजी मांणकजी तथा भ्राताश्री राजेशकुमार जुगराजजी के दिव्याशीष से
एवं मातुश्री पवनीदेवी जुगराजजी मांडोत के आशीर्वाद से
पुत्र-पुत्रवधू : रमेशकुमार-मजुदेवी, संजयकुमार-नीतुदेवी, विमलकुमार-सरस्वतीदेवी, सुरेशकुमार-हीरादेवी
पुत्री-जमाई : संगीतादेवी-जिनेन्द्रजी, रेखादेवी-धर्मेन्द्रजी
पौत्र-पौत्रवधू : पुनीत-रिशिता, अनुष-निकिता • पौत्र-पौत्री : गौरव, कश्ती, यश, गुंजन, लिशा, कलश
बेटा-पोता-पडपोता शा. जुगराजजी मांणकजी मांडोत परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : अंबिका मेडिसिन्स, हुबली

TIME
5:00 AM

श्री सत्तरभेदी पूजन के लाभार्थी

मातुश्री सुमटीदेवी रघुनाथमलजी सरेमलजी के दिव्याशीष से
संघवी शा. अमरचन्द-कमलादेवी, भंवरलाल-वसंतीदेवी, हीराचंद-इंदिरादेवी, मुकेशकुमार-रिंकुदेवी,
प्रदीपकुमार-कवितादेवी, अमितकुमार-ममतादेवी, बंटीकुमार-रिंकुदेवी, जैनम, वंशिका
बेटा-पोता-पडपोता शा. रघुनाथमलजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : मनोज गार्मेन्ट्स, बेंगलुरु

TIME
11:00 AM
ONWARDS

VENUE
PRABHU
MANDIRJI

अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री पानीदेवी सॉकलचंदजी फूलाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. जीतमल, अशोककुमार, रंजीतकुमार, गौतमकुमार,
कमलेशकुमार, कुलदीपकुमार, हितेन, क्रिश, हीँ
बेटा-पोता शा. सॉकलचंदजी फूलाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. जीतमल अशोककुमार, विजयवाड़ा - कडपा

प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री भंवरलालजी गोराजी वेदमुथा के दिव्याशिष से
एवं मातुश्री बदामीदेवी भंवरलालजी वेदमुथा के आशीर्वाद से
शा. सुरेश, अरविंद, प्रकाश, राजेश, साहिल, दर्शन
बेटा-पोता शा. भंवरलालजी गोराजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : एस. कुमार ज्वेलर्स, पुडुचेरी

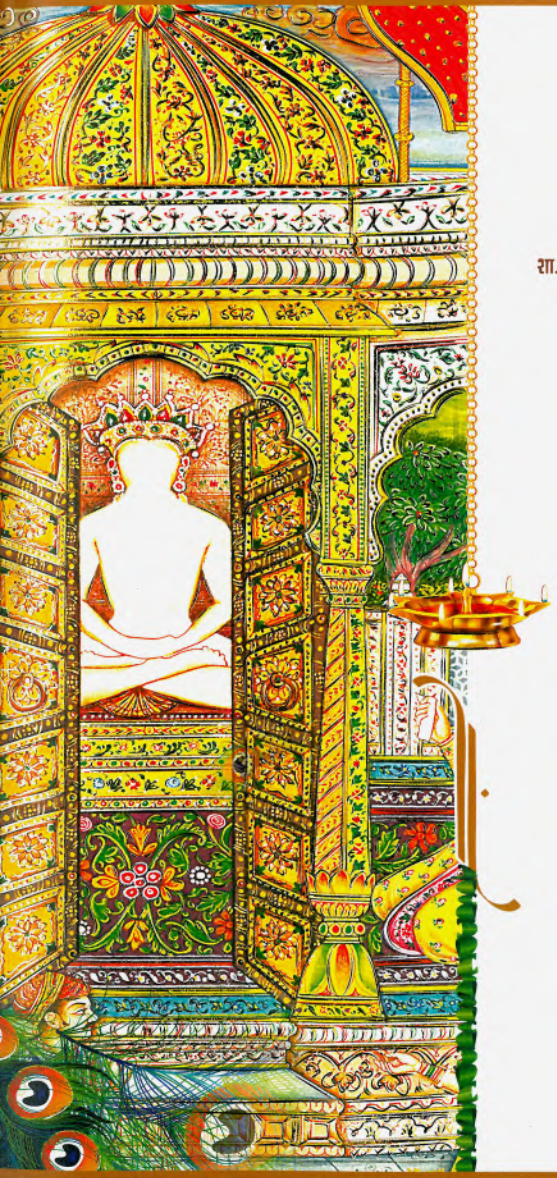

सुबह-नाश्ता के लाभार्थी

मातुश्री मेघीदेवी सुखराजजी जेठाजी सोफाड़िया
एवं श्रीमान् जुटमलजी, भुरमलजी, घेवरचंदजी सोफाड़िया के दिव्याशीष से
शा. कान्तिलाल, रमेशकुमार, मदनलाल, राजेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, उत्तमचंद, दिनेशकुमार, महेन्द्रकुमार,
विक्रमकुमार, संदीपकुमार, अक्षयकुमार, राहुल, विशाल, आशिष, प्रेम, मोक्ष, ईशान, कयान, आगम
बेटा-पोता-पडपोता शा. सुखराजजी जेठाजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : शा. सुखराजजी जेठाजी, बेंगलुरु - बेलुर

सुबह की नवकारशी के लाभार्थी

पिताश्री हंजारीमलजी फोजाजी वेदमुथा के दिव्याशीष से
शा. ओटमल, रमेशकुमार, राजेशकुमार, दिलीपकुमार, जीतमल, सुनीलकुमार, विनोदकुमार,
सुरेशकुमार. टी, किरणकुमार, निर्मलकुमार, दिनेशकुमार, ध्रुव, दीक्षितकुमार,
उज्वल, महेक, सुजल, जीवन, ऋषभ, ईशांक, तनिष
बेटा-पोता-पडपोता शा. हंजारीमलजी फोजाजी वेदमुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : ओटमलजी हंजारीमलजी बेंकर्स, कोलार (कर्नाटक)

शाम की नवकारशी के लाभार्थी

पिताश्री मिश्रीमलजी प्रतापजी एवं राजकुमार मिश्रीमलजी कवाड़मुथा के दिव्याशीष से
शा. भीमराज, शांतिलाल, संजय, राहुल, सागर, धीरज, डॉ. संयम, हितेन्द्र, थानिश, वीतराग
बेटा-पोता शा. मिश्रीमलजी प्रतापजी कवाड़मुथा परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : राजरत्न ट्रेडर्स, जत (महाराष्ट्र)

प्रत्येक जन्म में तेरे चरणयुगल को प्राप्त करके
तेरी शरण में मेरा स्थान जमा लूँ, बस ये ही एक प्रार्थना।

प्रत्येक जन्म मे तेरी आज्ञा का पालन करके
कर्म रूपी काँटे को निकाल सकूँ, बस ये ही एक अभ्यर्थना।

प्रत्येक जन्म में तेरे शासन को प्राप्त करके
मोक्ष में आसन जमालूँ, बस ये ही एक भावना।

प्रत्येक जन्म में तेरे दर्शन को प्राप्त करके
मेरी आत्मा का दर्शन कर सकूँ, बस। ये ही एक आरजू।

प्रभु! आपका शासन मिला इसलिए आपकी पहचान हुई।
शासन मिला इसलिए आपके वचन मिले।
शासन मिला इसलिए गुरु तत्त्व का परिचय मिला।
शासन मिला इसलिए तारक योग और अनुष्ठान मिले।
शासन मिला इसलिए तारक सात क्षेत्र मिले।
आपका शासन मिला इसलिए इन सभी के प्रति हार्दिक अनुराग मिला।
आपका शासन मिला इसलिए अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रहवाद जैसे सार्वभौमवादी सिद्धांत मिले।

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

महापुरुषो का जीवन चरित्र

VEER VANCHUL

SCAN TO PLAY

AMAR KUMAR

SCAN TO PLAY

AYEE MUTTA MUNI

SCAN TO PLAY

BHART BAHUBALI

SCAN TO PLAY

MAHAMANTRI KAPARDI

SCAN TO PLAY

MAHARAJA KUMARPAL

SCAN TO PLAY

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

महापुरुषो का जीवन चरित्र

श्री रेवतड़ा प्रतिष्ठा महामहोत्सव में सेवा प्रदानकर्ता

श्री रेवतड़ा प्रतिष्ठा महामहोत्सव के आकर्षण

श्री आदिनाथ दादा की
पावन स्पर्शना

वराही मंडण
श्री शांतिनाथ प्रभु का
पावन सान्निध्य

देव-गुरु व धर्म से
भक्तों का
सुंदर मिलन

पूज्य प्रतिष्ठाचार्य द्वारा
नित्य प्रासंगिक एवं
प्रतिबोधक प्रवचन

विशाल
श्रमण-श्रमणीवृंद के
दर्शन-वंदन-सेवा
का लाभ

सकल संघ की
नवकारशी

विधिशुद्ध
पूजा-पूजन
का आयोजन

रमणीय
राजस्थान की
स्पर्शना

टेक्नोलॉजी के साथ
प्रभु चरित्र का
अद्भुत प्रदर्शन

देवलोक तुल्य मंडप की
भव्य सजावट

अनुकंपा एवं
जीवदया के
अनेक कार्यक्रम

परमात्मा की
नयनरम्य अंगरचना
तथा जिनमंदिर की
भव्य सजावट

श्री आदिनाथ दादा की
दीक्षा कल्याणकतुल्य
भव्यातिभव्य
रथयात्रा

नित्य प्रभावशाली
भक्तामर स्तोत्र
का पाठ

महामंगलकारी
पंच कल्याणकों का
पवित्र मंत्रोच्चार
संग उत्सव

प्रतिष्ठोत्सव में
हेलिकॉप्टर द्वारा
भव्य जिनालय पर
पुष्पवृष्टि

उपकारी आचार्यश्री से
भाव-मिलन

भारतभर के मशहूर कलाकारों,
संगीतकारों एवं कार्यकर्ताओं की
अनोखी रमझट

अद्वितीय अयोध्या नगरी-
विनीता नगरी एवं
भरतचक्रवर्ती भोजनखंड का
उद्घाटन

रंगोली, पुष्पों एवं
दीपक-रोशनी की
अद्वितीय झगमगाहट

जयणापूर्ण
साधार्मिक भक्ति

भक्ति-साधना
और कला का
अप्रतिम परिचय

36 कोम को
प्रतिष्ठा महोत्सव में
भोजन प्रसादी

श्री रेवतड़ा प्रतिष्ठा महामहोत्सव के सेवा सहयोगी

टेंट और सजावट-मुख्य प्रबंधक

DESIGN & DECOR BY
SPD.
BY DIPEN GAJJAR
CONCEPT | CREATION | EXPERIENCE
MO. : 9825278198

श्री प्रमुख डेकोरेटर्स, दीपेन गज्जर

केटरिंग सर्वीस

अशोकजी भंडारी

देवालय, वरघोडा और मंदिर प्रबंधन

VK Event
Virendrabhai Kutchi | Event Organizer

वीरेंद्र कच्छी

कल्याणक लेखक-निर्देशक एवं कोरियोग्राफी

धर्मेश मेहता

कल्याणक विधिकारक एवं संगीतकार

संघवी दीपक करनपुरिया

विधिकारक

श्री सालंजियनी हरण-तिलोकचंदजी काकरिया

भक्ति संध्या प्रबंधक

विपिन पोरवाल विरला

प्रभु भक्ति संगीतकार

जैनम वारिया/
ऋषभ-संभव/विक्की पारेख/
वैभव भागमार/ दिलीप बाफना/
राजीव विजयवर्गीय एवं
अन्य संगीतकार

भक्ति संध्या

मोमेंटो

इमेजिनेरियम (इंडिया) प्रा. लिमिटेड

मैन पावर प्रबंधन

JOYS event
BY PRAVIN JOSHI

Joys इवेंट, प्रवीण जोशी

फोटोग्राफर

स्टूडियो 2000 एवं परमार स्टूडियो

एनिमेशन् फिल्म

फ्रेक्टल पिक्चर प्रा. लिमिटेड

फूलों की सजावट

केरात भाई

मंदिरजी नव निर्माण

शा. हसमुख-नरपत दिवाकरण

मंदिरजी मार्बल सप्लाई

नोर मार्बल हैतेस मकराना, मुक्कार भाई

मंदिरजी द्वार और भंडार कारीगर

जगदीश सुथार

मीडिया कवरेज

पारस बैनल

लाभार्थियों को आत्मीय आमंत्रण

प्रथम शिला के लाभार्थी
शा. सुमेरमलजी गुणेराजी वेदमुथा परिवार

दूसरी शिला के लाभार्थी
शा. मांगीलालजी रोषमलजी अक्राजी वेदमुथा परिवार

तीसरी शिला के लाभार्थी
शा. छगनराजजी भीमाजी वेदमुथा परिवार

चौथी शिला के लाभार्थी
शा. शंकरलालजी रोषमलजी अक्राजी वेदमुथा परिवार

पंचम शिला के लाभार्थी
शा. किशोरीलालजी भीमाजी वेदमुथा परिवार

छट्ठी शिला के लाभार्थी
शा. वस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार

सातवी शिला के लाभार्थी
शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

आठवी शिला के लाभार्थी
शा. भारतमलजी भगाजी वेदमुथा परिवार

नवमी शिला के लाभार्थी
शा. सुमेरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

द्वार शाखा उत्तरंग के लाभार्थी
शा. षेवरचन्दजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार

गंभारा पदम शिला के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा परिवार

श्रीसम्मेतशिखरजी पट्ट के लाभार्थी
शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार

श्री गिरनारजी पट्ट के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुथा परिवार

भगवान के भण्डार के लाभार्थी
शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार

मंगल जाजम के लाभार्थी
शा. जेठमलजी जुहाराजी वेदमुथा परिवार

परमात्मा के मुनीमजी बनने के लाभार्थी
शा. इन्द्रमलजी छोगाजी वेदमुथा परिवार

घर-घर तोरण के लाभार्थी
शा. लालचन्दजी गुणेशाजी वेदमुथा परिवार

तिलक द्वारा बहुमान के लाभार्थी
शा. कानमलजी खीमाजी वेदमुथा परिवार

माला द्वारा बहुमान के लाभार्थी
शा. रिखबचन्दजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार

श्रीफल द्वारा बहुमान के लाभार्थी
शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

साफा चुनड़ी द्वारा बहुमान के लाभार्थी
शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार

भोमेंटो द्वारा बहुमान के लाभार्थी
शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार

परमात्मा के माता-पिता बनने के लाभार्थी
शा. षेवरचन्दजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार

इन्द्र-इन्द्राणी बनने के लाभार्थी
शा. भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी परिवार

मामा-मामी बनने के लाभार्थी
शा. अमीचन्दजी अकाजी वेदमुथा परिवार

भुआ-भुडोरा बनने के लाभार्थी
शा. जुठमलजी गोमाजी वेदमुथा परिवार

भगवान के सारा-सरपू बनने के लाभार्थी
शा. भंवरलालजी सागरमलजी वेदमुथा परिवार

बहन बनने के लाभार्थी
शा. मोडाजी केवलजी वेदमुथा परिवार

प्रियंवदा दासी बनने के लाभार्थी
शा. मूलचंदजी केसाजी कवाड़मुथा परिवार

प्रधान मंत्री बनने के लाभार्थी
शा. अमीचन्दजी पोलाजी वेदमुथा परिवार

कोषाध्यक्ष (खजांची) बनने के लाभार्थी
शा. जुगराजजी छोगाजी कवाड़मुथा परिवार

नगरसेठ बनने के लाभार्थी
शा. उम्मेदमलजी मगाजी लुंकड़ परिवार

सेनापति बनने के लाभार्थी
शा. हंजारीमलजी भूरमलजी सोफाड़िया परिवार

कुल महत्तरा बनने के लाभार्थी
शा. जुटमलजी सुखराजजी सोफाड़िया परिवार

हरिणगमेंषी देव बनने के लाभार्थी
शा. फूलचंदजी चुनाजी लुंकड़ परिवार

राज ज्योतिष बनने के लाभार्थी
शा. हरकचन्दजी खुबाजी मांडोत परिवार

राजपंडित (अध्यापक) बनने के लाभार्थी
शा. मनोहरमलजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार

छड़ीदार - 01 बनने के लाभार्थी
शा. फूलचंदजी चुनाजी लुंकड़ परिवार

छड़ीदार - 02 बनने के लाभार्थी
शा. छगनराजजी हंजारीमलजी वेदमुथा परिवार

अच्युतपति इन्द्र बनने के लाभार्थी
शा. चैनमलजी उमेदाजी मांडोत परिवार

लाभार्थियों को आत्मीय आमंत्रण

ईशान इन्द्र बनने के लाभार्थी
शा. दुरगचन्दजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार

कुबेरदेव (बतीसकोडी कनकमणीमाणेक) बनने के लाभार्थी
शा. सोकलचंदजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार

22-01-2024
भरत चक्रवर्ती नगरी (भोजन खंड) के लाभार्थी
शा. सुमेरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

22-01-2024
विनीता नगरी (कल्याणक मंडप) के लाभार्थी
शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार

22-01-2024
कुंभ स्थापना के लाभार्थी
शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार

22-01-2024
दीपक स्थापना के लाभार्थी
शा. माणकचंदजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार

22-01-2024
ज्वारा रोपण के लाभार्थी
शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार

22-01-2024
वेदिका पूजन के लाभार्थी
शा. सॉकलचंदजी गोराजी वेदमुथा परिवार

प. पू. आ. श्री लब्धिचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. एवं प. पू. आ. श्री जयसुन्दरसूरीश्वरजी म. सा. की पूजा-अंगरचना-प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. प्रतापजी रामाजी कवाड़मुथा परिवार

23-01-2024
नवग्रह पाटला पूजन के लाभार्थी
शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार

23-01-2024
अष्ट मंगल पाटला पूजन के लाभार्थी
शा. ओटमलजी जेठाजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
दश दिक्पाल पूजन के लाभार्थी
शा. भंवरलालजी तेजराजजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
जल यात्रा के लाभार्थी
शा. भंवरलालजी मुलतानमलजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
श्री 108 पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजन के लाभार्थी
शा. सॉकलचन्दजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार

23-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. मीठालालजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. सुमेरमलजी गुणेशाजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. बेवरचन्दजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. भलेचंदजी जुहारमलजी वेदमुथा परिवार

23-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. शेषमलजी अकाजी वेदमुथा परिवार

24-01-2024
श्री सिद्धचक्र पाटला पूजन के लाभार्थी
शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार

24-01-2024
वीरा स्थानक पूजन के लाभार्थी
शा. बस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार

24-01-2024
श्री नंदावर्त्त पाटला पूजन के लाभार्थी
शा. गोडीदासजी हंजारीमलजी कवाड़मुथा परिवार

24-01-2024
श्री आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी खुमाजी हिराणी परिवार

24-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी वेदमुथा परिवार

24-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. मनोहरमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

24-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. सोकलचंदजी इंद्रमलजी वेदमुथा परिवार

24-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार

24-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. सुखराजजी भगाजी वेदमुथा परिवार

25-01-2024
श्री सीमंधर स्वामी पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी
शा. प्रेमचंदजी छोगाजी वेदमुथा परिवार

25-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. दुरगचन्दजी जुहाराजी कवाड़मुथा परिवार

25-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. दीपचंदजी प्रतापजी कवाड़मुथा परिवार

25-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. सुखमलजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार

25-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. हरकचंदजी होसाजी मांडोत परिवार

25-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. भारतमलजी भगाजी वेदमुथा परिवार

26-01-2024
अट्ठारह अभिषेक विधान (भगवान जन्मकल्याणक दिवस) के लाभार्थी
शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार

26-01-2024
अट्ठारह अभिषेक पूजन के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार

26-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. सरदारमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

26-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. सुमेरमलजी रिखबचंदजी मांडोत परिवार

26-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. इन्दरमलजी हिमताजी कवाड़मुथा परिवार

26-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. कुन्दनमलजी तेजराजजी वेदमुथा परिवार

लाभार्थियों को आत्मीय आमंत्रण

26-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार

27-01-2024
श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा के लाभार्थी
शा. पुखराजजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार

27-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. छगनराजजी खुमाजी हिराणी परिवार

27-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. बाबुलालजी जेठमलजी कवाड़मुथा परिवार

27-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. जुगराजजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार

27-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा.पुखराजजी खुमाजी वेदमुथा परिवार

27-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. कानमलजी खीमाजी वेदमुथा परिवार

28-01-2024
मेहन्दी के लाभार्थी
शा. घेवरचंदजी फुलचंदजी वेदमुथा परिवार

28-01-2024
श्री शान्तिनाथ पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी
शा. कुंदनमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

28-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. मोटमलजी सोनाजी कवाड़मुथा परिवार

28-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. छगनराजजी हिमताजी मांडोत परिवार

28-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. मुलतानमलजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार

28-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. ओटमलजी जेठाजी वेदमुथा परिवार

28-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. हड़मतमलजी दरजमलजी हिराणी परिवार

29-01-2024
गाँव सांझी के लाभार्थी
शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार

29-01-2024
श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी
शा. हस्तीमलजी छोगाजी हिराणी परिवार

29-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. सॉकलचंदजी गोराजी वेदमुथा परिवार

29-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. अमीचन्दजी गोराजी वेदमुथा परिवार

29-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. नैनमलजी पोलाजी वेदमुथा परिवार

29-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार

29-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. रिखबचंदजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार

30-01-2024
चैत्य अभिषेक के लाभार्थी
शा. मुल्तानमलजी चुनाजी वेदमुथा परिवार

30-01-2024
श्री सभक्ति अष्टप्रकारी पूजा के लाभार्थी
शा. वस्तीमलजी उम्मेदाजी वेदमुथा परिवार

30-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. शंकरलालजी प्रतापजी मांडोत परिवार

30-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. भबुतमलजी रिखबचंदजी हिराणी परिवार

30-01-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. छगनराजजी खुमाजी हिराणी परिवार

30-01-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार

30-01-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार

31-01-2024
शाही करवा के लाभार्थी
शा. पारसमलजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार

31-01-2024
श्री बृहद् शांति स्नात्रपूजा के लाभार्थी
शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी परिवार

31-01-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी परिवार

31-01-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. तेजराजजी मगाजी मण्डोत परिवार

31-01-2024
फते चुन्दडी (बड़ी नवकारशी) के लाभार्थी
शा. ओटमलजी गोराजी वेदमुथा परिवार

01-02-2024
द्वार उद्घाटन के लाभार्थी
शा. जुगराजजी मांणकजी मांडोत परिवार

01-02-2024
श्री सत्तरभेदी पूजन के लाभार्थी
शा. रघुनाथमलजी सरेमलजी वेदमुथा परिवार

01-02-2024
अंगरचना के लाभार्थी
शा. सॉकलचंदजी फूलाजी वेदमुथा परिवार

01-02-2024
प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी
शा. भंवरलालजी गोराजी वेदमुथा परिवार

01-02-2024
सुबह-नाश्ता के लाभार्थी
शा. सुखराजजी जेठाजी सोफाड़िया परिवार

01-02-2024
सुबह की नवकारशी के लाभार्थी
शा. हंजारीमलजी फोजाजी वेदमुथा परिवार

01-02-2024
शाम की नवकारशी के लाभार्थी
शा. मिश्रीमलजी प्रतापजी कवाड़मुथा परिवार

जय जिनेन्द्र के लाभार्थी
शा. रिखबचंदजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार

अल्पबुद्धि से अज्ञानतापूर्वक...
वीतराग परमात्मा की
प्राणभरी आज्ञा विरुद्ध
इस पत्रिका में कुछ भी लिखा गया हो,
विवेचित किया गया हो,
तो त्रिविध त्रिविध मिच्छामी दुक्कडम्...

महोत्सव में आप होंगे- हम सब होंगे,
दिव्यलोक से आयेंगे देव-देवेन्द्र...
आग्रहभरा आत्मीय-आमन्त्रण है,
स्वीकारें सविनय सादर जयजिनेन्द्र...

मातुश्री बगसुदेवी रिखबचंदजी सोफाड़िया के दिव्याशीष एवं श्रीमती कमलादेवी जुगराजजी सोफाड़िया की भावना अनुसार

संघवी शा. मांगीलाल, जीतमल, जयन्तीलाल, जुगराज, राजेन्द्रकुमार, महेन्द्रकुमार, योगेशकुमार, सुरेशकुमार,
निखिलकुमार, विनोदकुमार, खुशालकुमार, जयेश, जॉय, दीपक, रित्विक, हितार्थ, अर्हम्, हर्ष • दोहिता-दोहिती : नेहान, जिनाया, गृही, जरा

बेटा-पोता-पडपोता शा. रिखबचंदजी सरुपाजी सोफाड़िया परिवार, रेवतड़ा

.. विशेष प्रार्थी ..

• श्रीमती निकितादेवी-आकाराजी मांडोत, बाकरा • श्रीमती पूजादेवी-आकाराजी हिराणी, रेवतड़ा • श्रीमती मेघादेवी-रोहनजी नागोत्रा सोलंकी, जालोर

प्रतिष्ठान : जे. एस. फैशन (इंटरनेशनल) प्रा. लिमिटेड, बेंगलुरु

J S FASHIONS

जिन स्वरूप थई जिन आराधे,
ते सही जिनवर होवे रे ॥

भगवान मिलने के बाद स्वयं भगवान बनना

यही भगवान की अगम अनूप पूजा है...

अंजनशलाका प्रतिष्ठा

के पावन अवसर पर हे परमात्मन्! हमारे उपर अपनी कृपा का नेह बरसाओं...

हमारे हृदयमंदिर में आकर आप बिराजो...

हमारा कल्याण करो.. हमारा उद्धार करो...

सकल श्रीसंघ को मान, सम्मान, बहुमानपूर्वक निमंत्रण

श्री आदिनाथ जैन संघ

मु.पो.: रेवतड़ा-343 001, जिला : जालोर (राजस्थान).